श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

✣ सिन्धी ✣

पृष्ठभूमि—प्राचीन समय में भारत बहुत बड़ा था। एक राजा दूसरे राजा के ऊपर हमला करके राज्य छीन लेते थे। वह हमेशा दबा रहे, इसलिए उसकी क्वांरी कन्या को लाकर शादी करते थे। इस तरह हमले की धमकी के पत्र बड़े राजा ने छोटे को लिखे जिसके पास युद्ध करने की शक्ति नहीं थी। राजा तीन दिन तक बोला नहीं। न किसी को यह दु:ख बतलाता था। आखिर उसकी महारानी ने जिद करके पूछ ही लिया। महारानी ने उससे उसकी पोशाक मांगी और उसे पहनकर राजसी सेना को सावधान किया कि अधीनता से मरना ज्यादा अच्छा है। सैनिकों में जोश भर गया। महारानी ने जो राजा के भेष में थी, सेना को लेकर शत्रुओं पर हमला कर दिया। दुश्मन हार गया। उसको रानी ने अपने अधीन कर लिया। परम्परा अनुसार उसकी क्वांरी लड़की का डोला ले आई। सेना की शक्ति दुगुनी हो जाने से उसके हौंसले और बढ़ गए। इस प्रकार उसने पड़ौस के ग्यारह राजाओं को हराकर उनकी क्वांरी कन्याओं के डोले ले आई। तब रानी ने राजा के सामने आकर विनय की, महाराज! अब इन बारह क्वांरी कन्याओं को पति चाहिए। वह काम तुम्हारा है, क्योंकि उनको यह खबर नहीं है कि मैं भी उनकी तरह एक रानी हूं।

तदानुसार इसी भाव को लेकर श्री इन्द्रावतीजी ने प्राणनाथजी का स्वरूप धारण कर ब्रह्मसृष्टियों को जगाया और श्री राजजी से विनय करके झगड़ा किया, हे धनी! इनके लिए धनीवटपना नहीं देते, तो लाज तुम्हारी जाती है। कुरान में यह प्रसंग असराईल पैगम्बर के नाम से आता है, जिसने अपने बंदों के लिए खुदा से झगड़ा किया। यह पैगम्बर कोई दूसरा नहीं है श्री प्राणनाथ स्वरूप इन्द्रावती हैं।

बंगला साहिब में श्री प्राणनाथजी साक्षात् विराजमान थे। उस समय मोमिनों ने विनती की कि आप अक्षरातीत हैं। हमने पहचान लिया है। सुखपाल बुलाओ। हमें अभी घर ले चलो। इस बात पर श्री इन्द्रावतीजी ने अपने धनी से लाड़ली भाषा (सिन्धी) में साथ के वास्ते झगड़ा किया वही लिखा है।

सिन्धी

श्री किताब—सिन्धी की जो सिन्धी भाखा मिने आखिर फजर को हजूर ने अर्ज करी है सो स्वाल जवाब लिखे हैं, सो अर्स रूहें हाल सों सुनियों ज्यों हाल तुमको भी आवे।

आखिर वेरा उथणजी, आंईं रूहें छडे जा रांद।
उथी विच अर्स जे, कोड करे मिड़ूं कांध।। १ ।।

आखिर का समय उठने का आ गया है। हे रूहो! अब तुम खेल को छोड़ो। परमधाम में उठकर, दिल में उल्लास, उमंग लेकर हंसते हुए धनी से मिलो।

Nijanand App

धणी मूंहजी रूहजा, हांणे चुआं कींय करे।
रूह के डिंन्यो पर-डेहडो, चओ सो दिल धरे।। २ ।।

हे मेरे आतम के धनी! अब मैं कैसे किस तरह से आपसे कहूं? मेरी रूह को आपने परदेश दे दिया है। अब आप जो कहो वह हम अपने दिल में स्वीकार करें।

इस्क डिंने तूं, तो रे इस्क न अचे।
घणुएं करियां आंऊं, कूड न उडे रे सचे।। ३ ।।

इश्क देने वाले आप हैं। आपके बिना इश्क नहीं आता। मैं बहुत कुछ करती हूं, परन्तु सच्चाई के बिना यह झूठा संसार छूटता नहीं है।

कीं करियां केडा वंजां, चुआं कींय करे।
न पेराइयां पडूत्तर, न अची सगां गरे।। ४ ।।

क्या करूं? कहां जाऊं? कैसे कहूं? आपकी तरफ से हमें कोई उत्तर नहीं मिल रहा है और न मैं आपके पास आ ही सकती हूं।

सजण मूंहजी रूहजा, तांजे डिए रुह सांजाए।
त हिकै आहि अरवाह के, पेरे तरे पुजाए।। ५ ।।

हे मेरी आत्मा के धनी! यदि आप अपनी रूहों को पहचान करा दें तो वह अरवाह एक ही आह में आपके चरणों में पहुंच जाए।

धणी मूंहजी रूहजा, गिंनी वेई विसराई।
पेईस ते पेचन में, वडी जार वडाई।। ६ ।।

हे मेरी आत्मा के धनी! आपकी इस माया ने हमको भटका दिया है। यहां ऐसी मान बड़ाई के चक्कर में फंस गई हूं।

मूं मंगी आं डेखारई, करियां गाल केई।
हांणे चोराइए ते चुआं थी, गाल गरी थी पेई।। ७ ।।

मैंने खेल मांगा और आपने खेल दिखाया। अब आपसे कैसे बात करूं? अब यह भी आप कहलवाते हो तो कहती हूं। यह माया हमको बहुत भारी (महंगी) पड़ी है।

तरसाइए त तरसण मोंहके, मूं मंझां कीं न सरयो।
सभ गाल्यूं आंजे हथमें, जाणो तींय कर्‍यो।। ८ ।।

हे मेरे धनी! आप तरसाते हो तो आपका मुंह देखने को तरसती हूं। मुझसे तो कुछ नहीं हो सका। सब बातें आपके हाथ में हैं, इसलिए जैसा जानो वैसा करो।

सिकाइए त सिकां, मूं में सिकण न कीं।
रोहोंदिस तेही हाल में, अंई रखंदां जीं।। ९ ।।

आप तड़पाते हो तो मैं कुढ़ती हूं। वैसे कुढ़ने जैसी बात मेरे अन्दर नहीं है। आप जिस हालत में रखोगे मैं उसी हालत में रहूंगी।

Nijanand App

हिक सिकां तोहिजे सुखके, जे से संभरे सुख।
से सुख हिन विसारियां, हे जे डिठम डुख।। १० ।।

जैसे-जैसे आपके सुख याद आते हैं, उन सुखों के लिए तरसती हूं। माया के संसार में जो हमने दु:ख देखे हैं उन्होंने आपके सुखों की याद भुला दी है।

हिन सुखे संदियूं गालियूं, आईन अलेखे।
हियडो मूं सुंजो थियो, हिए न अचे ते।। ११ ।।

आपके इन सुख की बातें बहुत हैं। मेरा हृदय अब खाली हो गया है। उसमें अब कुछ भी याद नहीं आता।

जे सुख तोहिजी अंखिएं, डिंना असांके तो।
से सुख कंने मूं सुयां, सुंजो हियो न झल्ले सो।। १२ ।।

हमको आपने नैनों से जो सुख दिए, वह मैंने कान से तो सुने। यह मेरा सूना दिल उसे पकड़ नहीं पाता।

जे सुख तोहिजे अर्स में, डिंना तो गालिन।
से सभ वीयम विसरी, सुंजे हियडे न चढिन।। १३ ।।

आपकी बातों से आपने परमधाम में जो सुख दिए, वह सब भूल गए हैं। सूने हृदय में याद ही नहीं आते हैं।

के पडूत्तर मूं केयां, के तो केयां कांध।
से सुंजे हिये न संभरे, विसर्‍या मय रांद।। १४ ।।

हे धनी! आपने क्या कहा और मैंने क्या जवाब दिया—यह सूने दिल में याद नहीं आता। इस खेल में आकर सब भूल गए।

हिये चढाइए तूं, त सभ सुख हियो झल्ले।
जे सुख डिए मेहेर करे, त बेयो केर पल्ले।। १५ ।।

अब आप इन सुखों को मेरे हृदय में चढ़ाओ (याद कराओ), तो मेरा हृदय उन सुखों को ग्रहण करे। आप यदि मेहर करके सुख देते हो तो कौन आपको रोक सकता है?

तो तरसाएं तरसण, तोके पसण नैण।
कोड थिए कनन के, तोहिजा सुणन मिठडा वैण।। १६ ।।

आपको नैनों से देखने के लिए भी आप तरसाते हो (बिलखाते हो) तो तरसती हूं। मेरे यह कान आपके मीठे वचन सुनने के लिए तरस रहे हैं।

तो तरसाएं तरसण, हियडो मिडन के।
ए डिंनो अचे मासूक जो, इस्क अर्स में जे।। १७ ।।

मेरा हृदय आपसे मिलने के लिए आप तरसाते हो तो तरसता है। हे श्री राजजी महाराज! परमधाम में इश्क है। वह भी आपके देने से ही आता है।

Nijanand App

विहारे वट ओडडी, मथें डिंनो परडेह।
डिसां न सुणियां गालडी, कीं करियां चुआं के केह।। १८ ।।

आपने अपने चरणों में बिठा रखा है। ऊपर से परदेश दे दिया है। न मैं आपको देख सकती हूं और न आपकी बातें सुन पाती हूं। अब आप ही बताओ कि क्या करूं? किससे कहूं?

जे अरवाहें अर्स ज्यूं, से सभ मूं अडां न्हारीन।
आंऊं पसां आं अड़ं, हे बिठ्यूं जर हारीन।। १९ ।।

परमधाम की जो रूहें हैं, वह सब मेरी तरफ देख रही हैं और आंसू बहा रही हैं। मैं आपकी तरफ देख रही हूं।

तो लिख्यो फुरमान में, मूं अर्स दिल मोमिन।
से सुणी वेंण फुरमान जा, मूंजो झल्यो दिल रूहन।। २० ।।

आपने ही तो कुरान में लिखा है कि मेरा अर्श मोमिनों का दिल है। कुरान के इन शब्दों को सुनकर रूहों ने मेरे दिल को पकड़ रखा है।

त केहो पडूत्तर मूंहके, चुआं कुरो रूहन।
रूहें उमेदूं मूं में, आंके सभ रोसन।। २१ ।।

हे मेरे राज जी महाराज! अब आप मुझे क्या उत्तर देते हैं। मैं रूहों से क्या कह दूं? रूहों की सभी चाहना तो मुझसे लगी है, जिसकी पूरी जानकारी आपको है।

हाणे केहडो हाल मूंहजो, रूहें केहडो हाल।
न डेखारे न डिठम, बेओ तो रे नूरजमाल।। २२ ।।

हे राजजी महाराज! मेरी क्या हालत हो रही है? रूहों की क्या हालत है? आपने अपने अतिरिक्त दूसरे किसी को दिखाया नहीं, जिससे कुछ कह सकूं।

तो डिंनी सोहेली करे, न तां वाट घणूं विखम।
हेआं हल्लो सभ सुखन में, रूहें घुरें एह खसम।। २३ ।।

हे राजजी महाराज! आपने यह इश्क का रास्ता (प्रेम मार्ग) बड़ी आसानी से दे दिया। नहीं तो यह रास्ता बड़ा कठिन था। हे धनी! रूहें मांगती हैं कि यहां से अब अपने अखण्ड सुखों वाले घर परमधाम ले चलो।

तो पाण डेखारे डिठम, बेओ कोए न रखे हंद।
सेहेरग से डेखारे ओडडो, कित करणो पेओ न पंध।। २४ ।।

आपने अपने आप को दिखाया तो हमने देखा। दूसरा कोई ठिकाना तो आपने रखा ही नहीं, इसलिए आपने हमें सेहेरग से नजदीक बताया, इसलिए मुझे कहीं दूर जाना नहीं पड़ा।

तो चुआंयो चुआं थी, मूंजी या उमत।
असीं इंदासी कोठियां, कोठीने जे भत।। २५ ।।

आप कहलाते हो तो अपनी तरफ से या रूहों की तरफ से, कहती हूं। आप जिस तरह से बुलाओगे उसी तरह से बुलाने पर हम आ जाएंगे।

Nijanand App

रूहें असीं निद्रमें, न तां घणां लाड घुरन।
अंईं जाणोथा सभ कीं, जे हाल आए रूहन।। २६ ।।

हम रूहें तो नींद की फरामोशी में हैं। नहीं तो आपसे हम बहुत प्यार मांगते। रूहों की क्या हालत है, वह तुम सब जानते हो।

चायो आंजों चुआंथी, मूं हंद न्हाए कुछण।
संग वीयम विसरी, छडिम ते घुरण।। २७ ।।

मैं आपके कहलाने से ही कहती हूं, वरना मेरे पास कहने को कुछ नहीं है। इस माया के संशय से सब कुछ भूल गई हूं, इसलिए मांगना छोड़ दिया।

घुरण अचे दिल में, पण द्रजां तोहिजे द्राए।
लाड करे त घुरां, जे पसां संग सांजाए।। २८ ।।

दिल में मांगने की इच्छा तो होती है, परन्तु आपके भय से डरती हूं। मैं आपसे लाड़ कर-कर तब मांगूं, जब पहले हमें आपसे सम्बन्ध की पहचान हो जाए।

रूहें चोंण सभे मूंहके, हाणे आंउं चुआं के केह।
न पसां न सुणियां संडेहडो, डिंने पेरे हेठ परडेह।। २९ ।।

यह सभी रूहें तो मुझसे कहती हैं। अब मैं किससे कहूं? मैं न तो आपको देख पाती हूं और न आपके सन्देश को ही सुन पाती हूं। आपने चरणों के तले बिठाकर परदेश दे दिया है।

सचो सोणे जीं थेयो, भाइयां सोणो थेयो सचो।
लाड कोड के से करियां, अंखिएं जां न अचो।। ३० ।।

परमधाम अब यहां सपने के समान हो गया। यह सपने का संसार सच्चा लगने लगा है। जब तक आप हमारी आंखों के सामने नहीं आ जाते, तब तक लाड़ और प्यार किससे करूं?

कीं करियां गालडी, जां न पसां पांहिजे नैण।
जे सुणाइए त सुणां, मिठडा तोहिजा वैण।। ३१ ।।

जब तक आपको नैनों से नहीं देख लेती, तब तक आपसे बातें कैसे करूं? अब आप ही अपने मीठे वचन सुनाओ, तो मैं सुनूं?

सुख तोहिजा सिपरी, अचे न लेखे में।
पार न अचे अपारजो, कडी न गणियां के।। ३२ ।।

हे प्रीतम! आप के सुख तो बेशुमार हैं जो लिखने में नहीं आते। पारावार होने के कारण आज दिन तक किसी ने गिने भी नहीं।

गुझांदर रूहन जो, सभे तूं जांणे।
कुरो चुआं विच वडी थेई, मूं पांहिजेडी न पांणे।। ३३ ।।

रूहों के दिल की छिपी बातों को आप सब जानते हैं। मैं रूहों के बीच बड़ी बनकर क्या करूं, जब मैं अपने को आपके अनुसार नहीं बना सकी।

Nijanand App

जा कांध न करे पांहिंजो, उभी बियनके चोए।
डे सोहाग बियनके, पांण अंगण ऊभी रोए।। ३४ ।।

जो पत्नी अपने पति को अपने वश में नहीं कर पाती तथा दूसरी स्त्रियों को शिक्षा देती है कि पति को कैसे रिझाना चाहिए, वह सुख दूसरों को तो समझाती है और खुद अपने घर में खड़ी-खड़ी रोती है।

बेओ जमारो वडाई में, बेठी खोए उमर।
डे वडाइयूं बियनके, पाण न खुल्यो दर।। ३५ ।।

इसी सिरदारी (प्रधानता) में ही मेरी सारी उम्र बीत गई। दूसरों को तो मैंने समझाया, परन्तु अपने लिए दरवाजा नहीं खोला।

थेई धणी सें सुरखरू, सोई सोहागिण होए।
सा मर गिंने पाणसे, जे आडो पट न कोए।। ३६ ।।

जो स्त्री अपने पति के पास हो, वही सुहागिनी है। वह भले ही सिर पर सिरदारी (प्रधानता) ले सकती है, क्योंकि उसके और उसके पति के बीच कोई परदा नहीं होता।

आंऊं पांहिजी परमें, कीं कीं पांणके भाइयां।
वडी थीयन विचमें, छेडो छडाइयां।। ३७ ।।

मुझे अपनी कुछ-कुछ जानकारी थी, इसलिए बड़े बनने की जिम्मेदारी से दूर भागती थी।

गाल्यूं मूंजे दिलज्यूं, सभ तूंहीं सुजाणे।
हे सभेई तोहिज्यूं, तो करायूं पांणे।। ३८ ।।

हे मेरे धनी! मेरे दिल की सभी बातें आप जानते हैं। यह बातें आपने ही की हैं और आप ही कराते हो।

मथे आंऊं त गिंना, जे कीं मूंमें होए।
आंऊं गुझ जाणा पाण विच जो, बेओ न जाणे कोए।। ३९ ।।

मेरे अन्दर यदि कोई अहंभाव होता तो, इसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती। मेरे और आपके बीच की गुझ (गुप्त) बातों को मैं जानती हूं। दूसरा कोई नहीं जानता।

मूंके वडी वधारिए, डिंने सभनी में सोहाग।
कीं डिठम कीं डिसंदिस, जेडो कंने भाग।। ४० ।।

आपने सब सखियों के बीच मुझे बड़प्पन दिया और सब में सिरदार बनाया। अब कुछ देखा है, कुछ-कुछ देखूंगी जैसा आप दिखाएंगे (जो हमारे भाग्य में होगा)।

त केहो जवाब रूहनके, विच करियां कीं आंऊं।
न कीं सुणाइए गुझ में, न पांइदडे धांऊं।। ४१ ।।

हे राजजी महाराज! रूहों के बीच क्या जवाब दूं? क्या करूं? न मैं आपकी गुझ बातों को सुन पाती हूं, न ही मेरी पुकार का जवाब देते हो।

Nijanand App

तो मूंके ई बुझाइयो, जे तूं हेकली थिए।
त तोसे करियां गालडी, दीदार पण डिए।।४२।।

हे धनी! आपने मुझे इस तरह से समझाया, हे इन्द्रावती! तू अकेली आ जा। तो तुझसे बातें भी करूं और दर्शन भी दूं।

आंऊं हेकली कीं थियां, बी लगाई तो।
तो रे आए को कित्तईं, जे हिनके पल्ले सो।।४३।।

हे धनी! मैं अकेली कैसे आऊं? यह बारह हजार रूहें भी मेरे पीछे लगा रखी हैं। आपके बिना दूसरा कौन और कहां है जो रूहों का पल्ला पकड़े?

से बस न्हाए मूंहजे, जे कीं करिए से तूं।
जे कीं जाणो से कर्यो, मूं में रही न मूं।।४४।।

इसलिए, हे श्री राजजी महाराज! अकेले आने की शक्ति मेरे में नहीं है। अब आप जो चाहते हो, वह करो, क्योंकि सब कुछ करने वाले आप ही हैं। मेरे अन्दर करने का कुछ भी स्वाभिमान नहीं रहा।

थी न सगां हेकली, बी तो लगाई।
छूटे न तोहिजी तोह रे, मूंजी फिरे न फिराई।।४५।।

मैं अकेली भी नहीं हो सकती, क्योंकि आपने मेरे पीछे माया लगा रखी है। वह आपकी माया आपके बिना नहीं छूट सकती। मेरे छोड़ने से यह छूटती नहीं है।

गोता खेंदे वेई उमर, पट सूके रे पाणी।
जे तो डिंनी हेत करे, सा टरे न सत्राणी।।४६।।

बिना पानी के इस माया में गोते खाते-खाते उम्र बीत गई। जिस माया को आपने बड़े लाड़ से दिया है, वह दुश्मन माया हटती नहीं है।

हे जा पेयम फांई जोर जी, से जा लाहिया जोर करे।
झल्ले पेर पिरनजा, पण मूंजी टारी कीं न टरे।।४७।।

यह बड़े जोर की फांसी लगी है। उसे आपके चरणों को पकड़कर छुड़ाती हूं। फिर भी इस फांसी का फंदा मेरे से नहीं छूटता।

धणी मूंहजी रूहजा, मूं से हित गालाए।
पिरी पसण जीं थिए, से तूंही डिए उपाए।।४८।।

हे मेरी आत्मा के धनी! यहां आकर मुझसे बातें करो। आपको मैं कैसे देख सकती हूं? वह उपाय भी आप दीजिए।

हे डात्यूं सभ तोहिज्यूं, इस्क जोस अकल।
मूरा बुझाइए मूंहके, आखिर लग असल।।४९।।

आपका इश्क, जोश और बुद्धि आपके देने से आती है। आपने यह मुझे पहले से ही समझा दिया था कि इस खेल के अन्त तक क्या होने वाला है।

Nijanand App

आंऊं अव्वल न आखिर, सभनी हंदे तूं।
ए मुराई भली भत्तें, ए तो डेखारई मूं।।५० ।।

मैं न शुरू में थी, न अब हूं और न आखिर में हूंगी, सभी जगह आप ही हैं। यह मैं अच्छी तरह से समझ गई कि यह माया आपने ही मुझे दिखाई है।

अर्ज पांहिजी रूहनजी, सभ तूं ही कराइए।
बाहेर मंझ अंतर, सभ तूं ही आइए।।५१ ।।

विनती मेरी हो या रूहों की तरफ से हो, सब आप ही कराते हैं। हमारे अन्दर या बाहर सब जगह आप ही हैं।

जीं कढ़े तूं हियां, जी पुजाईने घर।
हल्ले न जरे जेतरी, बी केहजी फिकर।।५२ ।।

आप जिस तरह से चाहो यहां से निकालो। जिस तरह से चाहो घर पहुंचा दो। मेरा यहां कुछ नहीं चलता तो दूसरे की चिन्ता कैसे करूं?

तूं करिए तूं कराइए, तूं पुजाइए पांण।
जा मथे गिंने तिर जेतरी, सा जोए वडी अजाण।।५३ ।।

आप ही करते हैं। आप ही कराते हैं। आप ही अपने पास पहुंचवाते हैं। वह स्त्री नासमझ है जो इन बातों को तिलमात्र भी अपने सिर पर लेती है।

सिकण सडण जीरे मरण, से सभ हथ धणी।
तो चंगी पेरे डेखारियो, त मूं न्हास्यो नैण खणी।।५४ ।।

कुढ़ना, ललचाना, जीना, मरना, हे धनी! यह सब आपके हाथ में है। यह पहचान आपने अच्छी तरह से करा दी है, तो मैं आंखें खोलकर आपके दर्शन कर रही हूं।

हाणे गाल्यूं मूंजे हालज्यूं, कंदिस आंसे आंऊं।
बेओ केर सुणीदो तो रे, जे करियां वडियूं धांऊं।।५५ ।।

अब अपनी हालत की बातें मैं घर आकर आपसे करूंगी। यदि जोर-जोर चिल्लाकर कहती भी हूं तो यहां आपके बिना कौन सुनने वाला है?

तो न डेखारयो मूर थी, कोए हंद बेओ।
मूंजी रूहके नूरजमाल रे, हंद जरो न कित रह्यो।।५६ ।।

इसलिए, आपने शुरू से ही कोई दूसरा ठिकाना नहीं दिखलाया है। मेरी आत्मा के धनी! आपके चरणों के बिना मेरा कहीं ठिकाना नहीं है।

महामत चोए मेहेबूबजी, जे उपटिए द्वार।
रूहें गिंनी अचां पांणसे, जीं अची करियां करार।।५७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, मेरे लाड़ले धनी आप दरवाजा खोलो तो मैं सब रूहों को लेकर अपने सहित आ जाऊं और आकर आप के साथ आनन्द लूं।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५७ ।।

Nijanand App

रे पिरीयम, हथ तोहिजडे हाल।
आए डी वेरां उथणजी, हांणे पसां नूरजमाल।। १ ।।

हे धनी हमारी डोरी (हालत) अब आपके हाथ में है। अब समय उठने का आ गया है। अब उठकर आपको देखूंगी।

अरवाहें जा हिन अर्स जी, कीं छडे खिलवत हक।
जा डेखारिए रूहके, ते में जरो न सक।। २ ।।

परमधाम की जो रूहें हैं, वह अपने मूल-मिलावा और श्री राजजी महाराज को कैसे छोड़ सकती हैं? आपने मूल-मिलावा में रूहों को बिठाकर खेल दिखाया है। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

हिन अर्सजे बाग में, आयूं मुदयूं मींह।
हिन वेरां असां के, जुदयूं रख्यूं कींह।। ३ ।।

हे राजजी महाराज! परमधाम के बगीचों में वर्षा ऋतु आ गई है। इस समय आपने हमको अलग क्यों कर रखा है?

वडे अर्सजे मोहोल में, मिडावा रूहन।
आयासी मोहोल बाग जे, मथड़ा मींह झबन।। ४ ।।

परमधाम के रंग महल में हम रूहों का मिलावा है, जहां हम मिलकर रहती हैं। उस रंग महल की आकाशी के बगीचों में ऊपर से पानी बरसता है।

अर्स बाग जे मोहोल में, झरोखे झांखन।
तो डिंने असां जे दिल में, हे सुख याद अचन।। ५ ।।

परमधाम के झरोखों से झांककर उन बगीचों को देखने के सुख जो आपने दे रखे हैं, वह हमें याद आते हैं।

चढी नी आयूं सेरडियूं, कपरियूं गजन।
ए सुख डिए रूहन के, वन में विज्यूं खेवन।। ६ ।।

बादल चढ़ आए हैं और गरज रहे हैं। बिजली वन में चमक रही है। यह सुख हम रूहों को आप देते थे।

चढी झरोखे न्हारजे, मींह वसे मथें वन।
वींटी वरियूं वडरियूं, हिन वेरां बाग सोहन।। ७ ।।

रंग महल के झरोखे से चढ़कर देखते हैं तो वनों के ऊपर पानी बरसता है। बादलों ने चारों तरफ से घेर रखा है। ऐसे समय में बगीचे बहुत सुहावने लगते हैं।

अर्स अग्यां चांदनी, चई चोतरन।
हिन मुदयूं मींह संदियूं, दोडे चढ़ें ठेकन।। ८ ।।

हे श्री राजजी महाराज! रंग महल के आगे चांदनी चौक में चार चबूतरे हैं। इस वर्षा ऋतु में उन पर दौड़ती हैं, चढ़ती हैं और कूदती हैं।

Nijanand App

अग्यां अर्स बागमें, करे कोइलडी टहुंकार।
ढ़ेली मोर कणकियां, जमुना जोए किनार।। ९ ।।

रंग महल के आगे बगीचे में कोयल आवाज करती है। जमुनाजी के किनारे पर मोर तथा मोरनियां (ढेल) आवाज करती हैं।

मथेनी वसे मींहडो, वानर मोर कुडन।
कई नी जातूं जानवर, कई जातूं पसुअन।। १० ।।

ऊपर से बरसात बरसती है। नीचे बन्दर और मोर खुशी से खुशियां मनाते हैं और भी कई जाति के जानवर और पशु खुशी मनाते हैं।

पसु पंखी हिन अर्सजा, ते कीं चुआं चित्राम।
मिठी मोंहें मीठी जिकर, ए डिए रूहें आराम।। ११ ।।

परमधाम के पशु-पक्षियों के चित्रों की हकीकत कैसे बताऊं? वह अपने मधुर मुख से मीठी-मीठी बातें करके सखियों को सुख देते हैं।

वाओ अचे बागनमें, डालरियूं उलरन।
रूहें रांद करींदियूं, मथें चढ्यूं लुडन।। १२ ।।

बगीचों में सुन्दर हवा आने से डालियां झूमती हैं और सखियां खेलती हुई उन पर चढ़कर झूलती हैं।

जानवर जे हिन बाग जा, डारी डारी त्रपन।
मिठडी चूंजे मीठी वाणियां, हे रांदिका रूहन।। १३ ।।

परमधाम के इन बागीचों के पशु पक्षी डाली-डाली पर कूदते हैं और वह अपने मीठे मुखों से मधुर बोली बोलते हैं। यह सब सखियों के खिलौने हैं।

हिन मुंद्यूं मींह संदियूं, रूहें रांद करीन।
दोडे कूडे मींहमें, पांहिजे साथ पिरीन।। १४ ।।

इस वर्षा ऋतु में सखियां खेल करती हैं। वह अपने धनी के साथ पानी में दौड़ती-कूदती हैं।

सुखडा जे हिन अर्सजा, आईन सभे कमाल।
रूहें बड़ीरूह विचमें, धणी सो नूरजमाल।। १५ ।।

परमधाम के यह सुख बड़े कमाल के हैं। रूहें श्री राजजी और श्री श्यामाजी से सुख लेती हैं।

सेहेर्‍यूं कपरियूं नूर ज्यूं, मिठडा नूर गजन।
वसेथ्यूं नूर वडरियूं, वीजडियूं नूर खेवन।। १६ ।।

आसमान के बादल नूर के समान स्वच्छ हैं। मधुर नूर की गरजना होती है। ऊपर से नूर की बरसात होती है और नूर की ही बिजली चमकती है।

मिठडो वाओ नूर जो, अचे नूर खुसबोए।
हे सुख अर्स बाग में, कीं चुआं किनारे जोए।। १७ ।।

नूर की हवा बहती है और नूर की खुशबू आती है। जमुनाजी के किनारे परमधाम के बगीचों के सुख कैसे कहूं?

Nijanand App

महामत चोए मेहेबूबजी, तो पसाएं पसन।
अंखियूं नी आसा एतियूं, मूंजी रूहजी या रूहन।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले धनी! अब आप ही दिखाओ तो देखें। हमारी या रूहों की आंखों की इतनी ही चाहना है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ७५ ।।

रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे।
एहेडी किजकां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे।। १ ।।

हे धनी! मैं आपसे मिलापकर, लाड़ करके मांगती हूं। मुझ पर कोई ऐसी मेहर करो कि मैं हंसती हुई आपके गले से आकर चिपट जाऊं।

तो मूंके चेओ तूं मूंहजी, हेडी करे निसबत।
धणी मूंहजे धामजा, आंऊं हांणे को हिन भत।। २ ।।

आपने मुझ से कहा कि तू मेरी अंगना है। हे मेरे धाम के धनी! तो फिर मेरी ऐसी हालत क्यों है?

एहेडो संग करे मूंहसे, अची डिंनिंए सांजाए।
इलम डिंनिंए बेसक जो, त आंऊं को बेठिस हीं पाए।। ३ ।।

मेरे से अपना ऐसा सम्बन्ध करके आपने अपने मुंह से अपनी पहचान कराई और अपना निःसन्देह ज्ञान दिया, तो अब इसे पाकर मैं बैठी कैसे रहूं?

इलम डिंने पांहिजो, जेमें सक न कांए।
डिंनिंए संग साहेबी, हित जाणजे कीं न सांजाए।। ४ ।।

आपने अपना ज्ञान दिया। जिसमें किसी तरह का संशय नहीं है। आपने अपनी साहिबी भी दी है। संसार में जिसकी किसी को पहचान नहीं है।

जे आंऊं चाहियां दिलमें, से को न कर्यो आंई हित।
कोठ्यो को न सुखनसे, जीं थिए न उसीडो हित।। ५ ।।

जो मैं दिल में चाहती हूं, उसे आप यहां क्यों पूरा नहीं करते? हमको सुख में घर क्यों नहीं बुलाते जिससे हमारी उदासी यहां न रह जाए।

मूंके केयज सुरखरू, से लखे भाइयां भाल।
रूहें कोठे अचां आं अड्डूं, जीं खिल्ली करियां गाल।। ६ ।।

मुझे आप अपने सामने बुलाओ तो आपके लाखों एहसान मानूंगी। रूहों को बुलाकर मैं आपकी तरफ आ जाऊंगी और हंसकर बातें करूंगी।

डिठम सुख सोणेमें, हिक आंझो तोहिजो आए।
मूंसे संग केइए हिन भूंअ में, जे डिए हित सांजाए।। ७ ।।

आपके सुखों को मैंने सपने में देखा। आपका ही एक भरोसा है। यदि आपने यहां अपनी पहचान दी है तो इस संसार में आकर मिलो।

Nijanand App

तूं धणी तूं कांध तूं, मूंजो तूं खसम।
ही मंगांथी लाडमें, जाणी मूर रसम।। ८ ।।

आप मेरे धनी हैं, पति हैं, खसम हैं। मूल घर की रसम जानकर आपसे लाड़ मांगती हूं।

कुछाइए त कुछांथी, माठ कराइए तूं।
को न पसांथी कितईं, मत्थे अभ तरे थी भूं।। ९ ।।

आप बुलवाते हो, तो बोलती हूं और चुप कराते हो तो चुप हो जाती हूं। यहां ऊपर आसमान, नीचे जमीन में कहीं कुछ दिखाई नहीं देता।

हे सभ तो सिखाइयूं, आंऊं मुराई अजाण।
जे कंने जे केइए, से सभ तूं हीं पाण।। १० ।।

यह तो आपने सिखाया है, मैं तो शुरू से ही अनजान थी। जो आपने किया या करते हो, सब आप ही करते हो।

घणुए भाइयां न कुछां, पण कुछाइए थो तूं।
इस्क रे कुछण कीं रहे, न डिंनी सबूरी मूं।। ११ ।।

मैं बहुत सोचती हूं कि कुछ न बोलूं, पर आप बुलवाते हैं। बिना इश्क के बोलें कैसे? यह सहूर आपने नहीं दिया।

पिरी मत्थें वेही करे, डेखारयाई हे ख्याल।
खिल्लण खसम रूहन मथां, पसी असांजा हाल।। १२ ।।

हे राजजी महाराज! आपने ऊपर बैठकर हमें यह खेल दिखाया है, ताकि हमारी हालत को देखकर हम रूहों के ऊपर हंस सको।

असीं हथ हुकम जे, तो केयूं फरामोस।
जीं नचाए तीं नचियूं, कीं करियूं रे होस।। १३ ।।

आपने ऐसी फरामोशी दी है कि हम आपके हुकम के अधीन बंध गए। अब आप जैसा नचाओ वैसा ही नाचें। बिना सावचेत (सतर्क) हुए हम कर भी क्या सकते हैं?

हुकम करयो था जेतरो, तीं फिरे असल अकल।
अकल फिराए सोणे के, तीं फिरे असांजा दिल।। १४ ।।

आप जितना हुकम करते हो, उतनी ही बुद्धि हमारी चलती है। संसार में भी हमारी बुद्धि को जितना घुमा देते हो, उतना हमारा दिल घूम जाता है।

पिरी पाण हित अची करे, बेसक डिंने इलम।
अर्स बका हिक हकजो, बेओ जरो न रे हुकम।। १५ ।।

हे धनी! आपने यहां आकर हमें जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया। जिससे हमें पता लगा कि अखण्ड परमधाम, आप तथा आपके हुकम के बिना यहां और कुछ नहीं है।

Nijanand App

लख गुणा डिए सिर पर, सो वराके ई गाल।
अर्सी फरामोस तो हथमें, कौल फैल जे हाल।। १६ ।।

आप हमारे सिर पर लाखों दोष दो तो सौ बातों का एक ही उत्तर है कि हम आपके हाथों में फरामोशी में हैं, इसलिए हमारी कहनी, करनी और रहनी भी आपके हाथों में है।

तेहेकीक केयो तो इलमें, तो धारा न कोई बेसक।
अर्स रूहें अर्सी कदमों, कित जरो न तो रे हक।। १७ ।।

आपके इलम ने यह निश्चित कर दिया है कि आपके बिना और कोई है नहीं। हम परमधाम की रूहें आपके चरणों में हैं। हे धनी! आपके बिना कहीं कुछ नहीं है।

गुणा डिठम कई पांहिजा, से लाथा तोहिजे इलम।
कोए पाक न्हाए हिन दुनीमें, से असांके केयां खसम।। १८ ।।

मैंने अपने दोष देखे, परन्तु अब आपके इलम से सब समाप्त हो गए। इस दुनियां में माया से कोई पाक-साफ नहीं है। आपने ही हमको पाक-साफ कर दिया है।

आसमान जिमी जे विचमें, के चेयो न बका जो हरफ।
एहेडो कोए न थेयो, जे तो बका डेखारे तरफ।। १९ ।।

आसमान और जमीन के बीच में किसी ने अखण्ड घर परमधाम का एक अक्षर भी नहीं बताया। कोई ऐसा यहां नहीं हुआ है, जो आपके घर की पहचान बताए।

दुनियां हिन आलम में, कायम न डिठो के।
से सभ पाण पुकारियां, हिन चौडे तबके में।। २० ।।

इस संसार में किसी को अखण्ड घर नहीं मिला। ऐसा आपने स्वयं चौदह लोकों में पुकार-पुकार के कहा।

से कायम सभे थेयां, कूडा मोहोरा जे।
वडी वडाइयूं डिंनिए, असां हथ कराए।। २१ ।।

संसार के यह झूठे जीव और देवी-देवता अब सब अखण्ड हो गए। उनको अखण्ड बहिश्तों में हमारे हाथों से अखण्ड कर हमारी बड़ी महिमा गवाई।

कई खेल डेखारे रांद में, इलम डिंने बेसक।
भिस्त डियारी असां हथां, दुनियां चौडे तबक।। २२ ।।

संसार में हमें कई तरह के खेल दिखाए और वाणी भी निःसंदेह करने वाली दी। संसार को हमारे हाथ से बहिश्तें दिलवाईं।

डिंनिए वड्यूं वडाइयूं, हांणे जे डिए दीदार।
मिठा वैण सुणाइए वलहा, त सुख पसूं संसार।। २३ ।।

आपने हमें बड़ी बुजरकी (महानता) दिलाई है। अब केवल दर्शन और दे दो। मीठे वचन सुना दो। तो, हे धनी! संसार के सुख को देख सकूं।

Nijanand App

हे पण भूल असांहिजी, जे हिनमें मंगूं सुख।
बिओ डिसण वडो कुफर, गिंनी इलम बेसक।। २४ ।।

इसमें भी भूल हमारी ही है जो माया में सुख मांगती हूं। आपका बेशक जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर माया में सुख देखना दूसरा कुफ्र है।

खेल त जरो न्हाए कीं, ए इलमें खोली नजर।
हित बेही मंगूं सुख अर्सजा, धणी मिडन कोठे घर।। २५ ।।

यह खेल तो कुछ भी नहीं है। आपकी जागृत बुद्धि ने हमारी नजर खोल दी है। यहां बैठकर मैं परमधाम के सुख मांगती हूं, ताकि धनी घर में बुलाएं और मैं उनसे मिल सकूं।

ढील मंगूं घर हल्लणजी, बिओ खेल में मंगां सुख।
हिनमें अचे थो कुफर, आंऊं छडी न सगां रुख।। २६ ।।

घर चलने में भी देरी करना चाहती हूं। दूसरा खेल में सुख मांगती हूं। यह भी एक कुफ्र है कि मैं खेल को छोड़ना नहीं चाहती।

हिकडी गाल थेई हिन न्हाए में, असां न्हाए भारी थेयो।
त सुख मंगूं हित अर्सजा, जे न्हाए के पसूं था बेओ।। २७ ।।

इस झूठे संसार में एक ऐसी बात हो गई है कि यह झूठा संसार मुझे भारी पड़ गया, इसलिए यहां खेल में परमधाम के सुख मांगती हूं। नाचीज संसार को मैं दूसरा समझ बैठी हूं।

आंजी मंगाई मंगा थी, या कुफर या भूल।
हे डोरी आंजे हथ में, असां दिल अकल।। २८ ।।

आप मंगवाते हो, तो मांगती हूं। झूठ हो या भूल हो। हमारे दिल और अक्ल की डोरी आपके हाथ में है।

जे कीं डिसण बोलण, से तो रे सब बंधन।
हक इलम चोए पधरो, जे विचार करे मोमिन।। २९ ।।

जो कुछ देखती हूं या बोलती हूं, वह सब आपके बिना माया के फन्द ही हैं। आपकी जागृत बुद्धि का ज्ञान स्पष्ट कहता है कि मोमिन इस पर विचार कर लें।

धणी मूंहजे धामजा, असां न्हाए चोंणजी गाल।
असांजा आंजे हथ में, कौल फैल जे हाल।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धाम के धनी! अब हमें कुछ कहने की बात नहीं रह गई। हमारी कहनी, करनी और रहनी सब आपके हाथ में है।

महामत चोए मेहेबूब जी, कस्यो जे अचे दिल।
जी जांणो तीं कस्यो, असां जी अकल।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे महबूब! अब जैसी आप के दिल में आवे, वैसी करो। जैसे आपको अच्छा लगे, वैसे हमारी बुद्धि को घुमाओ।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १०६ ।।

Nijanand App

रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे।
हेडी किजकां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे।। १ ।।

हे प्रीतम! मैं आपसे प्यार करके मांगती हूं कि मेरे साथ कुछ ऐसा करो कि मैं हंसती हुई आपके गले से आकर लग जाऊं।

जगाइए इलम से, विच सोणे विहारे।
निद्रडी आई जा हुकमें, जागां कींय करे।। २ ।।

आप इस झूठे संसार में बिठाकर अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जगाते हो। जो फरामोशी (नींद) आपके हुकम से आई है, उससे मैं कैसे जागूं?

हे अंगडा सभ सोंणेजा, असल कूडा जे।
जोर करियां घणी परे, त कीं न पुजे तो के।। ३ ।।

मेरे सभी अंग सपने के हैं और सभी झूठे हैं। मैं बहुत ताकत लगाती हूं फिर भी आप तक नहीं पहुंच पाती।

इलमें न रखी कां सक, मूंजो हल्ले न सोंणे में।
संगडो डेखारे बेसक, आंऊं लाड करियां के से।। ४ ।।

आपकी तारतम वाणी ने कोई संशय नहीं रखा, परन्तु स्वप्न में मेरा कुछ चलता ही नहीं। आपने अपनी बेशक पहचान कराकर सम्बन्ध बता दिया कि मैं आपकी अंगना हूं। अब मैं किससे लाड़ करूं?

हे पसां सभ सोंणे में, आंऊं विच जिमी आसमान।
से न्हाए चौडे तबके, मूंजो संगडो तूं सुभान।। ५ ।।

इस सपने के संसार में आसमान और जमीन के बीच जो देखती हूं तो चौदह लोक में, हे मेरे धनी! आप दिखाई नहीं देते।

मूं धणी मूं हितई, ओडो डेखारे इलम।
हथ घुरींदे न लहां, न डिसां नेंणे खसम।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके इलम ने मुझे खेल में भी आपके पास दिखलाया है। मैं स्वयं आपसे से मांगती हूं तो भी आपको नहीं पाती हूं (नहीं मिलती हूं) और न ही आपको नजर से देख सकती हूं।

हे इलम एहेडो आइयो, जेहेडो आइए तूं।
इलम सोंणे में को करे, मूं में रही न मूं।। ७ ।।

आपका ज्ञान भी ऐसा है जैसे आप हैं। जब मेरे में अहंभाव ही नहीं रह गया, तो आपका ज्ञान भी संसार में क्या करे?

रांद सभेई निद्रजी, जीरया मरया वजन।
सोंणे अंगडा असांहिजा, तोके कीं न पुजन।। ८ ।।

संसार में जीने-मरने का खेल माया का है। हमारे तन भी सपने के हैं, जो आप तक नहीं पहुंच सकते हैं।

Nijanand App

हे सोंणो तोहिजे हथ में, तो हथ निद्र इलम।
तोहिजा सुख सोंणे या जागंदे, सभ हथ तोहिजे हुकम।। ९ ।।

यह सपना भी आपके हाथ में है। आपके हाथ में ही यह फरामोशी और ज्ञान है। अब आपके सभी सुख सपने में मिले या जागृत अवस्था में। सब आपके हुकम के हाथ में है।

हेडी गाल अची लगी, जाणे थो सभ तूं।
तो पांणे पांण डेखारयो हिकडो, आंऊं त पसां तो अडूं।। १० ।।

अब बात यहां आकर लगी है। यह बात आप जानते हैं, क्योंकि आपने अपने को ही सिर्फ बताया है, इसलिए मैं आपकी तरफ देख रही हूं।

कीं घुरां आंऊं के कणां, ओडो न अचे तूं।
बिओ को न पसां थी कितई, आंऊं विच आसमाने भूं।। ११ ।।

अब मैं कैसे मांगूं? किससे मांगूं? जब तक पास नहीं आ जाते। आसमान और जमीन के बीच में मुझे कोई दूसरा कहीं दिखाई ही नहीं देता।

बोलां थी तो बोलाई, तो अडां पसाइए तूं।
निद्र इलम या इस्क, तो डिंनो अचे मूं।। १२ ।।

आप बुलवाते हो तो बोलती हूं। अपनी ओर दिखाते हो तो देखती हूं। नींद हो, इलम हो या इश्क हो, सब आपके देने से ही मुझे मिलते हैं।

जे चओ त बोलियां, न तां मांठ करे रहां।
जे उपाओ था दिल में, से तो रे के के चुआं।। १३ ।।

जो आप कहो वह मैं बोलती हूं, नहीं तो चुप रह जाती हूं। जो आप मेरे दिल में पैदा कराते हैं, वह आपके बिना किससे कहूं?

हंद न रख्यो कितई, जे से करियां गाल।
तो डेखारी डिस तोहिजी, से लखे तोहिजा भाल।। १४ ।।

आपने कहीं ठिकाना नहीं रखा, जिससे मैं बात करूं? आपने अपने घर की पहचान कराई, जिसका मैं आपके लाखों एहसान मानती हूं।

मूं अवगुण डिठां पांहिजा, गुण डिठम पिरम।
से बेओ जमारो गेंदे, उमेद ए रियम।। १५ ।।

मैंने अपने अवगुणों को देखा और आपके गुणों को देखा। आपके गुणों को गाते-गाते मेरी उम्र बीत गई और एक चाहना बनी रह गई।

तो उमेदूं पुजाइयूं, जे जो न्हाए सुमार।
हे तो पांण मंगाइए, तूंही डियन हार।। १६ ।।

आपने मेरी जितनी चाहनाएं पूर्ण की हैं वह बेशुमार है। यह तो आप मंगवाते हो तो मांगती हूं। आप ही देने वाले हैं।

Nijanand App

लाड कोड तो हथमें, संग या सांजाए।
जडे तडे तूंही डिए, बेओ कोए न कितईं आए।। १७ ।।

हमारे लाड़ और खुशी सब आपके हाथ में है। इसकी जानकारी और पहचान आप कराते हैं। जब कभी देते हो तो आप ही देते हो। दूसरा कोई कहीं है ही नहीं।

जडे आंणीने ओडडा, तडे पेरई डिंने लज्जत।
हे डिंनो अचे सभ तोहिजो, मूंके बुझाइए सौ भत।। १८ ।।

जब आप अपने पास बुलाते हैं, तो पहले से ही आनन्द आने लगता है। यह सब आप के देने से आता है। यह मुझे सब तरह से समझा दिया है।

जीं बुझाइए मूंहके, डे तूं मेहेर करे।
जे न घुरां तो कंने, त को आए बेओ परे।। १९ ।।

जैसा आपने मुझे समझाया है, आप मुझे मेहर करके दें। यदि आपसे मैं न मांगू, तो दूसरा कौन है जिससे मांगू?

ए तो सिखाई मूं सिखई, को न घुरां धणी गरे।
मूं थेयूं हजारूं हुजतूं, जडे तो डिंनो संग करे।। २० ।।

जो आपने सिखाया तो मैं सीखी कि अपने धनी से क्यों नही मांगू। मेरी हजारों चाहनाएं थीं जो आपने मुझे पहचान कराकर पूरी दीं।

संगडो डिठम बेसक, मंझ तोहिजे इलम।
त चुआं थी हुजतूं, जे चाइए थो खसम।। २१ ।।

मैंने अपने सम्बन्ध को आपके इलम से तेहकीक कर पहचान लिया। इसलिए दावे के साथ कहती हूं। जो आप कहलवाते हो।

हांणे चाह डिए थो दिलके, त दिल करे थो चाह।
अपार मिठाइयूं तोहिज्यूं, जे डिंने पाण हथांए।। २२ ।।

जब आप हमारे दिल में चाहना पैदा कराते हो, तो हमारा दिल चाहना करता है। आपकी वाणी में बेशुमार सुख हैं, जिसे आप अपने हाथ से देते हैं।

महामत चोए मेहेबूबजी, ही सुणज दिल धरे।
हांणे हेडी डिजंम हिंमत, जीं लगी रहां गरे।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले धनी! यह बात दिल से सुन लो। अब ऐसी ताकत दो कि मैं आपके गले से चिपटी रहूं।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १२९ ।।

श्री देवचन्दजी मिलाप विछोहा

सांगाए थिंदम धाम संगजी, तडे घुरंदिस लाड करे।
दम न छडियां तोहके, लगी रहां गरे।। १ ।।

जब परमधाम के सम्बन्ध की पहचान हो गई तब मैं आपसे लाड़ (प्यार) करके मांगती हूं। अब आपको एक पल के लिए नहीं छोडूंगी। गले से चिपटी रहूंगी।

Nijanand App

जासीं संग न सांगाए, त रूह केडी सांजाए।
हे गाल्यूं थियन सभ मथियूं, त कीं लाड करे घुरांए।। २ ।।

जब तक सम्बन्ध की पहचान नहीं है, तब तक आत्म की पहचान कैसे हो? यह सब बातें ऊपर की हैं, तो यह प्यार करके कैसे मांगी जा सकती हैं?

हे सभ सांजायूं तो हथ, लाड सांगाए या संग।
कौल फैल या हाल जो, तो हथमें नों अंग।। ३ ।।

हे राजजी महाराज! यह सब पहचान कराना आपके हाथ में है। अब चाहे प्यार करो, साथ में रखो या पहचान कराओ। हमारी कहनी, करनी, रहनी तथा शरीर के सब अंग आपके हाथ हैं।

पेरो केयां जा गालडी, सा रूहके पूरी लगी।
हिक तो रे को न कितई, हे तोहिजे इलमें सक भगी।। ४ ।।

पहले जो आपने बात बताई वह मेरी आत्मा को चुभ गई (सत्य बैठ गई)। आपके इलम से यह संशय भी मिट गया कि आपके बिना और कोई नहीं है।

तो घर न्यारो दुनी से, थेयम तोसे संग।
आसमान जिमी जे विचमें, मूंके तो धारा सभ रंज।। ५ ।।

आपके सम्बन्ध से पता चला कि हमारा घर दुनियां से न्यारा है। आसमान और जमीन के बीच में यहां आपके बिना सब दुःख ही दुःख है।

घणा डींह घारिम कुफरमें, कर कूडे से संग।
कंने सुणी संग तोहिजो, लगी न रूह जे अंग।। ६ ।।

मैंने इस दुनियां में झूठों का साथ करके बहुत दिन झूठ में ही बिता दिए। आपकी बातें जो कानों से सुनी; वह मेरी आत्मा में नहीं चुभीं।

हे दिल आइम तेहेकीक, जे हेकली थियां आंऊं।
त खिल्ले कूडे मूंह से, थिए दम न अघाऊं।। ७ ।।

अब यह दिल में निश्चय हो गया है कि मैं अकेली आपके पास आऊं, तो आप मुझे तरह-तरह से हंसाएंगे। पर किसी तरह से एक पल के लिए भी आपसे अलग न होऊंगी।

हे तां पाणे पधरी, जे आंऊं हेकली थियां।
तडे कीं न अचे तो दिलमें, जे आंऊं हिन के सुख डियां।। ८ ।।

यह तो आपने ही प्रत्यक्ष कह रखा है कि मैं अकेली होकर आपके पास आऊं। आपके दिल में यह क्यों नहीं आता कि मैं इनको सुख दूं।

थियां हेकली हिन रंजमें, मथे अभ तरे थी भूं।
ईं हाल पसां पांहिजो, त कीं छडे हेकली मूं।। ९ ।।

मैं इस दुःख के संसार में अकेली हूं। जहां नीचे जमीन और ऊपर आसमान है। मेरी ऐसी हालत देखकर आपने मुझे अकेला कैसे छोड़ दिया है?

Nijanand App

धणी मूंहजे अर्सजा, चुआं मूं हेकली जो हाल।
जीं आंऊं गडजी विछडिस, सा करियां आंसे गाल।। १० ।।

हे मेरे धाम के धनी! मैं अपने अकेले हो जाने की हालत बताती हूं कि मैं आपसे कैसे मिली और बिछुड़ गई? यह बात मैं आपसे बताती हूं।

आंऊं हुईस धणी जे कदमों, तडे संग न सांगाए।
चेआंऊं घणी भत्तिएं, पण थीयम न सांजाए।। ११ ।।

मैं सबसे पहले जब धनी के चरणों में पहुंची तो मुझे मेरे सम्बन्ध की पहचान नहीं थी। मुझे तरह-तरह से समझाया, परन्तु मुझे पहचान नहीं हुई।

तडे धणिए मूंके चयो, जे ब जण्यूं आईंन।
खिल्ले थ्यूं न्हारे रांद अडां, तांजे सांगाईंन।। १२ ।।

तब धनी ने मुझे कहा कि खेल में दो जनी आई हैं जो खेल को देखकर हंस रही हैं। कैसे भी उनको जगाना है (यह इशारा शाकुण्डल शाकुमार के लिए है)।

रूहअल्लाएं ईं चयो, पांण न्हारे कढ्यूं तिन।
पांण से न्हारे न कढ्यूं, आंऊं हुइस गाल में इन।। १३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कहा, परन्तु स्वयं उनको नहीं जगा सके। मैं भी सोचती रह गई कि उन्होंने स्वयं क्यों नहीं खोजकर निकाला।

पांण बखत हल्लण जे, याद केयांऊं मूंके।
चेयाऊं ईं जेडिन के, जे कोठे अचो हिनके।। १४ ।।

अपने धाम चलने के समय (श्री देवचन्द्रजी ने) मुझे याद किया (जब मैं धरौल में कलाजी के पास था)। सब सखियों से, अर्थात् श्री बिहारीजी और श्री बालबाईजी को कहा कि मेहराज ठाकुर को बुलाकर लाओ।

अची आंऊं पेरे लगी, तडे मूंके चेयाऊं ईं।
रूह तोहिजी रोए थी, आंऊं पेया अर्समें कीं।। १५ ।।

मैंने आकर उनके चरणों में प्रणाम किया। तब मुझसे इस तरह कहा कि श्री इन्द्रावतीजी धाम के दरवाजे पर तेरी रूह खड़ी रो रही है। मैं परमधाम कैसे जाता? अर्थात् श्री इन्द्रावतीजी का दिल ही धाम है। इसमें वियोग के कारण कैसे बैठते?

दर माधा अर्स जे, आंऊं रोंदी पसां हित।
ते मूं तोके कोठई, आंऊं हल्ली न सगां तित।। १६ ।।

परमधाम के दरवाजे के सामने मैंने श्री इन्द्रावतीजी को रोते देखा है, इसलिए मैंने तुझको बुलाया, क्योंकि मैं धाम में जा नहीं सकता था।

मूंके चेयाऊं पधरो, सा सुई गाल सभन।
पर केर परुडे इसारतूं, संदयूं हिन दोसन।। १७ ।।

मेरे से यह बात स्पष्ट कही जो सबने सुनी। इन दो दोस्तों की (सुन्दरबाई, श्री इन्द्रावतीजी) बातें दूसरा कौन समझे?

Nijanand App

करे मेडो चेयांऊं मीठी भत्ते, पण आंऊं निद्र मंझ।
पण मूं कीं न परूड्यो, सर छडे उड्या हंज।। १८ ।।

मुझसे मिलकर मीठी-मीठी बातें कीं, परन्तु मुझे माया की लहर थी और मैं कुछ नहीं समझ सकी। तब भवसागर को छोड़कर धनी चले गए।

ईं थीयस आंऊं हेकली, भोंणा डोरींदी बेई।
धणिएं जा मूंके च्रई, तांजे न्हारे कढ़ां सेई।। १९ ।।

हे प्रीतम! मैं इस तरह अकेली हो गई हूं और उन दोनों को ढूंढ़ती हुई भटकती हूं। धनी ने जो मुझ से कहा था। सोचा शायद उनको ही ढूंढ़ निकालो।

डोरींदे जे लधिम, अरवा कई हजार।
किन जाण्यो घर नूरजो, के नूर घर पार।। २० ।।

खोजते-खोजते कई हजार सखियां मिलीं। इनमें से कुछ अक्षरधाम की, कुछ परमधाम की मिलीं।

हिनीमें जे बे चयूं, सुन्दरबाई सिरदार।
से पण थेयूं निद्र में, तिंनी सुध न सार।। २१ ।।

इनमें सिरदार सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने दो बताईं। वह खेल में इतना मग्न हो गईं कि उनको घर की सुध नहीं रही।

तिंनी बी में हिकडी, अची गडई मूं।
जे हाल आए इन जो, से जाणे थो सभ तूं।। २२ ।।

उन दोनों में मुझे एक शाकुण्डल आकर मिली और इस शाकुण्डल की जो हालत है, वह सब आप जानते हैं।

आंऊं बेठिस हिनजे घर में, मूंके रख्याई भली भत्त।
केयांई सभे बंदगी, जांणी तोहिजी निसबत।। २३ ।।

मैं शाकुण्डल के घर में ही बैठी हूं। मुझे आपका ही स्वरूप पहचान कर, सब प्रकार से भली भांति सेवा, बंदगी कर रहे हैं।

हिक हिनजे दिल में, द्रढाव वडो डिठम।
हांणे माथा हथ तोहिजे, पण हितरो पेरो केयो पिरम।। २४ ।।

शाकुण्डल के दिल में इरादा पक्का देखा। अब आगे आपके हाथ में है। इतना तो पहले मैंने कर दिया।

चेयम हाल हिनजो, जा हिक मूं गडई।
मूं बेओ जमारो डोरींदे, हुन बी पण खबर सुई।। २५ ।।

मुझे एक जो शाकुण्डल मिली है उसकी हकीकत बताती हूं। ढूंढते ढूंढते मेरी उम्र बीत गई। इसकी खबर शाकुमारबाई ने भी सुनी।

Nijanand App

हे बए जण्यूं मिडी करे, मूंके थ्यूं न्हारीन।
हुन असिधें ईं न विचारियो, हो मूं लाए डुख घारीन।। २६ ।।

शाकुमारबाई ने सुना कि शाकुण्डल और श्री इन्द्रावतीजी मिल्कर दो जनी मुझे खोज रही हैं। उसने फरामोशी में यह विचार नहीं किया कि यह दोनों मेरे लिए दुःख उठा रही हैं।

हो हल्लण के उतावस्यूं, अर्स उपटे दर।
हे कीं रेहेंदयूं रंज में, हुन बिसरी न्हाए खबर।। २७ ।।

एक जो शाकुण्डल मिली है वह घर चलने के लिए जल्दी मचाती है। कहती है कि परमधाम के दरवाजे खोलो। वह दुःख के सागर में कैसे रहे? दूसरी शाकुमार है। वह भूली है और उसे खबर भी नहीं है।

ते लाएं पिरम आंऊं हेकली, मूं बी न गडजी कांए।
जे तोजो दर उपटे, मूज्यूं आसडियूं पुजाए।। २८ ।।

इसलिए हे धनी! मैं अकेली हूं। मुझे दूसरी नहीं मिली जो आपके धाम का दरवाजा खोलकर मेरी इच्छा पूरी करे।

पिरम हांणे पांण विचमें, तूंहीं आइए तूं।
से तूं जांणे सभ कीं, हे तो सुध डिंनी मूं।। २९ ।।

हे मेरे धनी! अब मेरे और आपके बीच केवल आप ही हैं। यह सब खबर आपने मुझे दे दी है। यह सब बातें आप जानते हैं।

धणी तूं पसे थो पांणई, अने कुछाइए थो पांण।
जा करे गाल रे इस्क, सा दानाई सभ अजांण।। ३० ।।

हे धनी! आप स्वयं देखते हो और मुझसे कहलवाते हो। जो अंगना बिना इश्क के बात करे वह उसकी अज्ञानता की चतुराई है।

दम में चुआं आंऊं हेकली, दम में गडजिम बेई।
दम में मेडो रूहन जो, न्हारियां थी त्रेई।। ३१ ।।

एक क्षण में मैं कहती हूं कि मैं अकेली हूं। उसी क्षण में मैं कहती हूं कि मुझे दोनों मिलीं। क्षण में कहती हूं कि मुझे रूहें मिलीं और तीसरी शाकुमार को खोज रही हूं।

दम में आंऊं बाझाइंदी, दम में हित नाहियां।
दम में भाइयां मूर थी, तोके थीराइयां।। ३२ ।।

क्षण में मैं कलपती हूं और पल में विचारती हूं कि मैं यहां हूं नहीं। पल में जानती हूं कि परमधाम में आप ही केवल हमारे हैं।

फिरी पसां जा पाण अडां, त करियां कांध से दानाई।
तडे अची लिकां थी तो तरे, चुआंए डिंनी धणीजी आई।। ३३ ।।

फिर मैं अपनी तरफ देखती हूं तो लगता है कि मैं अपने पति से चतुराई कर रही हूं। जब छिपकर आपकी तरफ विचार करती हूं तो कहती हूं कि धनी की ही यह माया है।

Nijanand App

धणी मूंजी गालिनजी, से सभ तो के आए जांण।
अव्वल विच आखिर लग, तो डिंनो अचे पांण।। ३४ ।।

हे मेरे धनी! मेरी और आपकी बातें आपको सब मालूम हैं। शुरू की, बीच की और आखिर की सभी बातें आपकी दी हुई मुझे मिली हैं।

हे तो डिंन्यू पांणई, गाल्यूं मूंके करण।
पण जासीं डिए न इस्क, दर खुले न रे वरण।। ३५ ।।

यह तो आपने स्वयं ही मुझे दी हैं, ताकि आप मेरे से बातें कर सकें। जब तक आप इश्क नहीं देंगे, हे प्रीतम! आपके बिना परमधाम के दरवाजे नहीं खुलेंगे।

ईं हाल डिंने धणी मूंहके, जीं गभुराणी मत।
जां तो इस्क न आइयो, तां कुछां थी सो भत।। ३६ ।।

धनी! आपने मेरी ऐसी हालत कर दी है जैसे एक बालक की बुद्धि होती है। जब तक आपका इश्क नहीं आ जाता, तब तक इसी तरीके से बोलती हूं।

मांठ करे पण न सगां, बंधां जा बोले।
सभ जाणे थो रूहजी, चुआं कुजाडो दिल खोले।। ३७ ।।

चुप भी नहीं रह सकी। बोलती हूं तो बंध जाती हूं। मेरी आत्मा की सब बातें आप जानते हो। आगे दिल खोलकर मैं क्या बताऊं?

बेओ को न पसां कितईं, सभ अंग तांणीन तो अडूं।
जे हाल पुजाइए पुंनिस, हांणे को न करिए हेकली मूं।। ३८ ।।

दूसरे किसी को मैंने कहीं देखा ही नहीं। मेरे सभी अंग आपकी तरफ खींचते हैं। जिस हालत में आपने मुझे पहुंचाया है, उस हालत में अब मुझे अकेली क्यों नहीं कर देते?

जे तूं करिए हेकली, भाइए गडजां आंऊं।
से तां तोहिजी सिखाइल, त पाइयां थी धांऊं।। ३९ ।।

यदि आप मुझे अकेला कर दें, तो लगता है मैं आकर आपसे मिल जाऊंगी। यह मैं आपकी सिखाई बात बोल रही हूं, इसलिए पुकार-पुकार के कहती हूं।

हे जे कराईयूं गालियूं, एही कौल फैल जे हाल।
हिन मजलके ओडडी, मूंके केइए नूरजमाल।। ४० ।।

यहां जो आपने बातें कराई हैं, मेरी सभी कहनी, करनी और रहनी से मंजिल नजदीक दिखाई देती है। यह कृपा भी आपने मेरे ऊपर की है।

पिरी डिए थो जे दिलमें, सा माधाई करियां पुकार।
से सभ तूंही कराइए, तो हथ कारगुजार।। ४१ ।।

हे धनी! जो बात आप मेरे दिल में पैदा करा देते हो, वह मैं पहले से ही मांगने लगती हूं। सब कुछ आपके हाथ में है और आप ही सब कुछ कराते हैं।

Nijanand App

लाड कोड आसां उमेदूं, रूहें सभ दिलमें आईन।
पण तूं जे ताणिए पांण अडूं, त तोके ए भाईन॥४२॥

हमारे लाड़, प्यार, आशा, उम्मीदों की चाहना रूहों के दिल में है। अब यदि आप अपनी तरफ खींचो तो यह आपको जानें।

हे गाल न मूंजे हथमें, जे कीं करिए से तूं।
तांजे तूं न खेंचिए, त हे रंज सभे मूं॥४३॥

यह बात मेरे हाथ में नहीं है। जो भी करते हो आप ही करते हो। यदि रूहों को आप अपनी तरफ नहीं बुलाते, तो इसका दुःख मुझे जरूर है।

बेओ कित न जरे जेतरो, सभ हथ तोहिजे हुकम।
जे तिर जेतरी मूं दिल में, सभ जाणे थो पिरम॥४४॥

दूसरा कोई कहीं कुछ भी नहीं है। सब कुछ आपके हुकम के हाथ में है। मेरे दिल में थोड़ी बहुत जो बात है उसे भी, हे प्रीतम! आप जानते हो।

कडे कंदासो डींहडो, अस्सां रूहें जो संग।
हे हुज्जतूं करियां लाड में, जीं साफ थिए मूं अंग॥४५॥

हे धनी! वह दिन अब कब दिखाओगे जब हम रूहें आपके साथ होंगी। मैं प्यार भी इसलिए करती हूं, जिससे मेरे अंगों से माया छूट जाए।

दिलमें तूं उपाइए, मंगाइए पण तूं।
मूंजी रूह के गालियूं, जे मिठ्यूं सुणाइए मूं॥४६॥

दिल में आप इच्छा पैदा कराते हो, फिर मंगवाते हो। मेरी रूह को मीठी बातें आप सुनाओ।

तूं चाइए कर सुणाइए, सभ उमेदूं तो हथ।
धणी मूंहजे धामजा, तूं सभनी गालें समरथ॥४७॥

जो आपको अच्छा लगे वही सुनाइए। मेरी सब उम्मीदें आपके हाथ में हैं। हे मेरे धाम के धनी! आप सब तरह से समर्थ हैं।

मूं चयो भूं आसमान विच, आंऊं हेकली आइयां।
जीं न अचे दिलमें खतरो, से माथाई थी लाहियां॥४८॥

मैंने आपसे कहा है कि यहां जमीन और आसमान के बीच में मैं अकेली हूं। दिल में कोई खतरा न उत्पन्न हो, उस डर को मैं पहले ही मिटा देती हूं।

बियूं रूहें हिन अर्सज्यूं, से तां आजिज पाणे।
हे मंझ रूअन रातो-डीहां, मूंजी रूहडी थी जांणे॥४९॥

परमधाम की दूसरी रूहें तो गरीब हैं। वह मेरे पास इस माया में रात-दिन आकर रोती हैं, जिसको मेरी आत्मा जानती है।

Nijanand App

जे आंऊं न्हारियां रूहन अड्डं, पसी इंनी जो हाल।
रूअन अचे मूंह के, से तूं जांणे नूरजमाल।। ५० ।।

जब इनकी तरफ इनका हाल देखती हूं तो मुझे भी रोना आ जाता है। इस बात को, हे धनी! आप अच्छी तरह जानते हैं।

आंऊं बी बट भाइयां तिनके, जा उपटे अर्स दर।
कांध लाड पारनज्यूं, मूंके डे खबर।। ५१ ।।

मैं इनको अपने से दूसरा समझती हूं। यदि आप इनके लिए दरवाजा खोल दो, तो हे राजजी महाराज! मेरे प्यार पूरे करने के वास्ते मुझे भी सूचित कर देना।

त कीं चुआं बी तिनके, जे मूं अडां पसी रोए।
त चुआं थी हेकली, मूं बट बी न कोए।। ५२ ।।

मैं इनको दूसरा कैसे कहूं जो मेरी तरफ देखकर रोती हैं। इसलिए मैं कहती हूं कि मैं अकेली हूं। मेरे पास दूसरी कोई नहीं है।

पसां बाझाईंद्यूं हिनके, मूं अचे बाझाण।
ईं दर ओडी कांध अड्डं, थेयम बधंदी तांण।। ५३ ।।

मैं इनको रोता देखती हूं तो मुझे भी रोना आ जाता है। इस प्रकार आपकी ओर मैं खिंची चली आती हूं।

हे सभ मेहेर धणीयजी, डिए थो रूह अन्दर।
हे पण आइम भरोसो कांध जो, जीं जाणे तीं कर।। ५४ ।।

हे धनी! यह सब आपकी ही मेहर है, जो आप मेरी रूह पर करते हो। इतने पर भी धनी मुझे भरोसा आपका है। जैसे जानो तैसे करो।

जे मूं करिए हेकली, विच आसमाने भूं।
जे आंऊं पसां पांणके हेकली, से सभ करिए थो तूं।। ५५ ।।

यदि आप मुझे आसमान और जमीन के बीच में अकेला कर दें तो मैं आपकी तरफ अकेली देखूं। यह सब आप ही कर सकते हैं।

जे तूं जगाइए इलम से, त पसां थी हेकली पांण।
जे की करिए संग लाडजो, त थीयम तो अड्डं ताण।। ५६ ।।

जब आप इलम से जगा देते हैं, तो मैं अपने को अकेला पाती हूं। यदि आप मेरे से प्यार करते हैं, तो मैं आपकी तरफ खिंची चली आती हूं।

करे हेकली गडजे, सभ तोहिजे हथ धणी।
मूं चेयूं उमेदूं वडियूं, जे तूं न्हारिए नैण खणी।। ५७ ।।

मुझे अकेला करके मिलो। यह सब आपके हाथ में है। आप नजर उठाकर देखें तो मेरी बड़ी-बड़ी चाहना है।

Nijanand App

बेई कित न जरे जेतरी, कांए न रखिए गाल।
हे तेहेकीक मूंजी रूहके, केइए नूरजमाल।। ५८ ।।

दूसरी बात जरा सी कहीं भी कुछ नहीं है। यह बात मेरी रूह को श्री राजजी महाराज नूरजमाल ने निश्चित करा दी है।

चुआं थी रुह मूंहजी, से पण आइम भूल।
मूंजी आंऊं त चुआं, जे हुआं विच अर्स असल।। ५९ ।।

मेरी रूह कहती है ऐसा कहना भी भूल है। मैं तो तभी कह सकती हूं जब मैं अखण्ड परमधाम में हूंगी।

हित न्हाए विच बेही करे, आंऊं की चुआं मूके पांण।
केई थेई सभ तोहिजी, से सभ तोके आए जांण।। ६० ।।

ऐसे झूठे संसार में बैठकर मैं अपने आपको कैसे कहूं? यहां सब कुछ करना कराना आपके हाथ है। यह सब आपको पता है।

हे पण गाल्यूं लाडज्यूं, करिए थो सभ तूं।
तो रे तोहिजी गालिनजी, दम न निकरे मूं।। ६१ ।।

यह भी बातें प्यार की हैं जो आप कर रहे हैं। आपके बिना आपकी बातों का मैं दम नहीं भर सकती।

आसां उमेदूं जे हुज्जतूं, सभ तूंहीं उपाइए।
मूंजे मोंहें तेतरी निकरे, जेतरी तूं चाइए।। ६२ ।।

हमारे अन्दर हमारी सभी चाहना आप ही उत्पन्न कराते हैं। मेरे मुंह से उतनी ही बात निकलती है, जितनी आप कहलवाते हो।

चई चई चुआं केतरो, सभ दिलजी तूं जाणे।
तो रे आइयां हेकली, सभ जाणे थो पांणे।। ६३ ।।

कह-कहकर मैं कितना कहूं? दिल की बात सब आप जानते हैं। आपके बिना मैं अकेली हूं। यह बात भी आप जानते हैं।

महामत चोए मेहेबूबजी, हे डिंनी तो लगाए।
तूं जागे अर्सी निद्रमें, जाणे तींय जगाए।। ६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! यह माया तो आपने लगा दी। आप जाग रहे हैं। मैं नींद में सोई हूं, इसलिए जैसे जगा सकते हो, वैसे जगाओ।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १९३ ॥

रूहन जो फैल हाल

धणी मूंहजी रूहजा, गाल करियां कोड करे।
आंईंन उमेदूं लाडज्यूं, अची करियां गरे।। १ ।।

हे मेरे धाम के धनी! मैं आपके साथ प्यार से खुश होकर बातें करती हूं कि मेरे अन्दर प्यार की बड़ी चाहना है जो घर में आकर पूरी करूंगी।

Nijanand App

रूहें बिहारे रांद में, पाण बेठा परडेह।
सुध न्हाए के रूह के, रांद न अचे छेह।। २ ।।

रूहों को खेल में बिठा रखा है और आप परदेश में बैठे हो। हम रूहों को जरा भी होश नहीं है, क्योंकि खेल का किनारा ही नहीं मिलता।

अस्सां मथें आइयो, पिरियन जो फुरमान।
मूक्यो आं रसूल के, डियन रूहन जाण।। ३ ।।

हमारे ऊपर आपने कुरान भेजा और रसूल को भेजा कि रूहों को जाकर बता दो।

लिख्यो आं फुरमान में, रमूजें इसारत।
भत्ती भत्ती ज्यूं गालियूं, सभ अर्सजी हकीकत।। ४ ।।

आपने कुरान में रमूजें (रम्जें) और इशारतें लिखी हैं। तरह-तरह की बातों में परमधाम की सब हकीकत लिखी है।

तो चेयो रसूल के, तूं थीयज हुनमें अमीन।
डिज तूं मूर निसानियूं, जीं अचे रूहें आकीन।। ५ ।।

आपने रसूल से कहा कि आप खेल में जाकर रूहों में सिरदारी करना और परमधाम के सब निशान बताना, ताकि रूहों को यकीन आ जाए।

रूहें लग्यूं जडे रांद में, विसर वेओ घर।
आसमान जिमी जे विच में, अर्स बका न के खबर।। ६ ।।

रूहें जब खेल में मग्न हो गई हैं, तो उन्हें अपना घर भूल गया है। आसमान और जमीन के बीच किसी को भी अखण्ड घर की सुध नहीं है।

तडे मूकियां रूह पांहिजी, जा असांजी सिरदार।
कुंजी मूकियां अर्स जी, उपटन बका द्वार।। ७ ।।

तब आपने बड़ी रूह श्री श्यामाजी जो हमारे सिरदार हैं, को भेजा और परमधाम के दरवाजे खोलने के लिए तारतम ज्ञान की कुंजी भेजी।

रूहें पसी मूं द्रियूं, रई न सगे रे रांद।
कां न विचारे पांण के, मूं सिर केहो कांध।। ८ ।।

रूहों को देखकर मैं डर गई कि यह खेल के बिना नहीं रह सकतीं। यह कोई भी विचार नहीं करतीं कि मेरे धनी श्री राजजी महाराज हैं।

वडी-रूह रूहन के, चई समझाईन।
पाण न्हायूं हिन रांदज्यूं, घर बकामें आईन।। ९ ।।

बड़ी रूह श्री श्यामाजी ने भी रूहों को कई तरह से समझाया कि हम खेल के नहीं हैं। अपना घर परमधाम है।

Nijanand App

कई केयांऊं रांदज्यूं गालियूं, समझन के सौ भत।
कांधे मूकी मूंके कोठण, जांणी आंजी निसबत।। १० ।।

उन्होंने कई तरह की खेल की बातें बताईं और सौ तरह से समझाया। श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर मुझे तुम्हें बुलाने को भेजा है।

वडी रूह चोए आं कारण, मूं हेडो केयो पंध।
लखे भतें समझाइयूं, पण हियो न अचे हंद।। ११ ।।

बड़ी रूह श्री श्यामाजी ने कहा कि मैंने तुम्हारे वास्ते इतना लम्बा रास्ता पार किया है। उन्होंने लाखों तरह से समझाया, परन्तु घर का ठिकाना हृदय में आता ही नहीं है।

आंऊं आइस आंके कोठण, उपटे बका दर।
आसमान जिमी जे विच में, जा के के न्हाए खबर।। १२ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं कि मैं तुम्हें बुलाने के वास्ते आई हूं। परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं, जिनकी जानकारी दुनियां के आसमान और जमीन के बीच किसी को नहीं है।

वडी वडाई आंजी, पसो केहेडो पांहिजो घर।
हे कूडा कूडी रांदमें, छडे कायम वर।। १३ ।।

तुम्हारी बड़ी भारी साहिबी है। देखो, अपना घर कैसा सुन्दर है। इस झूठे खेल में हम मग्न हो गए हैं और अपने अखण्ड धनी को छोड़ दिया है।

कई करे रांदज्यूं गालियूं, फिरी फिरी फना दुख।
पांहिजा कायम अर्सजा, कई कोडी डेखारयाई सुख।। १४ ।

उन्होंने कई तरह से खेल की बातें बताईं। संसार के दुःख बताए और अपने घर अखण्ड परमधाम के करोड़ों सुख दिखलाए।

तोहे रूहें न छडीन रांदके, कां निद्रडी लगाई हिन।
कडे थी न हेडी फकडी, मथां हिन रूहन।। १५ ।।

फिर भी रूहें खेल को नहीं छोड़ती हैं। ऐसी माया (नींद) लगा दी है। रूहों के ऊपर ऐसी हंसी पहले कभी नहीं हुई।

आंऊं पुकारियां इंनी कारण, पण इंनी केहो डो।
आऊं पण बंधिस रांदमें, करियां कुजाडो।। १६ ।।

मैं इनके वास्ते ही पुकार करती हूं, परन्तु इनका दोष भी क्या है? मैं भी खेल में आकर बंध गई हूं। अब क्या करूं?

हिक लधिम गाल पिरनजी, चुआं सभे जेडिन।
जा लगाइल हिन हक जी, सा न छुटे पर किन।। १७ ।।

प्रीतम की एक बात मैंने पाई। वही सब सखियों को कहती फिरती हूं कि जो माया श्री राजजी महाराज ने स्वयं लगाई है, वह किसी और से नहीं छूटेगी।

Nijanand App

मूं उमेदूं पिरनज्यूं, लधिम भली पर।
सुयम मोहां सजणे, जो खिलवत थी घर।। १८ ।।

मुझे अपने प्रीतम से बड़ी उम्मीदें हैं, जो अच्छी तरह से पूरी हुईं। वह सब मैंने अपने धनी के मुखारबिन्द से सुनीं, जो मूल-मिलावा में बातें हुई थीं।

परूडिम पिरन जी, हे जा डेखारयाई रांद।
अस्सां मथें खिल्लण, केइए कुडन के कांध।। १९ ।।

मैंने अपने प्रीतम की बात को समझा कि उन्होंने हमें खेल क्यों दिखाया? फिर पहचाना कि हमारे ऊपर हंसी करने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने ऐसा किया है।

इस्क धणी जे दिल जो, पेरो न लधों पांण।
त डेखारयाई रांदमें, इस्कजी पेहेचान।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के चित्त की हकीकत (इश्क) को पहले मैंने नहीं जाना था, इसलिए श्री राजजी महाराज ने इश्क की पहचान खेल दिखाकर कराई।

मूं तेहेकीक आयो दिलमें, अगरो धणी इस्क।
डिठम अर्स खिलवतमें, सा रही न जरो सक।। २१ ।।

अब मेरे दिल में निश्चित हो गया कि धनी का इश्क बड़ा है। मूल-मिलावा में जो देखा था उसमें जरा भी संशय नहीं रहा।

मूं उमेदूं दिलमें, धणी से धारण।
को न होन उमेदूं धणी के, मूंजा लाड पारण।। २२ ।।

मेरे दिल में धनी से कुछ मांगने की चाहना थी, तो फिर हे धनी! आपके दिल में हमारे लाड़ पूरे करने की इच्छा क्यों नहीं पैदा होती?

तरसे दिल मूंहजो, जाणे कडे धणी पस्सां।
त कीं न हून कांध के, मिडन उमेदूं अस्सां।। २३ ।।

मेरा दिल तड़प रहा है कि कब धनी को देखूं, तो हे धनी! आपके दिल के अन्दर हमसे मिलने की चाहना क्यों नहीं होती?

दिल थिए मिडन धणीयसे, जे मूं इस्क न हंड।
कांध पूरे इस्कसे, तिन आए सौ गणी चड।। २४ ।।

हमारे दिल में यहां कुछ भी इश्क नहीं है। पर धनी से मिलने की चाहना होती है। फिर श्री राजजी महाराज तो इश्क से भरपूर हैं। उनकी चाहना तो सौ गुना अधिक होनी चाहिए।

पण हे गाल्यूं आईन रांदज्यूं, ते मूंके सिकाइए।
पांण इस्क डेखारे लाडमें, मूंके कुडाइए।। २५ ।।

परन्तु यह बातें सब खेल की हैं, इसलिए आप मुझे तरसा रहे हो और बड़े लाड़ से आप अपना इश्क दिखाकर मुझे कुढ़ा रहे हो।

Nijanand App

मूं उमेदूं दिल में, धणी ज्यूं गडजण।
लाड पारण असांहिजा, आईन अगरयूं सजंण।। २६ ।।

मेरे दिल में धनी से मिलने की चाहना है। मेरे लाड़-प्यार पूरा करने के लिए आपके दिल में मिलने की चाहना मेरे से अधिक होनी चाहिए।

अंईं सुणेजा जेडियूं, चुआं इस्क जी गाल।
हे सुध न अस्सां अर्स में, धणी केहडी साहेबी कमाल।। २७ ।।

हे सखियों! तुम सुनो मैं तुम्हें इश्क की बात कहती हूं, परमधाम में हमारे धनी की साहेबी कितनी कमाल की हैं यह सुध हमें नहीं थी।

न सुध केहडो कादर, न सुध केहडी कुदरत।
न सुध अर्स कायम जी, न सुध हक निसबत।। २८ ।।

हमें इतनी भी खबर नहीं थी कि आप कितने सामर्थ्य वाले हो और कितनी समर्थ आपकी माया है। न हमें अखण्ड घर की सुध थी और न ही यह पहचान ही थी कि मैं आपकी अंगना हूं।

सुध न सुख कांधजा, सुध न धणी इस्क।
सुध न अस्सां लाडजी, केहडा पारे हक।। २९ ।।

हमें धनी के आनन्द की और इश्क की खबर नहीं थी। हमें यह भी पता नहीं था कि हमारे लाड़-प्यार को श्री राजजी महाराज कैसे पूरा करते हैं?

सुध न आसा उमेद, सुध न प्रेम प्रीत।
सुध न अर्स अरवाहों के, धणी रखियूं केही रीत।। ३० ।।

हमें आशा उम्मीद, प्रेम, प्रीति की सुध नहीं थी। यह भी सुध नहीं थी कि हम परमधाम की रूहों को श्री राजजी महाराज कैसे रखते हैं?

हे जे हितरूं गालियूं, केयूं इस्क जे कारण।
लाड कोड आसा उमेदूं, रूहन ज्यूं पारण।। ३१ ।।

यह जो मैंने इतनी बातें की हैं, इश्क के वास्ते ही की हैं। हम रूहों के लाड़, प्यार, आशा, उम्मीद, खुशी पूरी करने के वास्ते ही यह खेल किया है।

जेहेडो धणी पांहिजो, तेहेडी तेहजी रांद।
लाड कोड इस्क जा, तेहेडाई पारे कांध।। ३२ ।।

जैसे मेरे धनी हैं वैसे ही उनका खेल है। हमारे लाड़, प्यार, खुशी, इश्क को इसी तरह से श्री राजजी पूरा करते हैं।

बडी गाल धणीयजी, लगी मथे आसमान।
आंऊं रे पाणी भूं सूकीयमें, खाधिंम डुब्यूं पांण।। ३३ ।।

श्री राजजी की बात बड़ी है जो आसमान तक गई है। मैं इस बिना पानी के सूखी जमीन में डुबकियां लगा रही हूं।

Nijanand App

जा सहूर करियां रूह से, त निपट गरई गाल।
चुआं हित हिन मूंह से, मूंजो खसम नूरजमाल।। ३४ ।।

यदि अपनी रूह से विचार करके देखती हूं तो यह बात भारी है। खेल में अपने मुंह से कहती हूं कि नूरजमाल श्री राजजी महाराज मेरे स्वामी हैं।

अंई गाल सुणेजा जेडियूं, मूं चरई ज्यूं चंगी भत।
गाल कंदे फटी न मरां, जे कांध से निसबत।। ३५ ।।

हे सखियों! तुम मुझ दिवानी की बात अच्छी तरह सुनो, यह बात करते मैं फटकर मर क्यों नहीं जाती कि मेरा किस धनी से सम्बन्ध है।

लाड कोड आसा उमेदूं, आंऊं चुआं मूं माफक।
पारण वारो मूं धणी, कायम अर्स जो हक।। ३६ ।।

लाड़, प्यार, आशा, उम्मीद मैं अपने अनुसार ही कहती हूं। अखण्ड परमधाम के जो श्री राजजी महाराज हैं, वही इसको पूरा करने वाले हैं।

जे आंईं गाल विचारियो, रूहें मेडो करे।
त रही न सगों किएं रांदमें, हे कूडा वजूद धरे।। ३७ ।।

हे रूहो! यदि सब मिलकर इस बात को विचार करो तो इस संसार में झूठा तन धारण करके हम रह नहीं सकते।

सहूर डियण मूं हियो, कठण केयांऊं निपट।
न तां विचार कंदे हिक हरफजो, फटी पोए न उफट।। ३८ ।।

मैंने यह समझने के लिए ही अपने दिल को कठोर किया है, वरना एक अक्षर का विचार करते ही मैं पटाखे के समान फूट जाती (मर जाती)।

सभ अंग डिंनाऊं कठण, त रह्यो वंजे आकार।
न तां सुणी विचारी हे गालियूं, कीं रहे कांधा धार।। ३९ ।।

आपने हमारे सभी अंगों को कठोर बना दिया है? इसलिए शरीर खड़ा है, वरना इन बातों को सुनकर विचार कर धनी आपके बिना कैसे रहा जा सकता है?

इलम डिंनाऊं पांहिजो, मय निपट वडो विचार।
बका न चौडे तबकें, से डिंनो उपटे द्वार।। ४० ।।

आपने अपना ज्ञान दिया जिसमें बड़ा सार भरा है। अखण्ड परमधाम की खबर चौदह लोकों को नहीं है, जिसके दरवाजे आपके ज्ञान ने खोल दिए हैं।

विहारे ते विचमें, जो बका वतन।
करे निसबत हिन कांध से, असल कायम रूह तन।। ४१ ।।

अखण्ड परमधाम में मूल-मिलावा में जहां हमारी परआतम है, आपने हमें बिठा दिया और अपना सम्बन्ध बता दिया।

Nijanand App

हे इलम एहेडो आइयो, सभ दिल जी पूरण करे।
डेई इस्क मेडे कांध से, घर पुजाए नूर परे।।४२।।

यह आपका तारतम ज्ञान ऐसा है, जो दिल की सभी चाहनाएं पूरी करता है। यह इश्क देकर पति से मिलवाता है और अक्षर पार अक्षरातीत धाम में पहुंचाता है।

रुहें पांण न विचारियूं, हिन इलम संदो हक।
से कीं न करे पूरी उमेद, जे में न्हाए सक।।४३।।

हे रूहो! हमने इस बात का विचार नहीं किया, कि श्री राजजी महाराज का यह संशय मिटाने वाला ज्ञान है, तो हमारी चाहनाएं क्यों पूरी नहीं करता?

धणी पांहिजो पांण के, विचारण न डे।
के के डींह हिन रांद में, करे थो रखण के।।४४।।

अपने धनी हमे विचार ही नहीं करने दे रहे हैं। वह कुछ दिन खेल में रखना चाहते हैं।

मूंके अकल न इस्क, से पट खोल्याई पांण।
उघाड्यूं अंख्यूं रूहज्यूं, थेयम सभे सुजाण।।४५।।

मुझे न अक्ल थी, न इश्क था। मेरी रूह की आंखों को श्री राजजी ने ही खोला, जिससे मुझे सारी जानकारी मिली।

न तां केर आंऊं केर इलम, आंऊं हुइस के हाल।
पुजाइए हिन मजलके, मूं धणी नूरजमाल।।४६।।

नहीं तो मैं कौन हूं, यह इलम क्या है, मेरी हालत क्या है और मुझे इस सीमा तक श्री राजजी महाराज ने कैसे पहुंचाया, की जानकारी नहीं थी।

आंऊं हुइस कबीले के घर, ही गंदो वजूद धरे।
थेयम धणी नूरजमाल घर, जे दर नूर अचे मुजरे।।४७।।

मैं झूठे कुटुम्ब, परिवार में गन्दा शरीर धारण करके बैठी थी। मेरे पति श्री राजजी महाराज हैं, जो अखण्ड घर के मालिक हैं, जिनके दरवाजे पर अक्षरब्रह्म दर्शन करने आते हैं।

बाहेर मंझ अंतर, सभनी हंदे इस्क।
रूहअल्ला डिखारई, वडी दोस्ती हक।।४८।।

परमधाम में बाहर-अन्दर सब जगह इश्क भरा है। श्री श्यामाजी महारानी ने हमारी श्री राजजी महाराज से पक्की दोस्ती की खबर भी दी।

मूं फिराक हिन धणी जो, मूंआं अगरो हिन धणी के।
आंऊं बेठिस धणी नजर में, सिधी न गडजां ते।।४९।।

मेरी धनी से जुदाई, धनी की जुदाई रूहो से ज्यादा है। मैं उनकी नजर के सामने बैठी हूं, परन्तु उनसे मिल नहीं सकती।

Nijanand App

मूं फिराक धणी न सहे, मूंके बिहारयाई तरे कदम।
धणी पांहिजी रूहन रे, रही न सके हिक दम॥५०॥

मेरा वियोग धनी सहन नहीं कर सकते, इसलिए उन्होंने चरणों के तले बिठा रखा है। मेरे धनी अपनी रूहों के बिना एक पल नहीं रह सकते।

मूं धणी रे घारई, मूंजी सभ उमर।
इस्क धणी या मूंह जो, पस जा पटंतर॥५१॥

मैंने धनी के बिना ही अपनी सारी उम्र बिता दी। अब धनी के इश्क का और मेरे इश्क का अन्तर आप स्वयं समझ लो।

महामत चोए मेहेबूब जी, अस्सां इस्क बेवरो ईं।
मूंजे आंजे दिल जी, आंऊं कंदिस अर्ज बेई॥५२॥

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! हमारे इश्क का तो यही विवरण है। अब मैं आपके दिल का और अपने दिल का दूसरी तरह से विवरण करती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ २४५ ॥

झगडे जो प्रकरण

वलहा जे आंऊं तोके वलही, गिंनी बिठे तरे कदम।
हे मूं दिल डिंनी साहेदी, तूं मूं रे रहे न दम॥१॥

हे मेरे प्रीतम! मैं आपको प्यारी हूं। आपने मुझे अपने चरणों तले बिठा रखा है। यह मन गवाही देता है कि आप मेरे बिना एक पल भी नहीं रह सकते।

डिंनी बी साहेदी इलम, त्री तोहिजे इस्क।
चौथी साहेदी रसूल, बियूं कई साहेदियूं हक॥२॥

दूसरी गवाही आपके इलम से मिली। तीसरी गवाही आपके इश्क से मिली। चौथी गवाही रसूल साहब से मिली और भी कई गवाहियां मिलीं।

तोहिजे इलमें मूंके ईं चयो, ही रांद केई आं कारण।
लाड कोड आसां उमेदूं, से सभेई पारण॥३॥

आपके इलम ने मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। प्यार हर्ष, आशा, उम्मीद सब तुम्हारी पूरी की जाएंगी।

बेई न जरे जेतरी, तोहिजे दिलमें गाल।
लाड उमेदूं रूह दिलज्यूं, से तूं पूरे नूरजमाल॥४॥

आपके दिल में इसके अतिरिक्त और कोई जरा सी भी बात नहीं है कि रूहों के दिल की चाहना आप श्री राजजी महाराज पूरी करते हैं।

हे चियम तिर जेतरी, आईन अलेखे अपार।
अस्सां सिकण रहे के गालजी, सभ तूंही करणहार॥५॥

यह तो मैंने तिल जितनी कही है। हमारी इच्छाएं बेशुमार हैं। हमारी किसी बात की इच्छा बाकी कैसे रह जाए, जब सब कुछ आप करने वाले हैं?

Nijanand App

कांध डे तूं हे पडूत्तर, हिन रांदमें बेही।
न तां वडा लाड मूंहजा, कीं पारीने सेई।। ६ ।।

हे श्री राजजी महाराज! मुझे उत्तर दो कि इस खेल में बिठाकर के हमारी चाहना कैसे पूरी करोगे?

हइयूं आसा उमेदूं वडियूं, से थक्यूं विच हित।
मूं अडां पसो न सुणो गालडी, हांणे आंऊं चुआं के भत।। ७ ।।

हमारी बड़ी-बड़ी आशा और उम्मीदे हैं। आप इतने में ही थक गए। आप मेरी तरफ न देखते हो, न मेरी बात सुनते हो। अब किस तरह से आपसे कहूं?

तूं कीं पारीने वडियूं, जे हितरी न थिए तोह।
फिरी फिरी मंगाए न डिए, हे के सिर डियां डोह।। ८ ।।

जब आप इतना ही नहीं कर सकते तो हमारी बड़ी-बड़ी चाहना कैसे पूरी करोगे? बार-बारं मांगने पर भी नहीं देते हो, तो यह दोष किसे दूं?

हिक मंगां दीदार तोहिजो, बी मिठडी गाल सुणाए।
कांध मूंहजा दिल डेई, मूसे हित गालाए।। ९ ।।

एक तो मैं आपका दर्शन चाहती हूं। दूसरी आप मीठी-मीठी बातें सुनाओ। हे श्री राजजी महाराज! मुझे दिल देकर यहां आकर बातें करो।

हांणे वड्यूं उमेदूं अगियां, कीं पूरयूं कंने कांध।
हांणे पेरे लगी मंगां एतरो, पाए गिचीमें पांध।। १० ।।

मेरी बड़ी-बड़ी इच्छाएं हैं। वह आप कैसे पूरी करोगे? अब आपके चरण पकड़कर गले में कपड़ा डालकर भिखारी की तरह मांग रही हूं।

हे गाल आए थोरडी, कीं हेडी वडी केइए।
आंऊं कडीं न रहां दम तोंरे, से विसरी कीं वेइए।। ११ ।।

यह बात बहुत छोटी सी है। आपने इसे क्यों इतना भारी कर दिया? मैं कभी भी आपसे एक पल भी अलग नहीं रह सकती। इस बात को क्यों भूल जाते हो?

मूंके कुछाइए निद्रमें, तूं पाण जागे थो।
जे बांझाइए मूं वलहा, त तो इस्क अचे डो।। १२ ।।

आप मुझे फरामोशी में बुलवाते हो, परन्तु आप तो जागते हो। हे मेरे धनी! आप मुझे कलपाते हो, तो आपके इश्क को दोष लगता है।

तूं भाइयूं बेठ्यूं मूं कंने, माधा मूं नजर।
जे दिल हिनीजा न्हारिए, त हे विलखे थ्यूं रे वर।। १३ ।।

आप जानते हैं कि मेरी रूहें मेरी नजर के सामने ही तो बैठी हैं, परन्तु इनके दिल की तरफ देखो तो यह सब पति के वियोग में रो रही हैं।

Nijanand App

हिक लेखे मूं न्हारियो, मूं न्हाए गुन्हे जो पार।
त रूसी रहे मूंसे वलहो, मूंके करे गुन्हेगार।। १४ ।।

एक हिसाब से मैंने देखा तो पता चला कि मेरे गुनाह बेहिसाब हैं, इसलिए मुझे गुनहगार बनाकर आप मुझसे रूठ गए हो।

अंईं विचारे न्हारजा, आंहिजे मूंहजा वैण।
तांजे असी विसरयां, त पण आंहिजा सैण।। १५ ।।

आप हमारे और अपने वचनों का विचार करो। कदाचित् हम भूल भी गए हैं, तो भी आप हमारे पति हैं।

मूंके इलम डेई पांहिजो, केइए खबरदार।
से न्हारिम जडे सहूरसे, त कांध आंऊं न गुन्हेगार।। १६ ।।

मुझे आपने अपना इलम देकर सावचेत (सतर्क) कर दिया है। मैं ध्यान से देखती हूं। हे मेरे धनी! मैं गुनहगार नहीं हूं।

धणी तो डिंनी निद्रडी, ते विसरया सभ कीं।
जीं नचाए तीं नचियूं, कुरो करियूं अस्सीं।। १७ ।।

धनी आपने मुझे फरामोशी दी। इससे हम सब कुछ भूल गए। अब आप जैसा नचाओगे वैसा ही नाचेंगे। अब हम क्या करें?

अस्सां इस्क निद्रडी विसारियो, अची मय हिन रांद।
इस्क तोहिजो डिखारियो, पस मूंहजा कांध।। १८ ।।

हमारे इश्क को इस फरामोशी ने खेल में आने पर भुला दिया है और हे मेरे धनी! देखो, आपके इश्क की पहचान फरामोशी ने (इल्म से) करा दी है।

तनडा असांजा तो कंने, पण दिलडा असांजा कित।
से कीं फिकर न कर्‍यो, के हाल मूंहजो चित।। १९ ।।

हमारे तन आपके चरणों में हैं। दिल हमारा कहां है, इस बात की आप चिन्ता क्यों नहीं करते? हमारे दिल का क्या हाल हो रहा है?

डुखडा न डिसे आकार, दिलडा डुख पसंन।
से डुख डिसे दिल रांदमें, डुख न बकामें तन।। २० ।।

तन दुःख नहीं देखता। दुःख का अनुभव दिल में होता है। उस दुःख को हमारा दिल खेल में देख रहा है। परमधाम के तनों को कोई दुःख नहीं है।

दिल असांजा सोंणेमें, से था डुख पसंन।
से पसो था नजरों, जे गुजरे दिल रूहन।। २१ ।।

हमारा दिल सपने में है जो खेल देख रहा है। अब हम रूहों पर क्या बीत रही है, इसे आप अपनी नजर से देखते हो।

Nijanand App

डिंनी असांके निद्रडी, इस्क न रई सांजाए।
आं जागंदे प्यारयूं पांहिज्यूं, तो डिन्यूं कीं भुलाए।। २२ ।।

आपने हम रूहों को फरामोशी दे दी, जिससे हमें इश्क की पहचान नहीं रह गई। आपने जागृत होने पर भी अपनी प्यारी रूहों को क्यों भुला दिया?

डोह न अचे सुतडे, जागंदे मथें डोह।
असीं डुख डिसूं आं डिसंदे, कीं चोंजे आसिक सो।। २३ ।।

सोने वाले पर दोष नहीं आता। जागने वाले पर दोष आता है। हम आपके देखते हुए दु:ख देखें तो आप आशिक कैसे कहलाएंगे?

से कीं विचार न कर्‌यो, वडो आंजो इस्क।
मासूक केयां रूहन के, को न भजो असांजी सक।। २४ ।।

इसका विचार आप क्यों नहीं करते, क्योंकि आपका इश्क तो बड़ा है। आपने हम रूहों को माशूक कहा है। हमारे संशय क्यों नहीं मिटाते?

आसिक न्हारे नजरे, मासूक बेठो रोए।
हेडी कडे उलटी, आसिक से न होए।। २५ ।।

माशूक बैठा रोता रहे और आशिक खड़ा देखता रहे। ऐसी उलटी बात आशिक से कभी नहीं होती।

मूंजां लाड कोड पारणजा, आं सिर सभ मुद्दार।
डिए डोह असांके, जे अस्सां सुध न सार।। २६ ।।

हमारे प्यार और खुशी की चाहना पूरी करने की जिम्मेदारी आपकी है। दोष मुझे लगा रहे हैं जो बेसुध हैं।

मूंके इलमें चयो भली पेरे, कोए न्हाए डोह रूहन।
केयो थ्यो सभ कांध जो, असीं सभ मंझ इजन।। २७ ।।

तारतम वाणी ने मुझे अच्छी तरह से बता दिया है कि रूहों का कोई दोष नहीं है। यह सब करने वाले श्री राजजी महाराज हैं। हम सब तो आपके हुकम के अधीन हैं।

इस्क बंदगी या गुणा, से सभ हथ हुकम।
रांद कारिए निद्रमें, हित केहो डोह अस्सां खसम।। २८ ।।

इश्क हो, बन्दगी हो या गुनाह हो, यह सब आपके हुकम के हाथ में है। आप नींद में खेल दिखा रहे हैं। इसमें हमारा कैसा दोष?

बेसक डिंने इलम, जगाया दिल के।
इलम न पुज्जे रूहसी, सभ हथ हुकम जे।। २९ ।।

आपकी तारतम वाणी ने हमारे दिल को निश्चित रूप से जगा दिया है, परन्तु यह ज्ञान हमारी रूह तक नहीं पहुंचता। यह सब आपके हुकम की कारीगरी है।

Nijanand App

रूहसी पुजी न सगे, आयो न्हाएमें इलम।
जा सहूर करियां इलम, त हित जरो न रे हुकम॥ ३० ॥

इस झूठे संसार में आपकी तारतम वाणी आई है जो हमारी रूह तक नहीं पहुंचती। यदि इलम से सोचती हूं तो आपके हुकम के बिना यहां कुछ है ही नहीं।

जे कीं केयो से हुकमें, से हुकम आं हथ थेयो।
हिक जरो रे तो हुकमें, आए न कोए बेयो॥ ३१ ॥

यहां जो कुछ भी किया है, आपके हुकम ने किया है। हुकम आपके हाथ में है। यहां संसार में आपके हुकम के बिना दूसरा कुछ जरा भी नहीं है।

तो केयो से थेयो, तो केयो थिए थो।
थींदो से पण तो केयो, तो रे कित्त न को॥ ३२ ॥

आपने जो किया, वह हुआ। जो करते हो, सो होता है। जो करोगे, सो होगा। आप के बिना कहीं कोई नहीं है।

तेहेकीक मूं ईं बुझियो, मूंके बुझाई तो इलम।
थेयो थिएथो जे थींदो, से हल-चल सभ हुकम॥ ३३ ॥

यह मैंने अच्छी तरह समझ लिया है। आपके इलम ने अच्छी तरह समझा दिया है। जो हुआ है, जो होता है और जो होगा, वह सब आपके हुकम से है।

एहडो वडो मूं धणी, को न न्हारिए संभारे।
वैण सुणाइए वलहा, मूं सामों न्हारे॥ ३४ ॥

आप मेरे इतने बड़े धनी हैं, तो आप मुझे याद करके मेरी तरफ क्यों नहीं देखते? मेरी तरफ देखकर अपनी मीठी बातें क्यों नहीं सुनाते?

धणी को न कर्‍यो मूं दिलजी, आंऊं अटकां थी हिन गाल।
तूं पुजे सभनी गालिएं, आंऊं कीं तरसां हिन हाल॥ ३५ ॥

हे मेरे धनी! मेरे दिल की बातों को आप पूरा क्यों नहीं करते हो? मैं इस बात में अटकी हूं। आप सब बातों के लिए समर्थ हैं। मुझे ऐसी हालत में तरसा क्यों रहे हो?

जे आंऊं मंगां सहूर में, तांजे मंगां बे अकल।
लाड सभे तो पारण, जे अचे मूंजे दिल॥ ३६ ॥

मैं समझकर मांगूं या कदाचित नासमझी से, मेरे दिल की सभी चाहनाओं को पूरा करने वाले आप हैं।

दिल चाहे मूं हिकडी, को न पारिए लख गुणी।
तूं कीं लिके मूंह थी, तो जेडो मूं धणी॥ ३७ ॥

मेरे दिल में तो एक ही चाहना होती है। आपको उसे लाख गुना पूरा करना चाहिए। आप मेरे ऐसे स्वामी मेरे से छिप क्यों रहे हैं?

Nijanand App

आंऊं धणियांणी तोहिजी, मूं घर अर्स अजीम।
मूं कोडयूं उमेदूं वडियूं, तूं तेयां कोड गण्यूं को न डियम।। ३८ ।।

मैं आपकी अंगना हूं और मेरा घर परमधाम है। मेरी करोड़ों बड़ी चाहनाएं हैं, आप करोड़ गुना हमको देते क्यों नहीं हो?

तो भायो हे उमेदूं मगंदयूं, नयूं नयूं दिल धरे।
हिन जिमी न द्रापंदयूं, आंऊं डींदुस कींय करे।। ३९ ।।

आप जानते हैं कि रूहें नई-नई चाहनाएं करके खेल में मांगेंगी और इस दुनियां में यह किसी तरह तृप्त नहीं होंगी, इसलिए मैं उन्हें कैसे करके दूं?

हेडो जाणी दिल में, पेरोई ढंके द्वार।
न कीं सुणाइए गालडी, न कीं डिए दीदार।। ४० ।।

ऐसा आपने पहले से ही दिल में जानकर दरवाजा ही बन्द कर लिया है। अब न आप बातें करते हो और न दर्शन ही देते हो।

ते दर ढ़ंके मूरजो, असां अंखे कंने डिंने पट।
तो भायों घुरंदयूं घणी परे, बेठो जाणी बट।। ४१ ।।

इसलिए आपने हमारी आंखों और कानों पर परदा डालकर शुरू से ही दरवाजा बन्द कर दिया, क्योंकि आप जानते हैं कि हमारे नजदीक में बैठकर भी यह बहुत तरीके से मांगती ही रहेंगी।

रूहें हिन जिमीय में, द्रापे न के भत।
ईं जाणी लिके मूंह थी, हियडो केयां सखत।। ४२ ।।

रूहें इस संसार में किसी तरह से सन्तुष्ट नहीं होंगी, ऐसा जानकर अपने दिल को कठोर बनाकर मुझसे छिप गये हो।

हे पट डिसी मूं न्हारिम, उमेद न आसा कांए।
जगाइए ते वखत, मथां डिंने डींह पुजाए।। ४३ ।।

यह परदा देखकर मैं समझ गई कि हमारी अब कोई चाहना और उम्मीद पूरी नहीं होगी। अब आप उस समय जगाते हो, जब घर चलने का समय आ गया।

मूं घर अर्स अजीम, नूरजमाल मूं कांध।
लाड पारण मूंहजा, मूं कारण केई रांद।। ४४ ।।

मेरा घर परमधाम है। श्री राजजी महाराज मेरे धनी हैं। हमारे लाड़, प्यार को पूरा करने के वास्ते ही यह खेल बनाया है।

तो इलम चयो लाड पारींदो, ते में सक न कांए।
जे जे भतें मूं न्हारियो, इलमें सभे डिंनी पुजाए।। ४५ ।।

आपकी तारतम वाणी भी कहती है कि तुम्हारी सब चाहनाएं पूरी होंगी, इसमें कोई संशय नहीं है, पर मैंने जिस-जिस तरह से देखा तो तारतम वाणी ने सब पूरा कर दिया।

Nijanand App

पण हित अची इलम अटक्यो, जे कडी न अटके कित।
मूं न्हारे न्हारे न्हारियो, त अची अटक्यो हित।। ४६ ।।

परन्तु आपका इलम यहां आकर अटक गया, जो कहीं नहीं अटकता। मैंने देख-देखकर देखा कि इलम आपका यहां आकर अटक गया है।

हित डोह न कोए इलमजो, न कीं डोह विचार।
हे घुंडी तोहिजे हुकम जी, सा छुटे न कांधा धार।। ४७ ।।

यहां आपके इलम का कोई दोष नहीं है। न विचारों का दोष है। यह आपके हुकम की घुंडी है जो आपके बिना नहीं खुल सकती।

गाल गुझांदर ईं थेई, तूं पांणई जांणे।
हे गुझ्यूं गाल्यूं तो रे, के के चुआं हांणे।। ४८ ।।

यह बात गुझ (गुप्त) किस तरह से है, आप स्वयं इसे जानते हैं। यह गुझ बातें मैं आपके बिना किससे कहूं?

तूं धणी मूं इस्क जो, तूं धणी सहूर इलम।
तूं धणी वतन रूहजो, हे गुझ के के चुआं खसम।। ४९ ।।

आप मेरे इश्क के धनी हैं और ज्ञान के भी धनी हैं। हमारी रूह का वतन परमधाम है और वहां के भी आप ही धनी हैं। यह गुझ बातें हैं। किससे कहूं?

सिकाए-सिकाए मूंहके, को द्रजंदो-द्रजंदो डिए।
लाड मगंद्यूं रांदमें, तो अटके ईं हिए।। ५० ।।

मुझे कलपा-कलपाकर डर-डर के क्यों दे रहे हो? हम खेल में आपसे प्यार मांगते हैं। आप यहां अटक कैसे गए?

हिक वडो मूंके अचरज, मूंजा लाड पारीने कीं।
मूंके जगाए मंगाइए डियणके, मथां पुजाइए डींह।। ५१ ।।

इस बात की मुझे बड़ी हैरानी होती है कि मेरी चाहनाओं को आप कैसे पूरा करेंगे? आपने मुझे देने के वास्ते ही जगाया और मंगवाया। ऊपर से घर चलने का समय आ गया।

रांद डिखारिए उमेद के, जगाइए लाड पारण।
विलखाइए सुणन वैण के, रूआं दीदार कारण।। ५२ ।।

आपने हमारी चाहना पूरी करने के लिए ही खेल दिखाया और प्यार करने के वास्ते ही जगाया। अपनी मीठी वाणी सुनाने के वास्ते तरसा रहे हो? आपके दर्शनों के लिए मैं रो रही हूं।

कांध उमेदूं वडियूं, मूं दिल में थो पाइए।
धणी पांहिजे डोह के, मूं मोंहां थो चाइए।। ५३ ।।

हे धनी! मेरे दिल में आप बड़ी-बड़ी चाहना पैदा कराते हो। फिर अपने कसूर को मुझ से क्यों कहलवाते हो?

Nijanand App

आंऊं पण द्रजंदी, न डियां आंके डोह।
बंग पांहिजो पांणई, मूं मोंहां चाइए थो।।५४।।

मैं भी डरती हूं और आप पर दोष नहीं डालती, परन्तु आप अपनी कमी मेरे मुंह से कहलवाना चाहते हैं।

तोबा-तोबा करियां, जिन भुलां चुकां हांण।
हल्लां धणी जे हुकमें, जीं सुख भाइए पांण।।५५।।

अब मैं तोबा-तोबा करती हूं। अब फिर कभी भी भूल न होगी। मैं धनी के हुकम से ही चलूंगी जिससे आप सदैव खुश रहें।

पेरो हुई गाल कौलजी, थेई थींदी सभ चोयम।
द्रजां चोंदे अगरी, जीं न अचे दिल पिरम।।५६।।

पहले तो वचनों की बात थी जो हुई हैं या होंगी, सब कही हुई होंगी। ज्यादा कहने में मैं डरती हूं कि कहीं आपको बुरा न लग जाए।

कौल फैलजी वही वेई, हांणे आई मथे हाल।
हांणे कुछण मुकाबिल, हित हल्ले न अगरी गाल।।५७।।

कहनी, करनी की बातें गईं। अब रहनी की बातें आई हैं। अब आपके सामने बोलती हूं, क्योंकि इसके आगे कोई बात नहीं चलेगी।

घणों द्रप भुल चुक जो, ही हकजी खिलवत।
सचो रचे सच से, भुल न हल्ले हित।।५८।।

खेल में जाकर हम आपको भूल न जाएं इस बात का डर खिलवत में बहुत था। सत्य को सत्य से ही मिल सकते हैं, वहां झूठ चल नहीं सकता।

इलम पांहिजो डेई करे, मूंके रोसन तो केई।
त झोडो करियां कांध से, विच रांद में बेही।।५९।।

आपने अपनी वाणी देकर मुझे सब बता दिया, इसलिए खेल में बैठकर, हे धनी! आपसे झगड़ा करती हूं।

तोहिजे इलमें आंऊं सिखई, गिडम वकीली सभन।
मूंजो एतबार सभनी, आयो तोहिजी रूहन।।६०।।

आपके इलम से ही मैंने सब रूहों की तरफ से वकालतनामा ले लिया है। आपकी सब रूहों को मेरे ऊपर भरोसा है।

दावो मूंजो या रूहन जो, सभनी बटां आंऊं।
आंऊं गुझ जांणां सभ तोहिजी, कीं पेर डिए पांऊं।।६१।।

अब केस (दावा) मेरा हो या रूहों का, सबकी तरफ से वकील मैं ही हूं। आपकी समस्त छिपी बातों को मैं जानती हूं। अब आप पीछे क्यों खिसकते हैं?

Nijanand App

खिलवत जांणां अर्स जी, कौल फैल हाल असल।
तोजी गुझ न रही कां मूंह थी, दावो तो मूं विच अदल।। ६२ ।।

मैं मूल-मिलावा की, परमधाम की कहनी, करनी, रहनी की सभी बातों को जानती हूं। आपकी कोई भी बात मुझसे छिपी नहीं है, इसीलिए अदालत में केस (दावा) आपके और मेरे बीच में है।

तूं सचो तो गाल्यूं सच्यूं, अने सचो तो हलण।
मूं तो दावो सरे सचजो, झल्यम सचो दावन।। ६३ ।।

आप सच्चे हैं। आपकी बातें सच्ची हैं। आपका चलन व्यवहार भी सच्चा है। मेरे और आपके बीच केस (दावा) भी सच्चे कानून का है। मैंने सच्चे का ही दामन (पल्ला) पकड़ रखा है।

तूं सचा सच गालाइज, सच बोलाइज मूं।
सच दावो सच साहेद, सच जांणे सभनी सचा तूं।। ६४ ।।

आप सच्चे हैं। आपकी बातें सच्ची हैं। मेरे से आप सत्य ही बुलवा रहे हैं। केस (दावा) भी सच्चा है। गवाही भी सब सच्ची है। सभी सच्चे जानते हैं कि आप भी सच्चे हैं।

हिन न्हाए के केइए सच, जे हित आया सचा पांण।
मूंसे सच को न करिए, मूंजा सचडा सेण सुजांण।। ६५ ।।

इस झूठे संसार को आप सत्य कर दें, क्योंकि हम सच्चे इस झूठे संसार में आए हैं। मेरे सच्चे सब विध समर्थ प्रीतम! मेरे से सच्ची बातें क्यों नहीं करते हो?

जोर असां से को करिए, जडे आई गाल सरे।
सोई सचो अमीन, जो सची गाल करे।। ६६ ।।

जब बात कानून के सामने आ गई तो मेरे से जोर जबरदस्ती क्यों करते हो? सच्चा न्यायाधीश वही होता है, जो सच्ची बात करे।

पांण चाइए नालो हक, बेओ तो नाम रेहेमान।
आंऊं मांगां हक पडूत्तर, मूंके डे मेहेरबान।। ६७ ।।

आप अपने नाम को सत्य कहलवाते हो। दूसरा नाम आपका रहमान दया का सागर है, इसलिए हे मेहरबान! मैं आपसे एक ही उत्तर मांगती हूं, जो मुझे दो।

सचा सचो मूंके रसूल, मथे सच अदल।
मूं सचो दावो दोस से, सचडा थी मुकाबिल।। ६८ ।।

आपने अपने सच्चे रसूल को सच्चे न्याय के लिए भेजा और मेरा केस भी (दावा भी) एक सच्चे दोस्त से है, इसलिए आप सच्चाई से ही मेरे सामने आइए।

तेहेकीक न्या असांहिजो, डोह आयो मथे कांध।
पण तोरो थ्यो तो हथ में, ते मूंजो हल्ले न मय रांद।। ६९ ।।

हमारा निश्चित न्याय यही है कि कसूर धनी आपका है, परन्तु हुकूमत आपके हाथ में है, इसलिए खेल में मेरा कुछ चलता ही नहीं है।

Nijanand App

सरो सच साहेबजो, हित सचो हल्लणो हक।
हे कूडा काजी रांद में, भाइए करियां हिन माफक।।७० ।।

यह सच्चे न्यायाधीश की अदालत है। यहां सत्य ही चलना चाहिए। आप शायद जानते हो कि संसार के झूठे न्यायाधीशों की तरह हम भी झूठा न्याय करेंगे।

एहेडी हिन अदालत, आंऊं करण की डियां।
हे दावो तो मूं विच जो, सचडो मूंजो मियां।।७१ ।।

ऐसा इस अदालत में मैं कैसे करने दूंगी? हे धनी! आप मेरे सच्चे धनी हैं और यह केस (दावा) आपके और मेरे बीच का है।

हाणे दाई मुदई बे जणां, जां मुकाबिल न हून।
तूं बेठो मथे तोरो गिंनी, हे बेठ्यूं हिकल्यूं रून।।७२ ।।

जब तक दावा करने वाला और उत्तर देने वाला दोनों सामने न हों, तो न्याय कैसे हो? आप हुकूमत लेकर परमधाम में बैठे हो। हम यहां अकेली बैठी रो रही हैं।

सिकां सडां दीदार के, बी सुणन के गाल।
मूं वजूद नासूत में, तूं धणी बका नूरजमाल।।७३ ।।

मैं यहां पर दर्शन के वास्ते तथा मीठी बातें सुनने के वास्ते बिलखती हूं, चिल्लाती हूं, क्योंकि मेरा तन संसार में है और आप अपने परमधाम में बैठे हैं।

भगो पण तूं न छुटे, मंगां हक नियाय।
सरो घुरे सच सभनी, या गरीब या पातसाह।।७४ ।।

आप भागने से भी नहीं छूटेंगे। मैं सच्चा न्याय मांगती हूं। न्याय तो सभी चाहते हैं चाहे गरीब हो या बादशाह हो।

सरे सच न्हार जे, हे जो सरो सुभान।
भोंणें भजंदो मूंहथी, पांण चाइए रेहेमान।।७५ ।।

मेरे सच्चे धनी श्री राजजी महाराज! आपका कानून तो सच्चा होना चाहिए! आप मेहरबान कहला करके भी मुझ से भागते फिरते हो।

मूं इलम खटाई तोहिजे, से भाइयां तोहिजा आसान।
तोके बंधो मूं रांद में, कीं छुटे भगो सुभान।।७६ ।।

आपके इलम ने ही मुझे जिताया है। इसका मैं एहसान मानती हूं। आपको भी मैंने इस दुनियां में बांध रखा है। धनी आप भागकर कहां जाओगे?

आंऊं झल्ले ऊभी नियाके, हल्लण न ड्यां अहक।
मूं कंने जोर सरे इलम जो, मूं तोके खट्यो बेसक।।७७ ।।

मैं न्याय को पकड़कर खड़ी हूं। झूठ को नहीं चलने दूंगी। मेरे पास आपके ज्ञान की सच्ची ताकत है। मैंने आपको कई बार जीता है।

Nijanand App

जे निया सामो न्हारिए, त पट न रखे दम।
त हक केई न्हारजे, हल्लाए हक हुकम॥७८॥

जो न्याय के सामने देखें तो एक पल के लिए भी परदा आपको नहीं करना चाहिए। आपको सच्चा हुकम चलाकर सच्चा न्याय करना चाहिए।

सरो तोरो होए अदल, निया थिए तित।
हे गाल्यूं गुझांदर अर्स ज्यूं, कियां कढां गुहाई हित॥७९॥

जहां पर कानून और हुकूमत सच्चे हों, वहीं पर सच्चा न्याय होता है। यह परमधाम की बातें गुझ (गुह्य) हैं। यहां संसार में गवाही कहां से लाऊं?

हित साहेद तूंहीं तोहिजो, खिलवत में न बेओ।
जे बंग होए मूंह जो, से मूंजे सिर डेओ॥८०॥

यहां आप ही अपनी तरफ से गवाह हैं, क्योंकि मूल-मिलावा में कोई दूसरा है ही नहीं। जो कुछ कसूर मेरा हो वह मेरे सिर दो।

झोडो करियां कांध मे, जे तो झोडाई।
तूं दाई तूं मुदई, हित तूंही गुहाई॥८१॥

आप झगड़ा कराते हैं तो करती हूं, वरना केस (दावा) करने वाले भी आप हैं। उत्तर देने वाले भी आप हैं, और गवाह भी आप हैं।

भोंणे लिकंदो मूंह थीं, आए नियां गाल घणी।
लाड कोड मंगां तो कने, अच मुकाबिल मूं धणी॥८२॥

आप भागते हैं और मुझ से छिपते हैं। यह न्याय की बड़ी बात है। आपसे मैं लाड़, प्यार, खुशी मांगती हूं, इसलिए हे धनी! मेरे सामने आइए।

तांजे मुकाबिल न थिए, मूं थी छुटे न कीं।
पांण वतन बिंनीजो हिकडो, तूं मूंहजो पिरी॥८३॥

यदि आप मेरे सामने नहीं आते हैं तो भी मुझसे आप छूट नहीं सकते, क्योंकि हम दोनों का घर एक है और आप मेरे धनी हैं।

तूं सचो धणी मूं सिर, तोके पुजां मय रांद।
लाड पाराइयां पांहिजा, तूं मूं सिर सचो कांध॥८४॥

आप सच्चे धनी मेरे सिर पर हैं। खेल में मैं आप तक पहुंच गई। अब मैं अपने लाड़, प्यार यहीं पूरा कराऊंगी, तभी तो आप मेरे सच्चे पति हैं।

आंऊं धणियांणी तोहिजी, डे तूं मूं जी रे अंग।
मूं मुए पुठी जे डिए, हे केडी निसबत संग॥८५॥

मैं आपकी अंगना हूं, मुझे अपना अंग दीजिए। मेरे मरने के बाद यदि आपने मुझे स्वीकारा, तो आप कैसे मेरे पति हैं?

Nijanand App

लाड़ कोड़ सभे त परे, जे मूं से गडजे हित।
वडो सुख थिए साथ के, मंगां जांणी निसबत।। ८६ ।।

हमारे प्यार और खुशियां तभी पूरी हों, यदि आप यहां आकर मिलो। सुन्दरसाथ को भी बड़ी खुशी होगी, क्योंकि मैं अपना सम्बन्धी जानकर ही आपसे मांगती हूं।

सची सांजाए तूं करिए, समरथ तूं सुजाण।
संग जाणी करियां लाड्डा, डिंने छुटे मेहेरबान।। ८७ ।।

आपने सच्ची पहचान कराई है और समर्थ भी हैं। हे मेहरबान! आपसे सम्बन्ध जानकर ही मैं प्यार करती हूं, जिसे देकर ही आप छूटोगे।

तूं मेहेबूब लाडो कांध मूं, चौडे तबके सुई निसबत।
हांणे लिके थो के गालके, लाड जाहेर मंगे महामत।। ८८ ।।

आप मेरे प्यारे पति हैं। इस सम्बन्ध को चौदह लोकों में सभी ने सुना है। अब आप किस बात के लिए छिप रहे हो? महामति आपसे लाड़-प्यार जाहेर में मांगती हैं।

मूं दुलहिन के जाहेर तो केई, मूं दुलहा जाहेर तूं थेओ।
पांहिज्यूं रूहें जाहेर तो केयूं, तो रे आए न को बेओ।। ८९ ।।

संसार मुझे आपकी अंगना और आपको मेरे दूल्हा के रूप में जानता है। आपने अपनी रूहों को भी जाहिर कर दिया है कि आपके बिना और कोई दूसरा नहीं है।

तूं लज करिए केह जी, या अर्स तांजे हित।
तो निसबत असां से, बेओ कोए न पसां कित।। ९० ।।

अब आप शर्म किसकी करते हो? परमधाम की या खेल की? आपका हमसे रिश्ता है, इसलिए मुझे दूसरा कोई कहीं दिखाई देता ही नहीं।

आंईं चोदां तूं कीं घुरे, हिन न्हाए में लाड।
आंऊं त घुरां तो लगाई, हिनमें हुकमें डे स्वाड।। ९१ ।।

आप कहोगे कि इस संसार में लाड़-प्यार क्यों मांगती हैं? मैं आपकी लगाई हुई माया में लाड़-प्यार मांगती हूं, क्योंकि आपके हुकम से ही इसमें आनन्द मिलेगा।

असीं आयासी रांद में, त लाड मंगूं मय हिंन।
असीं कीं कीं डिसूं हिनके, आंईं ईंनी पसेजा जिन।। ९२ ।।

हम खेल में आए हैं, इसलिए खेल में लाड़-प्यार मांगते हैं। हमने तो इसे कुछ-कुछ देखा है, परन्तु आप इसे मत देखना।

आंईं लज कंदा इनजी, त आं पण लगी ए।
आंके पण ए न छुटी, गिंनी वेई असां के जे।। ९३ ।।

आप इसकी शर्म करते हो जो मेरे पीछे लगी। क्या आपको भी यह माया लगी है? क्या आपसे भी माया नहीं छूटी है, जो हम लोगों को घसीट कर ले गयी।

Nijanand App

हांणे हितरयूं गाल्यूं को कर्यो, को झोडो बधार्यो।
हे झोडो सभे त चुके, जे असांजा लाड पार्यो।। ९४ ।।

अब इतनी बातें क्यों करते हो? झगड़ा क्यों बढ़ा रहे हो? यह झगड़ा तो तब समाप्त हो जाए, जो हमारी चाहना आप पूरी कर दो।

तूं कितेई भगो न छुटे, अर्स में मूं मांध।
लाड पाराइयां पांहिजा, पुजी पल्लो पांध।। ९५ ।।

परमधाम में आप मेरे सामने से भागने पर भी नहीं छूटेंगे। मैं आपका पल्ला पकड़कर अपनी चाहना पूरी कराऊंगी।

अंईं कितेई छुटी न सगे, आंऊं किएं न छडियां आं।
महामत चोए मूं दुलहा, पार सघरा लाड असां।। ९६ ।।

आप किसी तरह से छूट नहीं सकते। मैं भी किसी तरह से आपको नहीं छोड़ूंगी। श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे दूल्हा! आप हमारी सब इच्छाओं को पूरा कर दो।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ३४१ ।।

बाब जाहेर थियणजा

रूह-अल्ला डिंन्यूं निसानियूं, जे लिख्यूं मय फुरमान।
से सभ मिडाए दाखला, करे डिंनाऊं पेहेचान।। १ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने जो निशान बताए, वह कुरान में लिखे हैं। उन सबको मिलाकर पहचान करा दी।

न तां केर रांद केडी आए, हे रूहें को जांणे।
डियण असांके सुखडा, तो उपाइए पांणे।। २ ।।

नहीं तो कौन सा खेल, कैसा खेल? यह रूहें क्या जानें? हमको सुख देने के वास्ते श्री राजजी महाराज ने ही हमारे दिल में उपजाया।

न कीं जाणूं रांद के, आं दिल उपाई पांण।
डियण असांके सुखडा, हे दिलमें आईम जांण।। ३ ।।

हम तो खेल को जानते नहीं थे। आपने हमारे दिल में यह पैदा किया। हमको सुख देने के वास्ते यह बात आपके दिल में आई।

हे जा हित रांदडी, केइयां असां कारण।
त असां कीं पसाइए डुखडा, असीं आयासी न्हारण।। ४ ।।

यह जो खेल बनाया हमारे वास्ते बनाया, तो फिर हमको दु:ख क्यों होता है? हम तो देखने के लिए आये हैं।

केआंऊं वडी रांदडी, कागर मूक्यो कीं हित।
डियण साहेदी सभनी, लिख्या लखे भत।। ५ ।।

यह खेल हमारे वास्ते बनाया। ऊपर से कुरान-पुरान की चिट्ठी क्यों भेज दी? हमको गवाही देने के वास्ते आपने लाखों तरह से लिखा।

Nijanand App

पांण केयां को पधरो, उपटे बका दर।
मूकियां रूह अर्स जी, डेई संडेहो कुंजी कागर।। ६ ।।

आपने अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर अपने आपको जाहिर क्यों किया? परमधाम की बड़ी रूह श्री श्यामाजी को तारतम कुंजी से सन्देश देकर क्यों भेजा?

मांधा जणाया सभ के, डियण के आकीन।
ईंदो रब आलम जो, सभ कंदो हिक दीन।। ७ ।।

आपने पहले से ही जानकारी दे दी कि लोगों को विश्वास आ जाए कि आप सारे जगत के मालिक आने वाले हैं। जो एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना करेंगे।

हिन जिमीमें पातसाही, कंदो चारीस साल।
चई खुटे पुंना कागर, जाहेर केयाऊं गाल।। ८ ।।

वह बड़ी रूह श्री श्यामाजी इस दुनियां में आकर चालीस वर्ष (सम्वत् १७३५ से १७७५) तक दुनियां में बादशाही करेंगे। आपकी यह चिट्ठी चारों तरफ पहुंच गई और यह बात सब में जाहिर हो गई।

असीं आया आंजे हुकमें, मंझ लैलत कदर।
सौ साल रख्या ढंकई, जाहेर केयां आखिर।। ९ ।।

हम भी आपके हुकम से लैल तुल कदर की रात में आए, जिसे सौ साल तक छिपाकर रखा और आखिर में सम्वत् १७३५ में जाहिर किया।

हजार साल दुनीजा, सो हिकडो डींह रब जो।
से डींह रात बए गुजरया, कियां जाहेर रोज-फरदो।। १० ।।

दुनियां के हजार साल श्री राजजी का एक दिन होता है। हजार साल का दिन और सौ वर्ष की रात बीत जाने पर कल का दिन फजर का जाहिर किया।

सा कुंजी कागर मूं डेई, उपटे बका दर।
मूं गड्यूं से गिंनी आइस, रूहें छते घर।। ११ ।।

यह इलम की कुंजी और कुरान का ज्ञान लेकर मैंने परमधाम के दरवाजे खोले। मुझे जो रूहें मिल गईं, मैं उन्हें लेकर शाकुण्डल (छत्रसाल) के घर आ गई।

मूं धणी जाहेर थेओ, दीन दुनी सुरतान।
गाल सुई सभनी, हिंदू मुसलमान।। १२ ।।

मेरे धनी तथा दुनियां के मालिक संसार में आ गए। इस बात को सब हिन्दू-मुसलमानों ने सुना।

वडी रांद डिखारिए, असां वड्यूं करे।
त पसूं वडाई अंखिएं, जे सभ दुनियां सई फिरे।। १३ ।।

आपने हमें संसार में बड़ा बनाकर बड़ा खेल दिखलाया। अब मैं अपनी बड़ाई अपनी आंखों से देखती हूं कि जब यह दुनियां मेरे हुकम से चले।

Nijanand App

पेरां कागर कई मूंके, आकीन डियण के सभन।
से निसान पुंना सभनी, केयां रांदमें रोसन।। १४ ।।

पहले सबको यकीन दिलाने के वास्ते कई कागज भेजे। सब भविष्यवाणी के निशान पूरे हो गए और खेल में सबको जानकारी मिली।

हे रोसन सभे पसी करे, असां दावो थेओ तोसे।
तांजे मुकाबिल न थिए, त आंऊं पल्लो पुजां के।। १५ ।।

यह जानकारी देखकर मेरा आपसे केस (दावा) खड़ा हुआ। यदि आप सामने न आए तो मैं किसका पल्ला पकडूं?

तांजे मूं कूडी करिए, त हितरो कुजाडो के के।
त हेडा कागर सभनी, कुरे के लिखे।। १६ ।।

यदि आप मुझे ही झूठा करना चाहते हैं तो फिर इतना सब कुछ किसके वास्ते किया? इतनी सब चिट्ठियां (ग्रन्थों में गवाहियां) किसके वास्ते लिखीं?

जे मूं कूडी करिए, त भले कूडी कर।
त पांहिजो नालो डेई, को लिखे कागर।। १७ ।।

यदि आप मुझे ही झूठा करना चाहते हो, तो भले ही करो, परन्तु आपने अपने नाम से इतनी चिट्ठियां क्यों लिखीं?

पट अर्स अजीम जो, मुराई कीं उघाडे।
जे मूं कोठिए लिकंदी, त आंऊं को न अचां लिके।। १८ ।।

परमधाम के दरवाजे आपने शुरू से ही क्यों खोल रखे हैं? यदि आप मुझे अकेले में छिपकर बुलाओ तो मैं छिपकर क्यों न आऊं।

एहेडी हुई तो दिलमें, त मूंके जाहेर को केइए।
इलम डेई मूं मंझ बेही, वैण वडा को कढे।। १९ ।।

यदि आपके दिल में ऐसी बात थी तो संसार में मुझे जाहिर क्यों किया? आपने हमारे अन्दर बैठकर अपना इलम देकर मेरे मुंह से इतने बड़े-बड़े वचन क्यों कहलवाए?

कोई तोके वैण विगो चोए, त से आंऊं सहां कीं।
मूं साहेदयूं सभ तोहिज्यूं, गिड्यूं मूर मुराई।। २० ।।

यदि आपको कोई उल्टा कहे तो मैं कैसे सहन करूं? मैंने शुरू से ही आपकी सब गवाहियां दी हैं।

डेई लदुन्नी इलम, मूंके परी परी समझाइए।
को हेड्यूं गाल्यूं मूं मुहां, दुनियांमें कराइए।। २१ ।।

आपने तारतम वाणी देकर मुझे तरह-तरह से समझाया। फिर ऐसी बड़ी बातें दुनियां में मेरे मुंह से क्यों कहलवाते हो?

Nijanand App

सभ जोर पांहिजो डेई करे, मूंके कमर बंधाइए।
बाकी रे कम थोरडे, मूंके को अटकाइए।। २२ ।।

अब आपने अपनी शक्ति देकर मेरे साहस को बढ़ाया। अब आपका थोड़ा सा काम और बाकी है। उसके लिए आपने क्यों मुझे अटका रखा है?

जे न थिए मुकाबिल मूंहसे, थिए कम हिन वेर।
त हिंनी तोहिजे कागरें, पांण के सचो चोंदा केर।। २३ ।।

यदि आप हमारे सामने नहीं आते, तो यह काम भी इस बार हो जाए, परन्तु आपने अपनी चिट्ठियों में जो लिखा है, उसे देखकर हमें सच्चा कौन कहेगा?

लाड असांजा रांदमें, तो पूरा सभ केयां।
जाहेर तो मुकाबिले, हितरे बंग रह्या।। २४ ।।

आपने सभी चाहना हमारी खेल में पूरी की है। अब आपको सामने आना है। बस, इतनी ही कमी रह गई है।

मूं हिये सल्ले अगियूं गालियूं, से वलहा कुरो चुआं।
सुन्दरबाई हल्ली विलखंदी, पण से कंने की न सुआं।। २५ ।।

मेरे दिल में पहले से ही बहुत बातें खटकती हैं। हे प्रीतम! वह मैं कैसे कहूं? सुन्दरबाई रोते-रोते चली गई, परन्तु कान से आपने उनकी बातों को नहीं सुना।

सुंदरबाई जे बखतमें, मायाएं वडा डुख डिना।
भती भती विलखई, हे डिसी डुखडा किंना।। २६ ।।

सुन्दरबाई के समय माया ने बड़े दु:ख दिए और तरह-तरह से रुलाया। उन दु:खों को देखकर मैं भी बिलखती रह गई।

आंऊं पण हुइस डुखमें, पण न सांगाएम आंसे।
मूं बेखबरी न जाणयो, से तो हांणे हिये चढ़ाया जे।। २७ ।।

मुझे भी दु:ख हुआ, परन्तु मुझे उस समय आपकी पहचान नहीं थी। मैं बेखबर थी। जो मेरे दिल में वह बातें थीं, आपने अब चढ़ा दीं।

उलट्यो आं कागर में, लिख्यो सुंदरबाई जो डो।
ते कागर न वांचयो, पण मूं पांहिजे कंने सुओ।। २८ ।।

आपने उलटा कागज में (वाणी में) सुन्दरबाई को दोषी ठहराया। मैंने उस चिट्ठी को पढ़ा नहीं, परन्तु कान से सुना है।

से डुख सह्या असां रादंमें, तांजे सेई डिए आखिर।
से पण चाडियां सिर मथे, त सेहेंदो हियो निखर।। २९ ।।

उस दु:ख को मैंने सहन कर लिया और शायद अन्त तक सहन करना पड़ेगा। वह भी मैं अपने सिर पर लूंगी और अपने कठोर दिल से सहन करूंगी।

Nijanand App

ते लाये घणों को चुआं, तोके सभ मालुम।
से सभ तोहिजे हुकमें, असां केयां कम।। ३० ।।

इस वास्ते अब ज्यादा क्या कहूं? आपको सब मालूम है। यहां सब कुछ आपके हुकम से ही हम करते हैं।

जे सौ भेरां आंऊं विसरई, त पण आंहिजा सेंण।
पस तूं हिये पांहिजे, जे तो चेया वैण।। ३१ ।।

यदि हम सौ बार भी भूलें तो भी आप हमारे पति हैं। अब आप अपने दिल में देखो कि आपने हम से क्या वचन कहे थे?

हे पण कंदे गाल्यूं लाडज्यूं, तांजे विसरां थी।
संग जांणी मूरजो, थिए थी गुस्तांगी।। ३२ ।।

इतने पर भी मैं लाड़-प्यार की बातें करती हूं। शायद मैं भूल गई। मैंने अपना परमधाम का साथी जान कर मांगने की गुस्ताखी की है।

हांणे जे करिए हेतरी, जीं जेडियूं सभे पसन।
कर सचा अची मुकाबिलो, सुख थिए असां रूहन।। ३३ ।।

अब आप कम-से-कम इतना तो करो कि सब सखियां आप के दर्शन तो कर लें। आप मेरे सामने आ जाएं तो हम सब रूहों को सुख हो जाए।

हांणे निपट आए थोरडी, सुण कांध मूंह जी गाल।
डेई दीदार गाल्यूं कर, मूं वर नूरजमाल।। ३४ ।।

हे मेरे पति! मेरी यह बात सुनो। यह बात बहुत छोटी सी है। आप मेरे धनी हैं, इसलिए मुझे दर्शन दो। मुझसे बातें करो।

हांणे जे लाड असां जा, ब्या सचा जे पारीने।
मूं तेहेकीक आंझो तोहिजो, मूंके निरास न कंने।। ३५ ।।

अब हमारे लाड़-प्यार की जो जो चाहना बाकी हैं, वह आप सभी पूरी करो। मुझे केवल आप पर ही भरोसा है, इसलिए आप निराश न करें।

तूं पारीने उमेदूं वडियूं, असां ज्यूं तेहेकीक।
पण ते लांए थी विलखां, मथां आयो कौल नजीक।। ३६ ।।

मेरी बड़ी-बड़ी चाहनाएं हैं। यह बात निश्चित है कि आप उन्हें पूरा करेंगे, पर इस बात के लिए रोती हूं कि घर चलने का समय नजदीक आ गया है।

तूं थी धणी मुकाबिल, को रखे थोडे बंग।
मूं गिन्यूं साहेदयूं तोहिज्यूं, कई केयम दुनी से जंग।। ३७ ।।

हे धनी! आप सामने आइए। थोड़ी सी कमी बाकी क्यों रखी है। मैंने आपकी गवाहियां लेकर दुनियां से लड़ाई छेड़ रखी है।

Nijanand App

पोरयां तां सभ ईंदा, सभ सची चोंदा से।
जे असां बेठे अचे दुनियां, जे कीं डिसूं रांद ए।। ३८ ।।

पीछे तो सभी आएंगे और सच्ची बातें करेंगे, परन्तु हमारे यहां खेल में बैठे यह दुनियां वाले आ जाएं, तो हम भी कुछ खेल की लज्जत ले लें।

हितरो त आइम तेहेकीक, पोए मूं गाल सची सभ चोंदा।
असां हल्ले पोरयां, हथडा घणूं गोहोंदा।। ३९ ।।

यह बात तो निश्चित है कि मेरे पीछे मेरी बातों को सभी सत्य बोलेंगे। हमारे जाने के बाद हाथ मलते रहेंगे।

पण असल पांहिजी गिरोमें, जा रूहअल्ला चई।
सकुमार बाई गडवी, अजां सा पण न्हार सई।। ४० ।।

परन्तु हम रूहों की जमात में जैसा श्री श्यामाजी ने कहा था, उसी अनुसार शाकुमारबाई मिलीं, पर अभी तक वह साथ में आई नहीं हैं।

न तां कम सभ पूरो केयो, अने करिए पण थो।
कंने पण तेहेकीक, से पूरो आंझो आए तो।। ४१ ।।

वरना सब काम पूरे किए और आप करते भी हैं। यह भी निश्चित है कि आगे भी करोगे। ऐसा पूरा भरोसा आप पर है।

महामत चोए मूं वलहा, तोसे करियां लाड कोड।
केयम गुस्तांगी रांदमें, जे तो बंधाई होड।। ४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं। खेल में जो गुस्ताखी की है, वह भी जब आपने हुज्जत बंधाई।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ३८३ ।।

मारकंडजो दृष्टांत

चई सुंदरबाई असां के, मारकंड जी हकीकत।
ईं दर थी आंके खोलियां, आंजी पण ईं बीतक।। १ ।।

सुन्दरबाई (श्री श्यामाजी) ने हमको मारकण्ड की हकीकत बताई थी और कहा था कि तुम्हारी भी कुछ ऐसी कहानी है।

निमूनो मारकंड जो, चयो सुन्दरबाई भली भत।
सुकदेव आंदो आं कारण, हे जे पसो था हित।। २ ।।

मारकण्ड का नमूना सुन्दरबाई श्री श्यामाजी ने अच्छी तरह समझाया। शुकदेव मुनि ने भी तुम्हारे वास्ते कहा जो आप यहां देख रहे हैं।

जे कीं गुजरयो मारकंड के, विच जिमी हिन अभ।
से गुझ दिलजो निद्रमें, डिठो नारायणजी सभ।। ३ ।।

आसमान जमीन के बीच मारकण्ड ऋषि के ऊपर जैसी बीती, उसके दिल की छिपी बातों का पता नारायणजी को था।

Nijanand App

डेखारी नारायण जी, माया मारकंड के।
जे कीं डिठो रिखि निद्रमें, सभ चई नारायणजी से।। ४ ।।

नारायणजी ने मारकण्ड ऋषि को माया दिखलाई। जो कुछ ऋषि ने बेसुधि में देखा, वह बातें नारायणजी ने उसको बताईं।

असी पण बेठा आं अगियां, निद्रडी डिंनी आं असां।
हे जा डिसो था निद्रमें, से कुरो खबर न्हाए आं।। ५ ।।

हम रूहें भी आपके आगे बैठी हैं और ऊपर से फरामोशी का परदा दे दिया है। अब जो हालत नींद में हमारी हो रही है, क्या उसकी खबर आपको नहीं है?

धणी बेठा आयो विचमें, सभ नजरमें पाए।
असां दिलजी को न कस्यो, आंजे दिलमें तां आए।। ६ ।।

धनी! आप हम सबको नजर में लेकर बीच में बैठे हैं। हमारे दिल की बातें आप पूरी क्यों नहीं करते? आपके दिल में चाहना तो है।

असां दिलज्यूं गालियूं, से कुरो आं डिठ्यूं न्हाए।
से कीं आंईं सहोथा, जे विलखण थिए असांए।। ७ ।।

हमारे दिल की बातें क्या आपको मालूम नहीं हैं। यदि हां, तो आप सहन कैसे करते हो और हमें क्यों रुलाते हो?

आंईं बेठा सुणो गालियूं, असां के को विधें दिल ल्हाए।
को न करिए मूं दिलजी, आंजे दिलमें केही आए।। ८ ।।

आप बैठे-बैठे बातें सुनते हो। आपने हमको इस तरह से दिल से क्यों उतार दिया अब मेरे दिल की बातें क्यों नहीं करते? आपके दिल में क्या है?

मारकंड माया मंझां, जडे किएं न निकरी सगे।
तडे गिडाई रिखि के पांणमें, मंझ पेही मारकंड जे।। ९ ।।

मारकण्ड ऋषि माया में से जब किसी तरह नहीं निकल सका तो नारायणजी ने माया में प्रवेश कर मारकण्ड को अपने में मिला लिया।

असां जा डिठी रांदडी, आंईं पसी तेहजो सूल।
मूंके असां के फुरमान, हथ पांहिजे नूरी रसूल।। १० ।।

हमने जो इस खेल को देखा है, उसके दुःखों को आप जानते हैं, इसलिए आपने कुरान को भेजा और रसूल को हमारे वास्ते भेजा।

लखे भते लिखियां, कई इसारतें रमूजें।
सभ हकीकत मूकियां, भाइए मान किएं समझें।। ११ ।।

आपने लाखों तरह से कई इशारतों और रम्जों (रमूजों) जो शास्त्रों में लिखीं, सब तरह की हकीकत भेजी। यह समझ कर कि इसी तरह से इन मानवती रूहों को जानकारी मिल जाए।

Nijanand App

पोए मूकियां रूह पांहिजी, जा असांजी सिरदार।
कुंजी आंणे अर्स जी, खोल्याई बका द्वार।। १२ ।।

उसके बाद आपने अपनी बड़ी रूह श्री श्यामाजी जो हमारे सिरदार हैं, भेजा। जिन्होंने तारतम ज्ञान की कुंजी लाकर परमधाम के दरवाजे खोले।

जे निसान्यूं फुरमानमें, से डिंनाई सभ निसान।
सुन्दरबाई कई भतें, करे डिनाऊं पेहेचान।। १३ ।।

कुरान में जो निशान लिखे हैं, उन सब निशानों की पहचान कराई। इस तरह से सुन्दरबाई (श्री श्यामाजी) ने हमको कई तरह से पहचान करा दी है।

ई चुआं आंऊं केतरो, अलेखे आईन।
बिंनी कौल मिडी करे, डिंनाऊं दृढ़ आकीन।। १४ ।।

इस तरह से अब कहां तक कहूं, बेसुमार बातें हैं। वेद-कतेब दोनों की भविष्यवाणी मिलाकर हमको यकीन दिलवाया।

दिलडा असां जा जागया, पण पुजे ना रूहसी।
से हुकम हथ आंहिजे, हल्ले न असां जो कीं।।१५।।

हमारा दिल तो जाग गया, पर रूह तक ज्ञान नहीं पहुंचा, क्योंकि यह सब आपके हुकम के हाथ में है। हमारा यहां कुछ नहीं चलता।

मारकंड जे दिलजी, सभ नारायण जी चई।
जडे याद डिंनी मारकंड के, तडे हिक दम निद्र न रई।। १६ ।।

मारकण्ड के दिल की सभी बातें जब नारायणजी ने कहीं, जब मारकण्ड को याद दिलाया, तब एक क्षण में उसकी नींद समाप्त हो गई।

उडी वेई मारकंड के, निद्रडी कंदे विचार।
तोहे सुध असां न थिए, जे डिंनाऊं उपटे द्वार।। १७ ।।

विचार करते ही मारकण्ड की नींद उड़ गई, परन्तु हम कभी विचार नहीं करते कि आपने हमारे लिए परमधाम के दरवाजे तक खोल दिए हैं।

तो डिसंदे आंऊ विलखां, सभ सुध डिंनी आं हित।
वलहा याद अजां को न अचे, को डिंना हियडो सखत।। १८ ।।

आपने यह सब खबर मुझे दी। आप देख रहें हैं मैं तड़प रही हूं। मेरा दिल पत्थर जैसा कर दिया है कि धनी की याद नहीं आती।

धणी मूंहजे धामजा, अंईं चओ करियां तीं।
असां के हिन रांदमें, मुझाए रख्या कीं।। १९ ।।

हे मेरे धाम के धनी! अब आप जैसा कहो मैं वैसा करूं। हमको आपने इस खेल में क्यों उलझा रखा है?

Nijanand App

गाल मिठी वलहा, सुणाए डेखार धाम।
दीदार डेयम पांहिजो, मूं अंगडे थिए आराम।। २० ।।

हे मेरे प्रीतम! अब मीठी बातें सुनाओ और परमधाम दिखाओ। अपना दर्शन दो जिससे मेरे तन को शान्ति मिले।

आंऊं चुआं बे केहके, तूं मूंजो धणी आइए।
तूं सुणी ईं को करिए, ईं वार वार को चाइए।। २१ ।।

मैं दूसरे किससे कहूं? मेरे धनी तो आप हैं। आप सुन करके भी ऐसा क्यों करते हो? बार-बार क्यों कहलवाते हो?

सुंदरबाईएं जे चयो, मूं दिल पण डिंनी गुहाए।
सभ गाल्यूं असां जे दिलज्यूं, धणी तो खबर सभ आए।। २२ ।।

सुन्दरबाई ने जो कुछ कहा मेरे दिल ने भी उसकी साक्षी दी। हमारे दिल की सब बातों की आपको सब खबर है।

हे गाल्यूं आंईं डिसी करे, कीं मांठ करे रहो।
अर्स संग सारे करे, आंईं विछोहा कीं सहो।। २३ ।।

यह सब बातें देखकर भी आप चुप क्यों हो? परमधाम का सम्बन्ध जानकर भी आप वियोग सहन क्यों करते हो?

अर्स असांके विसर्‌यो, अने विसर्‌या तो कदम।
पण तो को संग विसारियो, कीं विसारियां खसम।। २४ ।।

हमको तो परमधाम भूल गया और आपके चरण भी भूल गए, परन्तु आपने हमारे सम्बन्ध को कैसे भुला दिया? आप कैसे भूल गए?

दिलडो अर्स संग जो, असां मथां कीं लाथां।
पुकारींदे न न्हारियो, असां विच हेडी को पातां।। २५ ।।

हमारा आपका परमधाम का रूह का सम्बन्ध है। आपने हमें दिल से कैसे उतार दिया? मैं इतनी पुकार करती हूं, फिर भी आप हमारी तरफ नहीं देखते। हमारे बीच में ऐसा क्या हो गया?

किते वेयूं हो गाल्यिूं, जे अर्स विच केयूं।
तांजे अर्सीं विसरया, आंके विसरी कीं वेयूं।। २६ ।।

परमधाम में जो हमने वायदे किए थे, वह सब कहां गए? कदाचित हम भूल भी गए, तो आप कैसे भूल गए?

करियां गुस्तांगी वडियूं, पण हियडो चायो तोहिजो चए।
जे मूं जगाए सामों न्हारियो, त मूं रूहडी कीं रहे।। २७ ।।

मैं बड़ी भारी गुस्ताखी करती हूं, परन्तु जो कुछ दिल से कहती हूं, आपके कहलाने से ही कहती हूं। यदि मुझे जगाकर मेरी तरफ देखो, तो मेरी रूह कैसे रह सकती है?

Nijanand App

चरई थी चुआं थी, जिन डुखे जो मूंहसे।
तो डिखार्‍यो हिक तोहके, आंऊं चुआं बे केहके।। २८ ।।

मैं दीवानी होकर (बांवरी, पागल) कह रही हूं कि आप मुझे दु:खी न करें, क्योंकि आपने मुझे केवल आपको दिखाया है। मैं दूसरा किससे कहूं?

चंगी भली आइयां, चरई ते चुआं।
भुले चुके वैण निकरे, जिन डुखे जो मुआं।। २९ ।।

मैं अच्छी भली हूं और पागलों जैसी बातें करती हूं। यदि भूल-चूक में कोई वचन निकल जाए, तो आप दु:खी न होना।

ईं करे विहारयां, हितरी पण न सहां।
त कीं घुरंदिस लाडडा, कीं पारीने असां।। ३० ।।

आपने ऐसा करके हमें बिठा रखा है, फिर भी हमारी इतनी सी बात सहन नहीं करते? तो फिर मैं कैसे आपसे प्यार मांगूंगी? आप हमें प्यार कैसे देंगे?

बिआ लाड मूं विसर्‍या, पसी तोहिजो हाल।
न कीं डिए दीदार, न कीं सुणाइए गाल।। ३१ ।।

आपकी यह हालत देखकर मेरी सब चाहना भूल गई है। आप न तो दर्शन देते हो और न बातें करते हो।

तोके आंऊं न पसां, न की कंने सुणयां।
हितरो पण न थेयम, त बिआ केरा लाड मंगां।। ३२ ।।

आपको न मैं देख पाती हूं और न ही आपकी बातें सुन पाती हूं। जब आपसे इतना ही नहीं होता तो दूसरी कौन-सी मांग आपसे करें?

मंगा जाणी संगडो, जे तो देखार्‍यो।
हांणे विच बेही सभ जगाइए, हांणे कार्‍यूं को कार्‍यो।। ३३ ।।

अपना मूल का सम्बन्ध जानकर ही मैं मांगती हूं। आप परमधाम में बैठकर सबको जगाओ। शोर क्यों मचवाते हो?

मंगा थी पण ड्रजंदी, मूं मथां हेडी थेई।
हे सगाई निसबत, आंके विसरी कीं वेई।। ३४ ।।

मांगती भी हूं और डरती भी हूं, क्योंकि मेरे ऊपर ऐसी बीती है। इस सम्बन्ध को आपने कैसे भुला दिया?

मूंके निद्रडी विसारियो, पण तूं कीं विसारिए।
तो दिल से को उतारियूं, ही वार वार को चाइए।। ३५ ।।

मुझे तो फरामोशी ने भुला दिया, पर आप क्यों भूल गए और आपने अपने दिल से क्यों उतार दिया? ऐसा बार-बार क्यों कहलवाते हो?

Nijanand App

हेडी घुंडी· दिलमें, कीं पाए बेठो पांण।
आंऊं कडीं न रहां दम तो रे, हेडी को करे मूं से हांण।। ३६ ।।

आप दिल में ऐसी गांठ लगाकर क्यों बैठ गए? मैं तो कभी भी आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। आप मुझ से ऐसा क्यों करते हैं?

मूं मथां हेडी को केइए, केहेडो आइम डो।
जे गाल होए आं दिलमें, से मूं मांधां को न कढो।। ३७ ।।

मेरे ऊपर ऐसा क्यों करते हो? मेरा क्या कसूर है? जो बात आपके दिल में है, उसे मेरे सामने क्यों नहीं कह देते?

अगे सुन्दरबाई हल्लई, रोंदी कर–करंदी।
हांणे मूंसे ईं को कर्यो, करे हेडी मेहेरबानगी।। ३८ ।।

आगे सुन्दरबाई रोती-कलपती चली गई। मेरे ऊपर मेहरबानी करो? मुझसे ऐसा क्यों करते हो?

मांधां डिखारई रांद रातमें, हांणे जाहेर केयां फजर।
हे गालियूं केयूं सभ मेहेरज्यूं, सा लाथाऊं कीं नजर।। ३९ ।।

पहले तो खेल रात्रि में दिखलाया। अब तो ज्ञान का सवेरा हो गया है। यह सब बातें आपकी मेहर के कारण हैं। आपने मुझे नजर से दूर क्यों कर दिया?

हांणे जीं जांणे तीं मूं कर, पण बदल मूंहजो हाल।
तीं कर जीं पसां तोहके, जीं सुणियां मिठडी गाल।। ४० ।।

अब जैसा जानो वैसा मुझ से करो, परन्तु मेरी हालत बदल दो। ऐसा करो जिससे मैं आपको देख सकूं और आपकी मीठी बातें सुन सकूं।

केडा वंजा के के चुआं, बिओ को न डिखारे हंद।
तूं बेठो मूं भर में, आंऊं केडा वंजा करे पंध।। ४१ ।।

अब कहां जाऊं? किससे कहूं? दूसरा कोई ठिकाना हीं नहीं है। आप मेरे पास ही बैठे हैं तो रास्ता चलकर कहां जाऊं?

बट बेठा न सुणो, न कीं न्हारयो नेणन।
न पुजी सगां पांध के, न कीं सुणियां कनन।। ४२ ।।

आप पास में बैठे हो फिर भी न तो हमारी बातें सुनते हो और न ही हमारी तरफ देखते हो। न ही आपका पल्ला पकड़ सकती हूं और न कुछ कानों से सुनाई देता है।

मूंजा पुजे न हथ अंगडा, त रहां कींय करे।
कोठाइए कागर मूंकी करे, कीं बेहां धीरज धरे।। ४३ ।।

मेरा हाथ भी आपके अंग तक नहीं पहुंचता, तो आपके बिना कैसे रह सकती हूं? अब आप मुझे चिट्ठी लिखकर बुलवाते हो तो मैं धीरज धर (धैर्य धारण) कर कैसे बैठूं?

Nijanand App

पेरो पांणे जांणी हिन के, हांणे करिए हल्लणजी वेर।
पुकारींदे न डेओ, पसण पांहिजा पेर।। ४४ ।।

आपने पहले ही अपनी पहचान दे दी और अब चलने का समय बताते हैं। मेरे बार-बार पुकार करने पर भी अपने चरणों को देखने नहीं देते।

गाल निपट आए थोरडी, हेडी भारी को केइए।
सभनी गाले समरथ, पण दिल घुंडी केई रखिए।। ४५ ।।

यह बात बहुत छोटी सी है। आपने इसे इतना भारी क्यों बना रखा है? आप सब तरह से समर्थ हैं। तब दिल में गांठ क्यों लगा रखी है?

आंईं डुखोजा दिलमें, जडे चुआं घुंडी जो वैण।
पण कीं करियां कीं चुआं, मूं अडां न्हारयो न खणी नैण।। ४६ ।।

जब मैं कहती हूं कि आपने दिल में गांठ लगा रखी है, तो आपको दुःख होगा? पर मैं क्या करूं? किससे कहूं? जब तक आप मेरी तरफ नैनों से देखते नहीं।

जा पर चओ सा करियां, तूं पांण कराइए थो।
हे पण तूंही चाइए, मूं मथे कीं अचे डो।। ४७ ।।

जैसा आप कहो, वैसा मैं करूं। आप स्वयं ही कराते हैं। यह बात भी आप ही कहला रहे हैं। तो फिर मेरे पर दोष कैसे आता है?

हेडी रांद डिखारई, मय वर कोडी लख हजार।
कीं करियां कीं चुआं, मूंजा धणी कायम भरतार।। ४८ ।।

यह खेल जो आपने दिखाया है, इसमें लाखों करोड़ों उलझनें हैं। मैं क्या करूं? किससे कहूं? आप ही मेरे सामर्थ्य अखण्ड धनी हैं।

जे अपार वराका तोहिजा, मूं हिकडी गंठ न छुटे।
लखे भते न्हारियां, तो रे जोडी कां न जुडे।। ४९ ।।

यह सब आपकी बेशुमार झंझटें हैं, जिसकी एक गांठ भी मेरे से नहीं छूटती। मैंने लाखों तरह से देखा। आपके बिना बनाये कोई बात नहीं बनती।

जे वराका लाहिए, त आंऊं बेठिस तरे कदम।
को न वराको कितईं, ई आइम मूंजा खसम।। ५० ।।

अब इन उलझनों को हटाओ। मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं और आप मेरे पति हैं, इसलिए कोई झंझट कहीं नहीं है।

चुआं रुआं के न्हारियां, बेठो आइए मूं बट।
लाहिए दममें तूंहीं धणी, अंखे कंने जा पट।। ५१ ।।

मैं कहती हूं, रोती हूं, देखती हूं कि आप मेरे पास बैठे हैं। मेरे आंखों-कानों में जो परदे पड़े हैं, उनको आप एक पल में हटा सकते हैं।

Nijanand App

सौ वराके हिकडी, गाल ई आइए।
मूंजो हल्ले न तिर जेतरो, हे पण चुआं थीं तोहिजे चाइए।।५२ ।।

सौ बात की एक बात यहां अब हो गई कि खेल में मेरा जरा भी नहीं चलता। यह भी मैं जो कहती हूं, आपके कहलाने से कहती हूं।

तूं बंधे तूं छुडाइए, तित बी काएं न गाल।
जीं फिराइए तीं फिरे, कौल फैल जे हाल।।५३ ।।

आप ही बांधते हैं, आप ही छुड़ाते हैं। दूसरे किसी की बात ही नहीं है। अब आप जैसा घुमाएं वैसा ही हमारी कहनी, करनी और रहनी घूम जाए।

हांणे मोंह थीं मंगां मूं धणी, मूंजा सुणज सभ स्वाल।
महामत चोए मूं लाडडा, धणी पार तूं नूरजमाल।।५४ ।।

महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे धनी! मेरी प्रार्थना सुनिए। मैं अपने मुंह से मांगती हूं कि मेरे लाड़-प्यार को आप पूर्ण करें।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || ४३७ ||

आसिकजा गुनाह

सुणो रूहें अर्स जी, जा पांणमें वीती आए।
जेहेडी लटी पांण केई, एहेडी करे न बी कांए।। १ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मेरे धाम की रूहो! सुनो, जो हम पर बीती है, हमने जैसा उलटा काम किया है, ऐसा उलटा कोई नहीं करता।

चुआं तेहजो बेवरो, सुणजा कन डेई।
डिठम से सहूर से, सहूर आंईं पण करेजा सेई।। २ ।।

मैं उसका विवरण बताती हूं। ध्यान देकर सुनना। फिर तुम भी उसे ध्यान से देखना, जैसे मैंने देखा है।

पोए जा दिल अचे पांहिजे, पांण करियूं सेई।
भुली रोए तेहेकीक, हथड़ा मथे डेई।। ३ ।।

पीछे आपके दिल में जो आएगा वह करेंगे। जो गल्ती करती है उसे ही सिर पर हाथ मार कर रोना पड़ता है।

ते लाएं कीं भूल जे, आए हथ अवसर।
पोए को पछताए जे, पेरो हल्लजे न न्हारे नजर।। ४ ।।

इसलिए हाथ में आए समय को क्यों भूलें? पहले से ही नजर खोलकर चलें, ताकि पीछे पछताना न पड़े।

गिरो पांहिजी आसिक, चांऊं मंझ हिंनी।
जा पर पसां पांहिजी, त असां हे अकल के डिंनी।। ५ ।।

यहां माया के संसार में अपनी जमात आशिक कहलाती है। फिर जब मैं अपनी तरफ देखती हूं तो सोचती हूं कि हमको यह अक्ल किसने दी?

Nijanand App

खबर गिंनी धणीयजी, डिंनी लोकन के।
आसिक के हे उलटी, पांण के लगी जे।।६।।

धनी की खबर पाकर दुनियां को बताना। आशिक के लिए उलटी बात है, जो दोष अपने को लगा है।

मिठो गुझ मासूक जो, आसिक के के न चोए।
पडोसन पण न सुणे, ईं आसिक गुझी रोए।।७।।

अपने माशूक की छिपी बातें आशिक रूहें किसी को नहीं कहतीं। आशिक रूहें घर में छुपकर रोती हैं, ताकि पड़ोसन तक न सुन सके।

आसिक चोंजे तिनके, थिए पिरी उतां कुरबान।
सए भते मासूक जा, सुख गुझां गिंने पांण।।८।।

आशिक उसे कहते हैं जो प्रीतम पर कुर्बान हो जाए और हर तरह से अपने माशूक का एकांत में सुख ले।

जे कोडी पोन कसाला, त करे न के के जांण।
गिंनी कायम सुख धणीयजा, बोले ना के सांण।।९।।

जो करोड़ कष्ट आएं, तो भी वह किसी को नहीं बतलाती। वह अपने धनी के अखण्ड सुख प्राप्त करने पर किसी से नहीं कहती।

गिंनी गुझां सुख पिरनजा, रहे मंझ सैयन।
पांण गुझ मासूक जो, न बुझाए बियन।।१०।।

अपने प्रीतम के छिपे सुखों को लेती हैं और सहेलियों में रहती हैं। फिर भी प्रीतम की छिपी बातें सहेलियों को नहीं बतातीं।

तिंनी के पण न चोए, जे हिन सुखज्यूं आईन।
त चुआं कुजाडो तिनके, जे बाहेर धांऊं पाईन।।११।।

उनको भी यह बातें नहीं बतातीं जो इस सुख की लेने वाली हैं। तो फिर ऐसी सखियों को क्या कहूं, जो बाहर मैदान में जाकर चिल्लाती हैं।

मासूक कोठे पांण के, पांण भायूं हित रहूं।
गिंनी गुझ सुख मासूक जो, दुनियां के चऊं।।१२।।

श्री राजजी महाराज हमको बुलाते हैं, परन्तु हम यहां खेल में रहना चाहते हैं। श्री राजजी महाराज के गुझ (गुह्य) सुखों को लेकर दुनियां में बताते हैं।

कडीं आसिक हेडी न करे, कांध कोठींदे पांहीं रहे।
सुख छडे बका धणीयजा, डुख कुफरमें पए।।१३।।

आशिक ऐसा कभी नहीं करतीं कि पति के बुलाने पर न जाएं और अपने अखण्ड सुखों को छोड़कर झूठे दुःख में पड़ी रहें।

Nijanand App

जे के वलहो होए मासूक, तेहजा वलहा लगे वैण।
से कीं डिए डुझणे, जे वलहो होए सैण।। १४ ।।

जिसको अपना प्रीतम प्यारा हो, उसे अपने प्रीतम के वचन भी प्यारे लगते हैं। जिसे अपना प्रीतम प्यारा है, वह बात अपने दुश्मनों को क्यों बतलाएगी ?

आसिक कडीं न करे, हेडी अवरी गाल।
चोणों गुझ लोकन के, पाए विछोडो नूरजमाल।। १५ ।।

ऐसी उलटी बात आशिक रूहें कभी नहीं करतीं कि धनी से बिछुड़ने पर धनी की छिपी बातें दूसरों को बताती फिरें।

आसिक गुझ मासूक जो, गिंने थी रोए रोए।
डिसो उंधी अकल आसिक जी, बिंजी बियन के चोए।। १६ ।।

आशिक रूहें अपने माशूक धनी के सुखों को रो-रोकर लेती हैं। फिर देखो हम आशिक रूहों की ऐसी उल्टी बुद्धि हो गई कि हम दूसरों के सामने जाकर अपने पति की बातें करती हैं।

हे निपट निवरयूं गालियूं, थिएय्यूं पांण हथां।
जेडी थेई रांदमें पांण से, हेडी थेई न के मथां।। १७ ।।

यह निश्चित ही निर्लज्जता की बातें अपने से हो गई हैं। जैसी गलती हमसे खेल में हो गई है, ऐसी गलती आज तक किसी ने नहीं की।

आसिक चाए पांण के, हेडी करे न कोए।
कोठी न वंजे कांधजी, सा निखर भाइजा जोए।। १८ ।।

जो स्त्री (रूह) अपने को आशिक कहती है वह ऐसी गलती कभी नहीं करती। जो स्त्री अपने धनी के बुलाने पर न जाए उसे निश्चित ही अविश्वासी (बेइतबार) औरत समझो।

गुझ पिरी जो आसिक, कडी न के के चोए।
जे पोन कसाला कोडई, त वर मंझाईं रोए।। १९ ।।

अपने प्रीतम की गुझ (गुह्य) बातों को आशिक कभी किसी से नहीं कहती, यदि करोड़ों दुःख भी पड़ जाएं तो अन्दर-अन्दर ही रोती है।

हिक गुझ केयोसी पधरो, ब्यो कोठींदे न वेयूं।
हेडी हिकडी कोए न करे, से पांण हथां बए थेयूं।। २० ।।

एक तो हमने धनी की गुझ (गुह्य) बातें जाहिर कीं, दूसरे बुलाने से नहीं गई। ऐसी गलती कोई एक भी नहीं करता जो अपने हाथ से दोनों हुईं।

हेडी पांण के न घटे, पांण चायूं अर्सज्यूं।
जे सहूर करे डिठम, त हेडो जुलम करिएय्यूं।। २१ ।।

ऐसी बात हमसे नहीं होनी चाहिए थी, क्योंकि हम परमधाम की कहलाती हैं। विचार करके देखा, तो लगता है हमसे बड़ी भारी भूल हो गई है।

Nijanand App

पांण चऊं कूडी दुनियां, ते में हेडी केई न के।
उलट्यूं बेअकल्यूं, थेयूं पांण सचीय से।। २२ ।।

हम कहते हैं कि दुनियां झूठी है। इस दुनियां में कोई ऐसे नहीं करता जैसे उलटी बेअक्ली की बात हम सच्ची रूहों से हो गई है।

जडे गुणा डिठम पांहिजा, द्रिनिस घणूं हिकार।
तरसी न्हारयम हक अडां, कियम पांण पुकार।। २३ ।।

जब मैंने अपने गुनाहों की तरफ देखा तो एक बार डर गई। फिर श्री राजजी की तरफ देखकर पुकार करने लगी।

गुणा डिठम पांहिजा, धणी जा आसांन।
उमर वेई धांऊं पांईदे, जफा डिठम जांण।। २४ ।।

मैंने अपने दोष देखे और धनी के एहसान देखे। फिर चिल्लाते-चिल्लाते अपनी उम्र बिता दी और जिससे बड़ा नुकसान उठाया।

किने न केयो कडई, हेडो अधम कम।
डिसी डोह पांहिजो, फिरी करियूं कीं जुलम।। २५ ।।

आज तक ऐसा नीच काम किसी ने नहीं किया कि अपना दोष देखकर के भी गुनाह करती फिरे।

डाई जोए कीं करे, डिसी अंखिएं डोह।
जी जांणे तीं करे, मथे हुकम धणी जो।। २६ ।।

समझदार स्त्री अपने दोष आंखों से देखकर ऐसी गलती नहीं करती। धनी के हुकम पर जैसा भी हो चलती है।

पांण फिरी जा न्हारियां, त गाल थेई हथ धणी।
हित बे केहजो न हल्ले, जे करे दानाई घणी।। २७ ।।

हम दुबारा सोच-विचारकर देखते हैं तो यह बात श्री राजजी के हाथ में मालूम होती है। यहां दूसरे किसी का नहीं चलता चाहे कितनी भी चतुराई करें।

न्हारयम इलम धणीय जे, सभ हुकमें केयो ख्याल।
बिओ कोए न कितईं, रे हुकम नूरजमाल।। २८ ।।

जब धनी के इलम से देखा तो पता चला यह सब हुकम का खेल है। बिना धाम धनी के हुकम के दूसरा कोई कहीं नहीं है।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे न्हारयम दिल धरे।
हे पण गुणो खुदीय जो, जे फिरी न्हारयम सहूर करे।। २९ ।।

जब मैंने अपने गुनाहों को दिल में विचारकर देखा, तो यह भी गुनाह अपने अहंकार का पाया।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे थेयम जांण।
गुणा डिठम से पण खुदी, तरसीस पसी पांण।। ३० ।।

हमने अपने गुनाहों को देखा। जब सहूर आया, तब मैंने अपने गुनाह देखे, तो यह अहंकार का भाव भी देखकर मैं डर गई।

Nijanand App

गुणा केयम अजांणमें, गुणा डिठम मय अजांण।
दम न चुरे रे हुकम, जडे धणी पूरी डिंनी पेहेचान।। ३१ ।।

मैंने गलतियां अनजाने में की हैं। अपने गुनाहों को भी देखा तो अनजाने में ही देखा, क्योंकि जब धनी ने पूरी पहचान करा दी तो पता चला कि धनी के हुकम के बिना कुछ नहीं होता।

जांण गिडम से पण खुदी, आंऊं जुदी थियां हिनसे।
जुदी रहां त पण खुदी, खुदी किए न निकरे हिनमें।। ३२ ।।

मैंने जान लिया कि 'मैं' कहना ही अहंकार है, तो इसलिए इससे दूर हो जाऊं। यह 'मैं' भी गुनाह भरा है। किसी तरह से भी यह 'मैं' अहंकार नहीं निकलता।

महामत चोए हे मोमिनों, कोई कितईं न धणी रे।
फिरी फिरी लख भेरां, न्हारयम सहूर करे।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! धनी के बिना कहीं कुछ नहीं है। मैंने फिर से लाख बार देखकर विचार कर लिया है और यही नतीजा निकाला।

|| प्रकरण || १० || चौपाई || ४७० ||

खुदीजी पेहेचान

लखे भते न्हारयम, खुदी वंजे न किये केई।
हे मूर मंझा कीं निकरे, जा कांधे डेखारई बेई।। १ ।।

मैंने लाखों तरह से देखा, परन्तु यह मैखुदी (अहंभाव) किसी तरह से निकलती नहीं। यह मूल से निकले भी कैसे? धनी ने हमें अपने अतिरिक्त दूसरा कुछ दिखाया है तो यह मैखुदी (अहंभाव) माया ही है।

जे घुरां इस्क, त हित पण पसां पांण।
हे पण खुदी डिठम, जडे थेयम हक पेहेचान।। २ ।।

मैं इश्क मांगती हूं तो इसमें भी मैखुदी आ जाती है। जब श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई तो भी मैखुदी आ गई।

हक पेहेचान के के थेई, हित बिओ न कोई आए।
जे कढे बारीकियूं खुदियूं, डे थो हक सांजाए।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की पहचान किनको हुई? यहां कोई दूसरा है ही नहीं जो मैखुदी की बारीकियों को निकाल दे और श्री राजजी की पहचान करा दे।

तन पांहिजा अर्समें, से तां सूतां निद्रमें।
जागे थो हिक खावंद, ही निद्रडी आं दी जे।। ४ ।।

हमारे मूल तन परमधाम में फरामोशी में हैं, केवल एक श्री राजजी महाराज जागृत हैं, जिन्होंने यह माया दी है।

डेई रूहें के निद्रडी, डिखारयांई हे रांद।
हे केर डिसे थी रांद के, हित को आए हुकम रे कांध।। ५ ।।

उन्होंने रूहों को नींद देकर खेल दिखाया है। यहां पर खेल को अब कौन देख रहा है? क्या धनी के हुकम के बिना और कोई है?

Nijanand App

पांण तां सुत्युं अर्स में, तरे धणी कदम।
जे रमे रमाडे रांदमें, ब्यो कोए आय रे हुकम।। ६ ।।

हम तो परमधाम में श्री राजजी के चरणों में सोए हैं। खेल में जो खेलते या खिला रहे हैं, वह सब धनी के हुकम के बिना कोई नहीं है।

धणी या रांद बिच में, पडदो तो वजूद।
पुठ डेई हकके ही पसो, हे जो न्हाए कीं नाबूद।। ७ ।।

धनी और खेल के बीच तेरे तन का परदा है। तुम श्री राजजी महाराज को पीठ देकर झूठे खेल की तरफ देख रही हो। जो मिटने वाला है या नाबूद है।

हित हुकम हिकडो हकजो, उनहीं हकजो इलम।
हुकम इलम या रांद के, पसो बेठ्यूं तरे कदम।। ८ ।।

यहां केवल श्री राजजी महाराज का एक हुकम है और उन्हीं का ही इलम है। हुकम, इलम या खेल को श्री राजजी के चरणों तले बैठकर तुम देख रही हो।

चोए इलम कुंजी अंईं, पट पण आयो अंईं।
अकल आंजी अगरे, पसो उलटी या सईं।। ९ ।।

इलम कहता है—हे मोमिनो! तुम ही परदा हो। तुम ही कुंजी हो और जागृत बुद्धि का ज्ञान भी तुमको दे दिया है। अब इसे सीधा देखो या उलटा देखो।

हे रांद हुकम इलमजी, पांण के सुतडे डिखारे।
खिल्लण बिच अर्स जे, पांण के रांद्यूं थो कारे।। १० ।।

यह खेल ही हुकम और इलम का है जो हमको सोता हुआ नींद में दिखाता है। परमधाम में हमारे ऊपर हंसने के लिए हमें यह खेल भुलाता है।

हित बिओ कोए न कितईं, सभ डिसे हुकम इलम।
जे उडे नाबूद हुकमें, त पसो बेठ्यूं तरे कदम।। ११ ।।

यहां हुकम और इलम के बिना दूसरा कोई कहीं दिखाई नहीं देता। अगर हुकम से यह सारा संसार उड़ जाए तो हम श्री राजजी के चरणों के तले बैठे मिलेंगे।

धणी द्वार डिंनो असां हथमें, बिओ इलम डिंनाऊं जांण।
त कीं सहूं आडो पट, को न उपट्यो पांण।। १२ ।।

हे धनी! आपने परमधाम का दरवाजा हमारे हाथ में दे दिया है और अपनी पहचान का इलम भी दिया है। अब मैं आपके बीच में परदा कैसे सहन करूं? क्यों न दरवाजे को खोल दूं?

जे रे हुकम पट खोलियां, त द्रजां खुदी जे गुने।
न तां कुंजी डिंनाऊं हथ आसिक, सा मासूक विछोडो कीं सहे।। १३ ।।

जो बिना हुकम के परदा खोल दूं तो मैखुदी के गुनाह से डरती हूं। वरना हम आशिक रूहों के हाथ जो कुंजी दे दी है, तो हम आपका वियोग कैसे सहन करें?

Nijanand App

जे होयम जरा इस्क, त न पसां खुदी हुकम।
पण हिक न्हाएम इस्क, ब्यो पसां आडो हुकम इलम।। १४ ।।

जो थोड़ा सा भी इश्क होता, तो मैं हुकम की तरफ न देखती। यहां पर इश्क है नहीं और दूसरे हुकम और इलम को आड़ा खड़ा देखती हूं।

न तां जे दर उपटियां, पसण धणी रेहेमान।
कीं न्हारियां वाट हुकमजी, धणी डिंनी कुंजी पेहेचान।। १५ ।।

नहीं तो आपने जो दरवाजा मेहरबानी से खोल दिया है, तो आपके दर्शन के लिए हुकम की तरफ क्यों देखूं? आपने तारतम ज्ञान की कुंजी भी दे दी है और पहचान भी करा दी है।

सुकेमें डियां कीं डुबियूं, जे अचिम जरा इस्क।
त हुकम खुदी न्हाए गुणो, पट दम न रखे बेसक।। १६ ।।

यदि जरा सा भी इश्क आ जाए तो हुकम और खुदी के लिए कोई गुनाह नहीं लगेगा। एक पल में परदा खोल दूंगी, परन्तु इश्क के बिना सूखे में डुबकियां कैसे लगाऊं?

इस्क मंगां त गुणो, खुदी पण गुनेगार।
हुकम इलम जे न्हारियां, त आऊं बंधिस बिंनी पार।। १७ ।।

इश्क मांगती हूं तो गुनाह लगता है। अहंकार भी गुनहगार बनाता है। हुकम और इलम को जो देखती हूं, तो मैं दोनों तरफ से बंधी हूं।

जे सहूर करे न्हारियां, त खुदी मंगण तरे हुकम।
त दर उपटे पांहिजो, गडजां को न खसम।। १८ ।।

विचार करके देखती हूं तो मेरे द्वारा मांगना भी हुकम से ही होता है। तो फिर अपना दरवाजा खोलकर श्री राजजी से क्यों न मिल जाऊं?

खुदी गुणो हुकमें, घुरां कुछां हुकम।
पट लाहियां या जे करियां, सभ हुकमें चयो इलम।। १९ ।।

अहंकार गुनाह है। यह सब हुकम से है। मांगती हूं, बोलती हूं, तो भी हुकम से। परदा खोलती हूं या जो कुछ भी करती हूं सब हुकम से ही होता है। ऐसा आपका इलम हमें बताता है।

हित खुदी न गुणो के सिर, दर उपट या ढक।
पस पिरी या रांद के, आखिर ईं चोए इलम हक।। २० ।।

यहां पर अहंकार का दोष किसी के सिर नहीं है। दरवाजा खोलो या बन्द रखो। धनी को देखो या खेल को देखो। अन्त में श्री राजजी महाराज का इलम यही कहता है।

सभ डिंनो दिल मोमिन जे, जो मोमिन दिल अर्स।
पस पाण पांहिजे दिलमें, दिल मोमिन अरस-परस।। २१ ।।

आपने मोमिनों के दिल में सब कुछ दे दिया है। मोमिनों के दिल को अर्श किया है। हे धनी! अब अपनी तरफ अपने दिल को देखो। हम मोमिन आपके दिल में हैं। आप हमारे दिल में हैं।

Nijanand App

अर्स दिल मोमिन जो, जे पसे अर्स मोमिन।
चाहिए कोठियां हक अर्समें, त तो पेरो न्हाए ए तन।। २२ ।।

मोमिनों का दिल ही अर्श है। मोमिन ही परमधाम को देखते हैं। जब श्री राजजी महाराज मोमिनों को परमधाम बुलाते हैं तो उनके संसार के तन पहले ही छूट जाते हैं।

महामत चोए हे मोमिनों, धणिएं पूरी केई खिल।
पिरी पसो या रांद के, हक बेठो अर्स तो दिल।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने पूरी हंसी की है। अब खेल को देखो या धनी को देखो। श्री राजजी महाराज तुम्हारे दिल को अर्श करके बैठे ही हैं।

|| प्रकरण || ११ || चौपाई || ४९३ ||

हुकमजी पेहेचान

ताडो कुंजी ना दर उपटण, समझाए डिंनी सभ तो।
बेठा आयो मूं दिलमें, जीं जांणो तीं गडजो।। १ ।।

न ताला है, न कुंजी है, न कोई दरवाजा खोलना है। यह बात आपने समझा दी है। आप मेरे दिल में ही आकर बैठ गए हैं। अब जैसे जानो वैसे मुझे मिलो।

सेहेरग से ओडडो, आडो पट न द्वार।
उघाड़िए अंख समझजी, डिसंदी न डिसे भरतार।। २ ।।

आपने अपना ठिकाना सेहेरग से नजदीक बताया है। जिसके बीच न कोई दरवाजा है, न परदा है। आपने हमारी समझ की आंखें खोल दी हैं। जिससे देखते हुए भी, हे धनी! मैं आपको नहीं देख पा रही हूं।

हुकम इलम खेल हिकडो, ब्यो कोए न कितई दम।
हित रूह न कांए रूहनजी, जे कीं थेयो से सभ हुकम।। ३ ।।

यह खेल हुकम और इलम का है। यहां दूसरा कुछ भी नहीं है। यहां किसी की रूह आई ही नहीं है। जो कुछ हुआ है, सब हुकम से हुआ है।

पांहिज्यूं सुरत्यूं हुकम, ही रांद डेखारे हुकम।
रमे रांद मोहोरा हुकमें, डेखारे तरे कदम।। ४ ।।

हमारी सुरता हुकम से ही है। खेल भी हुकम दिखा रहा है। यह त्रिदेव भी आपके हुकम के तले खड़े खेल दिखा रहे हैं।

जे अरवाएं अर्स जी, से सभ हकजी आमर।
असां हुज्जत गिडी अर्स जी, अग्यां बेठ्यूं हक नजर।। ५ ।।

हम जो परमधाम की रूहें हैं, वह श्री राजजी महाराज के ही हुकम के अधीन हैं। हमने भी परमधाम का दावा ले रखा है, जबकि हम मूल-मिलावे में श्री राजजी के चरणों तले सामने बैठी हैं।

अरवा असां जी आमर, गुण अंग इंद्री आमर।
असीं डिसूं सभ आमर के, रांद डिखारे पट कर।। ६ ।।

हमारी सुरता हुकम के अधीन हैं। गुण, अंग, इन्द्रियां भी हुकम की है। मैं जो देखती हूं सब हुकम है। यह हुकम ही परदा डालकर खेल दिखला रहा है।

Nijanand App

हित अचे अरवा अर्स जी, त उडे चौडे तबक।
हुकमें नाम धरायो रूहन जो, हे हुकम केयो सभ हक।। ७ ।।

यहां परमधाम की रूहें आएं, तो यह चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड ही उड़ जाएगा। यहां हुकम ने ही हम रूहों का नाम रखा है और धनी के हुकम ने ही सब कुछ किया है।

कूड न अचे अर्स में, रूह माधा न रहे कूड दम।
न्हारयम अंतर मंझ बाहेर, कित जरो न रे हुकम।। ८ ।।

परमधाम में झूठ आ नहीं सकता। रूहों के सामने एक पल भर के लिए भी झूठ का ब्रह्माण्ड खड़ा रह नहीं सकता। इसे अन्दर-बाहर से देखा तो हुकम के बिना कुछ भी नजर नहीं आया।

डिठो डिखार्यो हुकमें, असीं थेयां हुकम।
न्हाए न थ्यो न थींदो, कीं धारा हुकम खसम।। ९ ।।

हुकम ने ही हमें खेल दिखलाया है। हुकम से ही हमने देखा है। हम भी हुकम से ही बने हैं। यह झूठा संसार न था और न हुकम के बिना होगा।

हुकमें डिखार्यो हुकम के, ते हुकमें डिठो हुकम।
भिस्त दोजख थेई हुकमें, आखिर सुख थेयो सभ दम।। १० ।।

हुकम ने ही खेल दिखाया है और हमारी रूहों के तन जो हुकम के स्वरूप हैं, खेल देख रहे हैं। बहिश्त और दोजख भी सब हुकम से होती हैं। आखिरत में सब जीवों को बहिश्तों के सुख मिलने हैं।

नाला रूहें फरिस्ते जा, धर्या हक आमर।
पुंना पांहिजी निसबतें, हुकमें पुजाया उपटे दर।। ११ ।।

श्री राजजी के हुकम ने ही हम रूहों का और फरिश्तों का नाम रखा है। हमें फिर अपने सम्बन्ध के अनुसार ही दरवाजा खोलकर अपने-अपने घर पहुंचाया।

असीं उथी बेठां अर्समें, असां के हुकमें डिंनों याद।
हुकमें हुकम खेल डिखारियो, हुकमें हुकम आयो स्वाद।। १२ ।।

हम परमधाम में उठकर बैठ गए, जब हुकम ने हमें परमधाम की याद दिलाई। हुकम ने हुकम को खेल दिखलाया। हुकम से ही हुकम को स्वाद मिला।

हे बारीक गाल्यूं हुकम ज्यूं, हुकम थेयो सभमें हक।
असीं अर्समें सिर गिंनी करे, केयूं गाल्यूं बेसक।। १३ ।।

यह हुकम की बारीक बातें हैं। सबके अन्दर हुकम समाया है। हमने परमधाम में अपने सिर पर हुकम लेकर यह सब बातें की हैं।

असां अर्स न छड्यो, धारा थेयासीं बेसक।
रूहें न आयूं रांदमें, असां चई गाल मुतलक।। १४ ।।

हमने परमधाम को नहीं छोड़ा और परमधाम से अलग भी हुए। रूहें खेल में आई नहीं हैं और खेल की बातें भी हम घर उठने पर करेंगी।

Nijanand App

हे भत सभ हुकमें केई, रांद डेखारी खिलवत में घर।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिल गुझांदर।। १५ ।।

यह सब कारीगरी हुकम की है। घर में मूल-मिलावा में बिठाकर खेल दिखलाया। परमधाम की बातें तथा श्री राजजी के दिल की गुझ (गुह्य) बातें भी खेल में बताई।

गाल्यूं सभे रांद ज्यूं, थींद्यूं मय खिलवत।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत।। १६ ।।

अब खेल की सब बातें मूल-मिलावा में होंगी और खेल के सुख मूल-मिलावा में मिलेंगे। जिस तरह से परमधाम के सुख खेल में लिए हैं, वैसे ही खेल के सुख मूल-मिलावा में मिलेंगे।

असां न छड्यो अर्स के, रांदमें पण आयूं।
थेयो विछोडो अर्समें, रांदमें पण न आयूं।। १७ ।।

हमने परमधाम नहीं छोड़ा और खेल में भी आये। परमधाम से वियोग भी हुआ और खेल में आये भी नहीं।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे।
कारण वाद इस्क जे, डिंनाऊं बए हंद डिखारे।। १८ ।।

यह सब हिकमत हुकम की है, जो तरह-तरह से काम करता है। इश्क रब्द के कारण ही हमें दोनों ठिकाने दिखलाए।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर।
कीं चुआं वडाई हकजी, मूं धणी वडो कादर।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी साहेबी अच्छी तरह से दिखलाई। श्री राजजी महाराज की बड़ाई कैसे कहूं? मेरे धनी सब प्रकार से समर्थ हैं।

महामत चोए हे मोमिनों, पांण के बिहारे तरे कदम।
खिल्ल कंदा वडी अर्समें, जा केई हुकम इलम।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अपने को चरणों के तले बिठाकर हुकम और इलम ने परमधाम में हमारी बड़ी हंसी उड़ाई।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ५१३ ॥

हक हादी रूहोंजी सिफत

कांध रूह भाईयां सिफत करियां, तोहिजी हित थिए न सिफत किएं केई।
से न्हारयम जडे बेवरो करे, आंऊं उरझी ते में रही।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! मेरी रूह चाहती है कि मैं आपकी सिफत करूं। आपकी सिफत यहां कोई नहीं कर सकता। जब मैं विचार करके देखती हूं तो स्वयं इसमें उलझ जाती हूं।

हे दिलजी गाल के से करियां, रूहजी तूं जांणे।
कुछण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणे।। २ ।।

यह दिल की बातें किससे कहूं? मेरी रूह की आप सब जानते हो। कहने के लिए अब कुछ बाकी रहा ही नहीं। हे धनी अब जैसा कहो वैसा करें।

Nijanand App

उताइयां आलम में, मूं जेडी केई न कांए।
अजां तरसे मूं जिंदुओ, हे केही पर तोहिजी आए।। ३ ।।

आपने रूहों को खेल में उतारा। मेरे जैसी बड़ाई और किसी को नहीं दी। फिर भी मेरा जीव तरसता है। यह आपका कौन-सा नियम है?

पांण जेड्यूं डिंने दातडयूं, से डिठ्यूं मूं नजर।
अजां मंगाइए मूं हथां, मूं कांध एहडो कादर।। ४ ।।

आपने जो उदारता दिखाई है, मेहर की है, वह मैंने नजर से देखी (मन में विचारा)। आप सब तरह से समर्थ हैं, फिर भी मेरे से मंगवाते हो?

जे वड्यूं केइए हिन रांदमें, तिंनी ज्यूं केई कोडी सिफतूं कन।
से वडा मंगन खाक पेरनजी, असां अर्स रूहन।। ५ ।।

संसार में आपने जिसको बड़ा (त्रिदेव) बनाया है, उनकी लोग करोड़ों तारीफें करते हैं। गुणगान गाते हैं। यही त्रिदेव हम रूहों के चरणों की धूलि मांगते हैं।

सिरदार ते रूहन में, मूंके केइए कांध।
वडी वडाई डिनिएं, अची मय हिन रांद।। ६ ।।

ऐसी रूहों के बीच में, हे धनी! आपने मुझे सिरदार बनाया। खेल में आकर हमें बड़ी बुजरकी (बड़प्पन) दी।

हे जे वड्यूं केइए हिन आलममें, हिनज्यूं सिफतूं तिंनी न पुजन।
से वडा वड्यूं सिफतूं करीन, पुजे न खाक मोमिन।। ७ ।।

इस संसार में आपने जिनको बड़ा बनाया है, इनकी कुल सिफत मोमिनों की चरण धूलि की सिफत के समान नहीं है। यह संसार के त्रिदेव मोमिनों की सदा महिमा गाते हैं।

ते में वडी मूंके केइए, मूंजी सिफत न थिए मय रांद।
जे ए सिफत न पुजे, त सिफत तोहिजी करियां कीं कांध।। ८ ।।

इन मोमिनों के बीच में आपने मुझे बड़ा बनाया। खेल में मेरी सिफत नहीं हो सकती है, तो हे धनी आपकी सिफत कैसे करूं?

जा न्हाए अकल हिन आलम में, सा डिंनिएं मूंके मत।
जे से आंऊं सभ समझी, कायम आलम सिफत।। ९ ।।

जो बुद्धि इस संसार में नहीं है, वह जागृत बुद्धि आपने मुझे दी। उसी से मैंने अखण्ड परमधाम की और संसार की सारी हकीकत को जाना।

गाल आंजी जाणूं असीं, जे डिंन्यूं असां के इलम।
कांध हित न भेंणी कुछण, गाल्यूं घरे थींद्यूं खसम।। १० ।।

आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया, तो उससे मैं अब आपकी बातों को जानती हूं। अब, हे धनी! यहां बोलने के लिए कुछ रहा ही नहीं। अब जो भी बातें हैं वह घर में होंगी।

Nijanand App

महामत चोए मूं धणी, मूंके वडी डेखारई रांद।
कर मूंसे मिठ्यूं गालियूं, मूंजा मिठडा मियां कांध॥ ११ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! आपने मुझे बहुत बड़ा खेल दिखाया। अब, हे मेरे रसिया! आप मेरे से रस भरी मीठी-मीठी बातें करो।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ५२४ ॥

आगे के तीन प्रकरण सिन्धी के हिन्दुस्तानी में किए हैं।

आसिक के गुनाह

सुनो रुहें अर्स की, जो अपनी बीतक।
जो हमसे ल्टी भई, ऐसी करे न कोई मुतलक॥ १ ॥

हे मेरी परमधाम की रूहो! सुनो, जो हम पर बीती है। जैसी उलटी बात हमसे हो गई है, ऐसी कोई नहीं करता।

कहूं तिनका बेवरा, सुनियो कानों दोए।
ए देख्या मैं सहूर कर, तुम भी सहूर कीजो सोए॥ २ ॥

उनका विवरण बताती हूं। दोनों कानों से ध्यान से सुनना। मैंने विचार कर देखा है। तुम भी विचार करना।

पीछे जो दिल में आवे साथ के, आपन करेंगे सोए।
भूली रोवे तेहेकीक, गए हाथ पटकते रोए॥ ३ ॥

पीछे जो सुन्दरसाथ के दिल में आएगी हम वही करेंगे। जिससे गलती होती है, वह निश्चित ही हाथ पटक कर रोता है।

तिस वास्ते क्यों भूलिए, हाथ आए अवसर।
जो पीछे जाए पछतावना, क्यों आगे देख न चलें नजर॥ ४ ॥

इस वास्ते अब सुन्दर अवसर जो हाथ में आया है उसमें गलती न करें। पहले से ही सावधान होकर आगे देख कर चलो, ताकि पीछे पछताना न पड़े।

अपनी गिरो आसिक, कहावत हैं मिने इन।
चलना देख के केहेत हों, ए अकल दई तुमें किन॥ ५ ॥

हम रूहें इस संसार में धनी की आशिक कहलाती हैं। मैं यहां का चलना (व्यवहार) देखकर कहती हूं। तुमको यह अक्ल किसने दी?

लेनी हकीकत हक की, और देनी इन लोकन।
आसिक को ए उलटी, जो करत हैं आपन॥ ६ ॥

श्री राजजी महाराज की हकीकत को लेकर संसार के लोगों को बताना आशिक का काम नहीं है, जो हम कर रहे हैं।

Nijanand App

मीठा गुझ मासूक का, काहूं आसिक कहे न कोए।
पड़ोसी पण ना सुनें, यों आसिक छिपी रोए।।७ ।।

आशिक रूहें माशूक श्री राजजी महाराज की छिपी बातें किसी से नहीं कहतीं। यहां तक कि पड़ोसी भी सुन नहीं पाते, इस तरह से छिपकर रोती हैं।

आसिक कहिए तिन को, जो हक पर होए कुरबान।
सौ भांतें मासूक के, सुख गुझ लेवे सुभान।।८ ।।

आशिक उनको कहते हैं जो अपने प्रीतम पर कुर्बान हो जाएं और सौ तरीके से श्री राजजी महाराज के गुझ सुख लें।

जो पड़े कसाला कोटक, पर कहे न किनको दुख।
किसी सों ना बोलहीं, छिपावे हक के सुख।।९ ।।

भले ही करोड़ों कठिनाइयां आएं, पर वह अपने दुःख की बात किसी को नहीं कहतीं। वह अपने माशूक श्री राजजी महाराज के सुख छिपाकर रखती हैं, किसी से कहतीं नहीं।

गुझ सुख लेवे हक के, रहे सोहोबत मोमिन।
अपना गुझ मासूक का, कबूं कहें न आगे किन।।१० ।।

मोमिनों के साथ रहकर भी अपने माशूक के सुख एकान्त में लेती हैं और अपने धनी की गुझ (गुह्य) बातों को किसी के आगे नहीं कहतीं।

तिन आगे भी ना कहे, जो हक के खबरदार।
पर कहा कहूं मैं तिनको, जो बाहेर करें पुकार।।११ ।।

उनके आगे भी नहीं कहतीं जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं। मैं उनको क्या कहूं जो बाहर जाकर चिल्लाते हैं।

हक बोलावें सरत पर, आपन रेहेने चाहें इत।
लेवें गुझ मासूक का, कहें दुनियां को हकीकत।।१२ ।।

अपने धनी समय पर परमधाम बुलाते हैं, पर हम खेल में रहना चाहते हैं। श्री राजजी महाराज की छिपी बातों को लेकर दुनियां को उनकी हकीकत बताते हैं।

ऐसी आसिक कबूं ना करे, पीछे रहे बुलावते हक।
दुख कुफर में पड़ के, सुख बका छोड़े इस्क।।१३ ।।

आशिक कभी ऐसी गलती नहीं करते कि प्रीतम बुलाएं और वह न जाएं। इस झूठे संसार के दुःख में पड़कर अखण्ड परमधाम के इश्क का सुख छोड़ दें।

प्यारा जिनको मासूक, तिनके प्यारे लगें वचन।
सो कबूं न केहेवे और को, मासूक प्यारा जिन।।१४ ।।

जिनको अपने प्रीतम प्यारे होते हैं, उनको अपने धनी की वाणी ही प्यारी होती है। जिसे अपना धनी प्यारा लगता है, वह किसी से कहती नहीं है।

Nijanand App

आसिक कबूं ना करे, ऐसी उलटी बात।
केहेने सुख लोकन को, पाए विछोहा हक जात।। १५ ।।

आशिक रूह कभी भी ऐसी उल्टी बात नहीं करती जो अपने पति से बिछुड़कर संसार के लोगों को अपना सुख बताती फिरे।

आसिक गुझ मासूक का, सो लेवत है रोए रोए।
ऐसी उलटी अकल आसिक की, सुख कहे औरों को सोए।। १६ ।।

आशिक रूहें अपने माशूक के सुखों को रो-रोकर याद करती हैं, परन्तु हमारी यहां ऐसी उल्टी अक्ल हो गई है कि हम अपने धनी के सुखों को दूसरों को सुनाते फिरते हैं।

ए निपट बातें रिजालियां, सो आपन करी दिल धर।
जैसी हुई हमसे खेलमें, तैसी हुई न किनके सिर।। १७ ।।

यह बातें निश्चित ही बड़ी शर्मनाक हैं, जो हमने अपने दिल से कही हैं। जैसी गलती हमने यहां खेल में की है, ऐसी किसी ने आज तक नहीं की।

आसिक कहावे आपको, फेरे बोलावना भरतार।
जाए न बोलाई खसम की, सो औरत बे-एतबार।। १८ ।।

अपने को आशिक कहलाकर पति के बुलावे को लौटा देना अच्छा नहीं है। जो औरत खसम के बुलाने पर नहीं जाए वह औरत विश्वास की पात्र नहीं है।

गुझ मासूक का आसिक, सो केहेना न कासों होए।
जो कई पड़ें कसाले, तो बाहेर माहें रोए।। १९ ।।

आशिक रूहें अपने माशूक श्री राजजी की छिपी बातें किसी से नहीं कहतीं। यदि करोड़ों कष्ट भी आएं तो अन्दर ही अन्दर रोती हैं।

एक तो गुझ जाहेर किया, और गैयां न बोलावते सोए।
ऐसी एक भी कोई ना करे, सो आपन करी दोए।। २० ।।

हमने एक तो श्री राजजी की छिपी बातों को जाहिर किया और दूसरा बुलाने पर नहीं गए। ऐसी गलती तो कोई एक भी नहीं करता। हमने दो-दो गलतियां कीं।

रूहों को ऐसी न चाहिए, अर्स की कहावें हम।
सहूर करके देखिया, तो हम किया बड़ा जुलम।। २१ ।।

हम परमधाम की अंगनाएं हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। अब विचार कर देखा कि हमने बड़ा जुल्म किया है।

हम कहें झूठी दुनियां, तिनमें ऐसी करे न कोए।
जो उलटी हम सांचों से भई, ऐसी झूठोंसे न होए।। २२ ।।

हम कहते हैं कि दुनियां झूठी है। इस झूठी दुनियां में भी कोई ऐसा नहीं करता। जो गलती हम सच्चों ने की है, ऐसी गलती दुनियां के झूठे लोगों से भी नहीं होती।

Nijanand App

मैं देख तकसीर अपनी, पेहेले देख डरी एक बार।
देख डरी सामी हक, तब मैं किया पुकार।। २३ ।।

मैं अपनी गलती देखकर एक बार तो डर गई। श्री राजजी महाराज को सामने देखकर डरी। तब मैंने दुनियां में जाहिर कर दिया।

मैं देखे गुनाह अपने, हक के देखे एहसान।
उमर गई पुकारते, बीच हलाकी जहान।। २४ ।।

मैंने अपने गुनाहों को देखा और श्री राजजी के एहसानों को देखा। इस दुःखदाई दुनियां में चिल्लाते-चिल्लाते उम्र बीत गई।

कबहूं किनहूं ना किए, ऐसे काम अधम।
देख गुनाह अपने, फेर किए जुलम।। २५ ।।

ऐसे नीच काम इस दुनियां में किसी ने नहीं किए। मैंने अपने गुनाहों को देखा, तो लगा मैंने बहुत जुल्म किया है।

स्यानी जोरू क्यों करे, जान के गुनाह ए।
खावंद जाने त्यों करे, हुआ बस हुकम के।। २६ ।।

समझदार औरत जान-बूझकर गलती नहीं करती। उसका धनी जैसा जाने वैसा करे। वह तो सदा हुकम के अधीन होती है।

जो फेर देखें आपन, तो ए हुई हाथ धनी।
और किसीका ना चले, कोई करे स्यानप घनी।। २७ ।।

फिर से हम विचार करके देखें तो लगता है यह हकीकत श्री राजजी के हुकम से हुई है। चाहे कोई कितनी ही चतुराई करे, यहां किसी का कुछ नहीं चलता।

मैं देख्या इलम हक का, तो ए सब हुकम के ख्याल।
और ना कोई कहूं, बिना हुकम नूरजमाल।। २८ ।।

मैंने श्री राजजी के इलम से देखा तो पता चला कि यह खेल श्री राजजी के हुकम का है। श्री राजजी के हुकम के बिना यहां और कुछ भी नहीं है।

ए गुनाह देखे अपने, जब देख्या दिल धर।
ए भी गुनाह खुदीय का, जब फेर देख्या सहूर कर।। २९ ।।

जब दिल में विचार किया तो अपने गुनाह दिखाई देने लगे। जब फिर से विचार करके देखा तो यह गुनाह भी मैखुदी, अर्थात् अहंकार का रूप है, पाया।

गुन्हे भी अपने तब देखे, जब मैं हुई हुसियार।
देखी हुसियारी ए भी खुदी, डरी हुई खबरदार।। ३० ।।

जब मैं सावचेत (सतर्क) हुई तभी मुझे अपने गुनाह दिखाई पड़े। यह मैंने अपनी जो होशियारी बताई है, इसमें भी 'मैं' लगी है, जिससे मैं डरी और सावचेत हो गई।

Nijanand App

गुन्हे किए अजान में, गुन्हें देखे सो भी अजान।
दम न ले बीच हुकमें, जब हकें पूरी दई पेहेचान।। ३१ ।।

मैंने गुनाह अनजाने में किए और अनजाने में ही देखे। जब राजजी महाराज ने पूरी पहचान दे दी तो हुकम ने बीच में सांस भी नहीं लेने दिया।

पेहेचान लई सो भी खुदी, मैं न्यारी हुई तिनसे।
न्यारी होत सो भी खुदी, ए खुदी निकलत नाहीं मैं।। ३२ ।।

मैंने अपने आपको पहचान लिया। इसमें भी 'मैं' अहंकार का सूचक है। जिनसे मैं अलग हो गई। इसमें में भी 'मैं' शब्द आ गया। इस तरह से यह 'मैं' शब्द किसी तरह से निकलता ही नहीं।

महामत कहे ए मोमिनों, कोई नाहीं हक बिगर।
लाख बेर मैं देखिया, फेर फेर सहूर कर।। ३३ ।।

श्री महामति कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने बार-बार विचार करके लाख बार देखा तो पाया कि श्री राजजी महाराज के बिना कुछ है ही नहीं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ५५७ ।।

मैं खुदी की पेहेचान

मैं लाखों विध देखिया, कहूं खुदी क्योंए न जाए।
ए क्यों जावे पेड़से, जो दूजी हकें दई देखाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने लाखों तरह से देख लिया। यह मैखुदी किसी तरह से हटती नहीं। ठीक ही तो है। यह हटे कैसे? जब श्री राजजी ने ही इसे दूसरे रूप में (माया का रूप) दिखा दिया है।

जो मैं मांगों इस्क को, तो इत भी आप देखाए।
ए भी खुदी देखी, जब इलमें दई समझाए।। २ ।।

मैं जो इश्क मांगती हूं तो यहां भी मै खुदी दिखाई देती है। यह आपके इलम ने अच्छी तरह से समझा दिया है। इसमें भी मुझे मै खुदी दिखाई दी।

हक पेहेचान किनको हुई, इत दूसरा कौन केहेलाए।
ऐसी काढी बारीकी खुदियां, हक भी पेहेचान कराए।। ३ ।।

यहां श्री राजजी महाराज की पहचान किसको हुई है? दूसरा है ही कौन? खुदी की ऐसी बारीक बातें निकाल दें तभी श्री राजजी की पहचान होती है।

तन तो अपने अर्स में, सो तो सोए नींद में।
जागत हैं एक खावंद, ए नींद दई जिनने।। ४ ।।

अपने तन परमधाम में नींद में सोए पड़े हैं। एक श्री राजजी महाराज ही जागते हैं, जिन्होंने यह फरामोशी हमें दी है।

दे कर नींद रूहन को, खेल देखावत नजर।
तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिना हुकम कादर।। ५ ।।

रूहों को नींद देकर नजर के द्वारा खेल दिखाते हैं। तो फिर यह कौन खेल देख रहा है? क्या श्री राजजी के हुकम के बिना और कोई है भी?

Nijanand App

आपन सोए हैं अर्समें, तले हक कदम।
ए जो खेल खेलावे खेलमें, कोई है बिना हक हुकम।। ६ ।।

हम तो श्री राजजी के चरणों के तले सोए पड़े हैं। जो इस संसार में खेल खिला रहा है क्या इस संसार में श्री राजजी के हुकम के बिना कोई और है?

इत हुकम एक हक का, और हकै का इलम।
हुकम इलम या खेल को, देखो सोइयां तले कदम।। ७ ।।

यहां तो केवल श्री राजजी का एक हुकम है और उन्हीं का इलम है। यह खेल तो हुकम और इलम का है। हम तो परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले सोए पड़े हैं।

कहे इलम तुमहीं पट, तुमहीं कुंजी पट की।
कुल्ल अकल दई तुम को, देखो उलटी या सीधी।। ८ ।।

इलम कहता है, हे मोमिनो! तुम ही परदा हो। तुम ही कुंजी हो। जागृत बुद्धि का ज्ञान भी तुमको दे दिया है। अब इसे सीधा देखो या उलटा देखो।

बीच खेल और खावंद, पट तुमारा वजूद।
पीठ दे हक को ए देखत, जो ना कछू है नाबूद।। ९ ।।

खेल और श्री राजजी के बीच परदा तुम्हारे तन का ही है। तुम श्री राजजी महाराज को पीठ देकर इस नाचीज दुनियां को देख रहे हो।

ए खेल हुकम इलम का, हमें नींदमें देखावत।
करने हांसी अर्स में, खेल में भुलावत।। १० ।।

यह खेल हुकम और इलम का है जो हमें नींद में दिखाया जा रहा है। परमधाम में हमारे ऊपर हंसी करने के लिए हमें खेल में भुलाया जा रहा है।

इत दूसरा कोई कहूं नहीं, सब देख्या हुकम इलम।
जो ए उड़े नाबूद हुकमें, तो देखो बैठे आगे खसम।। ११ ।।

यहां दूसरा कोई कहीं नहीं है। सब जगह हुकम और इलम को ही देखा। यह नाचीज संसार श्री राजजी के हुकम से समाप्त हो जाए तो हम श्री राजजी के सामने बैठे दिखाई देंगे।

हकें द्वार दिया हाथ अपने, और दई इलम पूरी पेहेचान।
तो क्यों सहें आड़ा पट, क्यों न खोलें द्वार सुभान।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम का दरवाजा हमारे हाथ में दे दिया है और इलम से पूरी पहचान करा दी है। तो फिर यह परदा कौन सहन करे? क्यों नहीं दरवाजा खोलकर श्री राजजी के दर्शन करें?

जो पट खोलों हुकम बिना, लगत खुदी गन्हे डर।
ना तो हाथ कुंजी दई आसिक के, हक बिछोहा सहें क्यों कर।। १३ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के हुकम के बिना दरवाजा खोल देती हूं, तो मैखुदी का डर लगता है। वरना श्री राजजी महाराज ने हमारे हाथ में चाबी दे ही दी है, तो हम वियोग क्यों सहन करें?

Nijanand App

जो होए मुझपे इस्क, तो देखों न खुदी हुकम।
एक नाहीं मोपे इस्क, तो आड़ा देखों हुकम इलम।। १४ ।।

जो हमारे अन्दर जरा भी इश्क होता तो मैं, मैखुदी और हुकम की पहचान न करती। मेरे पास एक इश्क ही तो नहीं है जिसे हुकम और इलम ने छिपा रखा है।

न तो द्वार खोल के, आगे देखें न अर्स रेहेमान।
इत क्यों देखों राह हुकम की, हकें दई कुंजी पेहेचान।। १५ ।।

वरना दरवाजा खोल करके परमधाम में श्री राजजी महाराज के दर्शन न कर लेते? जब श्री राजजी महाराज ने तारतम ज्ञान की कुंजी और पहचान दे दी है, तो हुकम का रास्ता क्यों देखें?

गोते न खांऊं बिना जल, जो आवे इस्क।
तो हुकम खुदी ना कछू गुना, पट दम न रखे बेसक।। १६ ।।

यदि इश्क आ जाए तो फिर बिना जल के डुबकियां न लगानी पड़ें। फिर हुकम और अहंकार को कोई गुनाह नहीं लगता। श्री राजजी और मेरे बीच एक पल के लिए भी परदा न रहता।

इस्क मांगूं तो भी गुना, और खुदी ए भी गुनाह होए।
जो देखों हुकम इलम को, मोहे बांध लई बिध दोए।। १७ ।।

इश्क मांगती हूं तो गुनाह लगता है। यह मैखुदी भी अहंकार होता है। अब हुकम और इलम को देखो। मुझे दोनों तरफ से बांध रखा है।

ए देखो सहूर खुदी मांगना, ए दोऊ तले हुकम।
तो खोल दरवाजा अपना, क्यों न मिलों अपने खसम।। १८ ।।

विचार करके देखो तो मैखुदी और मांगना दोनों हुकम के अधीन हैं, तो फिर अपने घर के दरवाजे खोलकर अपने पति से क्यों न मिलें?

खुदी गुना सब हुकमें, मांगूं बोलूं सब हुकम।
पट खोलूं या जो करूं, सब हुकम कहे इलम।। १९ ।।

मैखुदी का गुनाह भी हुकम से लगता है। मैं जो बोलती भी हूं वह भी हुकम ही है। परदा खोलूं या जो कुछ करूं, यह सब हुकम ही है, ऐसा इलम कहता है।

इत खुदी न गुनाह किन सिर, या ढांप खोल तेरे हाथ।
देख खावंद या खेल को, हुकम इलम तेरे साथ।। २० ।।

यहां पर अहंकार का गुनाह किसी के सिर नहीं है, चाहे दरवाजा बन्द रखो या खोलो। श्री राजजी की तरफ देखो या खेल की तरफ। हुकम और इलम अब तेरे साथ हैं।

सब मोमिनों को सौंपिया, कह्या मोमिन दिल अर्स।
देख आप दिल विचार के, दिल मोमिन अरस-परस।। २१ ।।

अब मैंने सब मोमिनों सहित आपको सौंप दिया है और आप हम मोमिनों के दिल में अर्श करके बैठ गए हैं। अब आप हमको देखें और हम आपको देखें। हमारा और आपका दिल एकाकार हो गया है।

Nijanand App

दिल मोमिन का अर्स है, जो देखे अर्स मोमिन।
हक चाहें बैठाया अर्स में, तो तेरे आगे ही नहीं ए तन।। २२ ।।

मोमिनों का दिल अर्श है, इसलिए मोमिन ही अर्श को देखते हैं। श्री राजजी महाराज परमधाम में जब बिठाना चाहें, तो संसार के यह तन पहले ही समाप्त हो जाएंगे।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें हांसी करी पूरन।
देख खावंद या खेल को, ए कुंजी तेरा दिल मोमिन।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने हम पर पूरी हंसी की है। वह तुम्हारे दिल में बैठे हैं और तारतम ज्ञान की कुंजी भी तुम्हें दी है। अब तुम चाहे संसार को देखो, चाहे श्री राजजी को देखो।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ५८० ।।

हुकम की पेहेचान

ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप।
दिल अपने में हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप।। १ ।।

न कोई ताला है, न दरवाजा, न कुन्जी है, न खोलना है। यह बातें, हे मेरी रूह! श्री राजजी ने तुम्हें सब समझा दी हैं। अब अपने दिल में राजजी बैठे हैं। जैसा चाहो उनसे मिलो।

सेहेरग से नजीक, आड़ा पट न द्वार।
खोली आंखें समझ कीं, देखती न देखे भरतार।। २ ।।

श्री राजजी महाराज अब सेहेरग से नजदीक हैं। अब न कोई परदा है, न कोई दरवाजा है। तुम्हारी आत्मदृष्टि भी खोल दी है। फिर भी तू धनी को देखते हुए भी नहीं देखती है।

हुकम इलम खेल एकै, और कोई न कहूं दम।
इत रूह न कोई रूहन की, जो कछू होए सो हुकम।। ३ ।।

यह हुकम और इलम का ही एक खेल है। और यहां कुछ नहीं है। यहां परमधाम की कोई रूहें भी नहीं है। यहां जो कुछ भी है हुकम ही है।

अपनी सुरतें हुकम, खेलावत हुकम।
खेलत सामी हुकमें, ए देखावत तले कदम।। ४ ।।

अपनी सुरता हुकम से ही है। हुकम ही खेल खिला रहा है। हुकम से ही खेलते हैं। हुकम से पता चलता है कि परमधाम में चरणों तले बैठे हैं।

अरवाहें जो कोई अर्स की, सो सब हक आमर।
हम हुज्जत लई सिर अर्स की, बैठी आगूं हक नजर।। ५ ।।

परमधाम की जो भी रूहें हैं, वह सब राजजी के हुकम से ही है, जो हमारे नाम का दावा लिए हुए हैं। हम तो परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले सामने बैठी हैं।

Nijanand App

अरवा हमारी आमर, गुन अंग इंद्री आमर।
हम देखें सब आमर, खेल देखावत पट कर।।६।।

हमारी रूह, गुण, अंग, इंद्रियां सब हुकम से हैं। हम जो यह सब देखते हैं वह सब हुकम ही है। बीच में जो परदा डाल्कर खेल दिखा रहे हैं, वह भी हुकम ही है।

जो इत अरवा होए अर्स की, तो उड़ावे चौदे तबक।
रूहें नाम धराए हम, ऐसा हुकमें कर दिया हक।।७।।

यहां यदि परमधाम की रूहें हों, तो चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड ही उड़ जाए। श्री राजजी महाराज के हुकम ने ही हम रूहों के नाम रख दिये हैं।

झूठ न आवे अर्स में, सांच नजरों रहे न झूठ।
देख्या अंतर मांहें बाहेर, कछू जरा न हुकमें छूट।।८।।

परमधाम में झूठ नहीं आ सकता और हमारी नजर के सामने झूठ ठहर नहीं सकता। मैंने अन्दर बाहर सब तरफ से देखा। यहां हुकम के बिना कुछ भी नहीं है।

देख्या देखाया हुकमें, और हम भी भए हुकम।
ना हुआ ना है ना होएगा, बिना हुकम खसम।।९।।

हुकम ने ही देखा और हुकम ने ही दिखाया। हम भी जो यहां हैं सब हुकम के अधीन हैं। श्री राजजी महाराज के हुकम के बिना यहां न कुछ हुआ है, न होता है और न कभी होगा।

हुकमें देखाया हुकम को, तिन हुकमें देख्या हुकम।
भिस्त दोजख उन हुकमें, आखिर सुख सब दम।।१०।।

हुकम ने हुकम को दिखाया। हुकम ने हुकम को देखा। वक्त आखिरत को बहिश्त, दोजख तथा कायमी के सुख हुकम से ही मिलेंगे।

जिन नाम धराया हुकमें, रूहें फरिस्ते सिर पर।
पोहोंचे अपनी निसबतें, द्वार बका खोल कर।।११।।

हुकम ने ही ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि के नाम रखे हैं। हुकम के द्वारा ही दरवाजे खोल्कर अपने-अपने घर जाएंगे।

हम उठ बैठे अर्स में, हमको हुकमें दिया सब याद।
हुकमें हुकम खेल देखाया, सो हुकमें हुकम आया स्वाद।।१२।।

हम परमधाम में जब उठकर बैठ जाएंगे तो हुकम से ही हम सबको खेल की याद आएगी। हुकम ने हुकम को खेल दिखाया। हुकम से ही हुकम को खेल का स्वाद मिला।

यों मिहीं बातें कई हुकम की, हुआ हुकम सबमें एक।
अर्स में हम सिर ले उठे, सब सिर ले कहे विवेक।।१३।।

यह हुकम की बारीक बातें हैं। सबमें एक श्री राजजी का हुकम ही है। हम परमधाम में जागृत होकर उठेंगे तो विचारकर खेल की सब बातें करेंगे।

Nijanand App

हम जुदे न हुए अर्स से, और जुदे हुए बेसक।
हम रूहें खेल देख्या नहीं, और खेल की बातें करी मुतलक।। १४ ।।

हम परमधाम से अलग नहीं हुए और निश्चित रूप से अलग भी हुए हैं। हम रूहों ने खेल देखा नहीं है, परन्तु निश्चित रूप से खेल की बातें करेंगे।

इन विध सब हुकमें कर, खेल देखाया खिलवत अंदर।
बातें खिलवत की करीं खेलमें, जो गुझ हक के दिल भीतर।। १५ ।।

हुकम ने इस तरह से खेल में मूल-मिलावे के अन्दर की सब बातें बताईं, जिनको हमने खेल में जाहिर किया। यहां तक कि श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें भी जाहिर कर दीं।

और खेल की बातें सब, होसी बीच खिलवत।
लेसी खेलका सुख खिलवत में, लिया खेलमें सुख निसबत।। १६ ।।

अब खेल की सभी बातें परमधाम के मूल-मिलावा में होंगी। परमधाम में खेल के सुख लेंगे। ठीक उसी तरह से, जैसे परमधाम की निसबत के सुख खेल में लिए।

छोड़्या नहीं अर्स को, और खेलमें भी गैयां।
अन्तराए भी हुई अर्स से, और जुदियां भी न भैयां।। १७ ।।

हमने परमधाम छोड़ा नहीं और खेल में भी आए। वियोग भी परमधाम से हुआ और अलग भी नहीं हुए।

ए विध सब हुकम की, हुकमें किए बनाए।
वास्ते इस्क रब्द के, दोऊ ठौर दिए देखाए।। १८ ।।

इस तरह से यह सारी कारीगरी हुकम की है जो हुकम ने बना रखी है। इश्क रब्द (विवाद) के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने ही हमें संसार तथा परमधाम दोनों दिखाए।

और साहेबी अपनी, देखाई नीके कर।
क्यों कहूं बड़ाई हक की, मेरा खसम बड़ा कादर।। १९ ।।

हमें अपनी साहेबी भी अच्छी तरह से दिखाई। मेरे पति (धनी) इतने समर्थ हैं कि मैं उनकी बड़ाई कैसे करूं?

महामत कहे ए मोमिनों, हकें बैठाए तले कदम।
करसी हांसी बीच अर्स के, जो करी हुकमें इलम।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने अपने चरणों के तले बिठा रखा है। अब हुकम और इलम ने जो हकीकत हमारी बना रखी है, उसकी हंसी परमधाम में होगी।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ६०० ।।

।। प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ।।

।। प्रकरण ।। ४८४ ।। चौपाई ।। १६९७६ ।।

।। सिन्धी सम्पूर्ण ।।

Nijanand App